जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

बीकानेर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 2200660 फैक्स : 0151-2527371 वर्षः 45 संख्याः 285 प्रभात बीकानेर, मंगलवार 7 मई, 2024 डाक प.स.बीकानेर/045/2020-22 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रू.

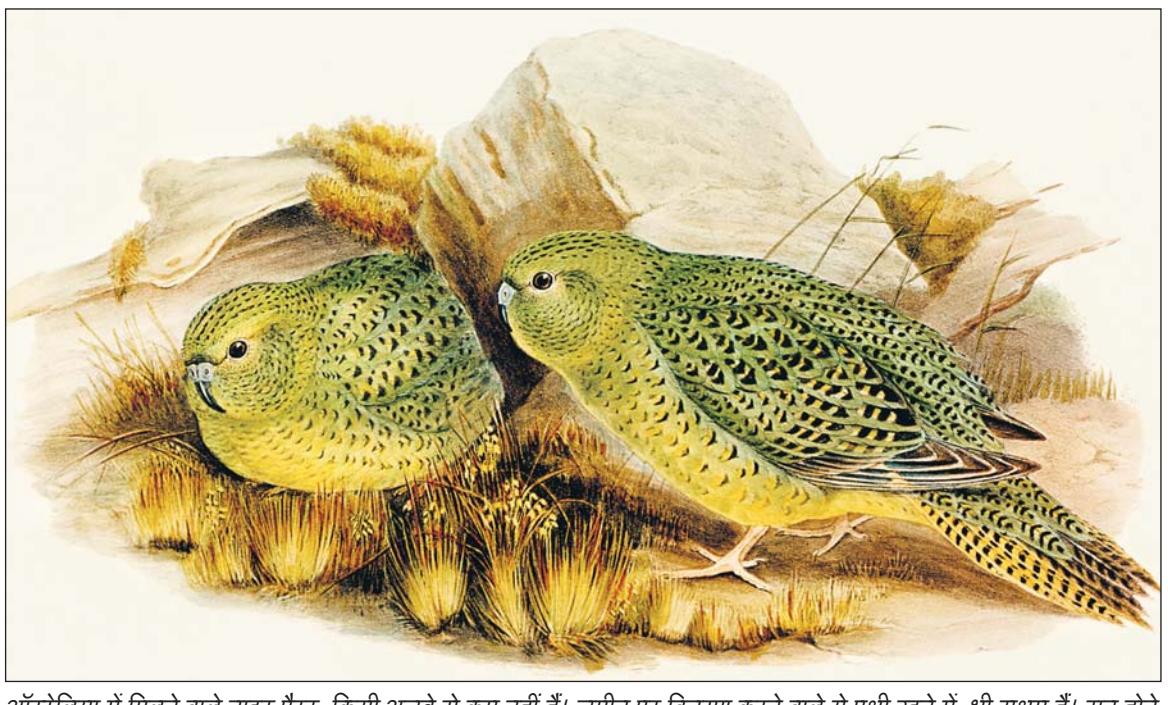

ऑस्ट्रेलिया में मिलने वाले नाइट पैरट किसी अजूबे से कम नहीं हैं। जमीन पर विचरण करने वाले ये पक्षी उड़ने में भी सक्षम हैं। रात होने पर ही इनकी आवाज सुनाई देती है। करीब सौ वर्षों तक इन्हें विलुप्त माना जा रहा था। नाइट पैरट विश्व के सबसे रहस्यमय पक्षियों में एक हैं। सबसे पहले 1845 में रिकॉर्ड किए गए इन पक्षियों का अंतिम जीवित नमूना वैस्ट ऑस्ट्रेलिया में 1912 में संग्रहित किया गया था। उसके बाद ये गायब हो गए और 1912 से 1979 के बीच इनकी कोई पुष्टी नहीं हुई। फिर, सन् 2013 में वाइल्ड -लाइफ फोटोग्राफर जॉन युंग ने वैस्टर्न क्वीन्सलैंड में एक पैरट के कई फोटो लिए और कुछ सैकेण्ड का वीडियो फुटेज भी रिकॉर्ड किया। कई वर्षों की मेहनत व खोज के बाद अंततः जॉन को बहुत करीब से एक नाइट पैरट देखने को मिला। इस खोज को लेकर विश्वभर में इतनी उत्सुकता पैदा हो गई कि, सुरक्षा के मद्देनज़र इनकी वास्तविक लोकेशन को उजागर नहीं किया गया। अब पिछले कई वर्षों में परभक्षी बिल्लियों और जंगल में आग लगने की घटनाओं के कारण इनका प्राकृतिक आवास घट गया है और माना जाता है कि, अब ये गंभीर रुप से संकटग्रस्त हैं। हाल ही में गिब्सन डैज़र्ट के एक दूरस्थ क्षेत्र में किवाकरा रेंजर टीम ने इनकी आवाज़ें रिकॉर्ड की हैं। यह पांचवी टीम है जिसने इन पक्षियों की आवाज़ें रिकॉर्ड करने में सफलता पाई है। इनकी कॉल्स की रिकॉर्डिंग संरक्षण की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है, जिससे इनका वर्तमान आवास क्षेत्र चिन्हित किया जा सकता है। एक बार जब वहां से पर्याप्त रिकॉर्डिंग प्राप्त हो जाएंगी तो नाइट पैरट का अध्ययन कर रहे वैज्ञानिक संरक्षण के लिए विशिष्ट स्थानों को चिन्हित कर पाएंगे। इस वर्ष किवाकरा रेंजर्स ने 5 अलग -अलग क्षेत्रों में साउण्ड रिकॉर्डिंग स्टेशन बनाए और रात में रिकॉर्ड की हुई आवाज़ें नाइट पैरट विशेषज्ञ डॉ. निक लीज़बर्ग को भेजीं। इस पक्षी की आवाज़ एकदम अलग है इसलिए इसे पहचानना कोई मुश्किल काम नहीं है। डॉ. लीज़बर्ग ने कहा, जैसे ही हमें नक्शे पर नया बिंदू नज़र आता तो इसका अर्थ होता कि, नाइट पैरट की रेंज में कुछ और विस्तार हो गया है। यह जानकारी काफी महत्वपूर्ण है।

पूर्व मु.मंत्रियों को रायबरेली व अमेठी में पर्यवेक्षक बनाया गया है?

कांग्रेस को उम्मीद है कि, भूपेश बघेल व गहलोत अपनी अंटियां खोलेंगे इन दोनों प्रतिष्ठित सीटों के चुनाव को फाइनैंस करने के लिए

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 मई। अशोक गहलोत को अमेठी लोकसभा सीट तथा भूपेश बघेल को रायबरेली लोकसभा सीट के लिए पर्यवेक्षक नियुक्त किया गया है। दोनों पूर्व मुख्य मंत्रियों से अपेक्षित है कि, वो आर्थिक संकट से जूझ रही कांग्रेस पार्टी को इन दोनों सीटों के लिए फाइनैंस मुहैया कराने में अपनी अंटियां खोलेंगे। फण्ड मुहैया करवाएंगे।

कांग्रेस के लिए अमेठी और रायबरेली, दोनों ही प्रतिष्ठित सीटें हैं, जहाँ गाँधी परिवार को स्थापित करना है कि, अभी भी ये दोनों सीटें उनके प्रभाव की सीटें हैं।

रोचक बात यह है कि, बाकी 15 सीटों के लिए पर्यवेक्षक नियुक्त क्यों नहीं किए गए हैं, जिन पर उत्तर प्रदेश में पार्टी चुनाव लड़ रही है। कांग्रेस, समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन में कुल मिलाकर 17 सीटों से चुनाव लड़ रही है। सूत्रों का कहना है कि, अशोक गहलोत राहुल गाँधी के नामांकन कार्यक्रम में शामिल होने के लिए प्रियंका गाँधी के हैलिकॉप्टर में उनके साथ रायबरेली पहुँचे। कहा जा रहा है कि, इस अवसर पर उन्हें आमंत्रित नहीं किया गया था, वो जबरदस्ती वहाँ पहुँचे।

अब अशोक गहलोत के मित्रों ने यह कहना शुरु कर दिया है कि, गहलोत अभी भी गाँधी परिवार के नज़दीकी और विश्वास पात्र आदमी हैं और पार्टी में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- अशोक गहलोत द्वारा अपने पुत्र वैभव के चुनाव के लिये सौ करोड़ रूपये का बजट रखने की चर्चाओं ने, गहलोत को दिलवाया अमेठी के पर्यवेक्षक का चार्ज।
- गहलोत, राहुल गांधी के चुनाव पर्चा भरने के कार्यक्रम में आमंत्रित नहीं थे, पर, प्रियंका गांधी के हैलिकॉप्टर पर किसी तरह चढ़ कर रायबरेली पहुँच ही गये। यह ''तथ्य'' उनकी प्रचार टीम के लिये पर्याप्त था, यह बात फैलाने के लिये कि, वे अभी भी गांधी परिवार के विश्वासपात्र व नज़दीकी हैं तथा अन्य जगहों पर उनकी क्या स्थिति है, उसका फर्क नहीं पड़ता।
- पर विचारणीय बात यह है कि, माना कि, कांग्रेस पार्टी में पैसों की भारी कमी है, पर, वी.आई.पी. सीटों के लिये पैसे का जुगाड़ क्यों किया गया है, बाकी साधारण सीटों को उम्मीदवारों के भाग्य पर क्यों छोड़ दिया गया है।
- उदाहरण के लिये, उड़ीसा में कांग्रेस उम्मीदवार सुचरिता मोहंती का प्रकरण है। श्रीमती मोहंती ने अपनी उम्मीदवारी वापस ले ली क्योंकि ए.आई.सी.सी. के प्रतिनिधि अजय कुमार ने उनसे साफ कह दिया कि, ए.आई.सी.सी. उनकी कुछ भी आर्थिक मदद नहीं कर सकती चुनाव में। श्रीमती मोहंती व उनके पति पत्रकार हैं, अतः चुनाव में अपने स्रोतों से खर्चा वहन करना उनकी बस की बात नहीं है, अतः उन्होंने अपनी उम्मीदवारी वापस लेने की घोषणा की।

'नीट पेपर लीक, 23 लाख विद्यार्थियों के साथ धोखा'

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 मई। पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने रविवार को हुए नीट पेपर लीक की कड़ी आलोचना की और इसे 23 लाख बच्चों व उनके परिवार के साथ विश्वासघात बताया।

उन्होंने ट्वीट किया कि मोदी सरकार उन युवाओं के लिए अभिशाप बन गई है जो 12वीं कक्षा पास करने के बाद मैडिकल कॉलेज में प्रवेश का सपना देख रहे थे या सरकारी नौकरी के लिए संघर्ष कर रहे थे।

राहुल ने कहा, भाजपा सरकार गत दस साल से सरकार चला रही है और

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- राहुल गांधी ने कहा कि, नीट पेपर लीक होने से 23 लाख विद्यार्थियों व उनके परिजनों के साथ धोखा हुआ है, इंडिया गठबंधन की सरकार आई तो पेपर लीक पर कड़े कानून बनाए जाएगे।

'मैं आरक्षण के लिये सुप्रीम कोर्ट द्वारा लगायी गयी 50 प्रतिशत की सीमा हटवा दूंगा'

राहुल गांधी ने रतलाम में आयोजित आमसभा में यह ऐलान किया

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 मई। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने आज एक बड़ी घोषणा करते हुए वादा किया कि उनकी पार्टी और गठबंधन जातिगत आरक्षण पर सुप्रीम कोर्ट द्वारा निर्धारित 50 प्रतिशत सीमा को हटाने तथा दलित, पिछड़ों और आदिवासी समुदायों का आरक्षण कोटा बढ़ाने की दिशा में काम करेंगे।

मध्यप्रदेश के रतलाम में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए गांधी ने कहा कि, ''यह चुनाव संविधान बचाने की खातिर लड़ा जा रहा है। भाजपा और आर.एस.एस. संविधान को बदलना, समाप्त करना चाहते हैं, लेकिन कांग्रेस और इण्डिया गठबंधन इसे सुरक्षित रखना चाहते हैं। राहुल ने संविधान की एक प्रति दिखाते हुए कहा कि ''इस संविधान ने आपको जल, जंगल और ज़मीन के अधिकार दिए हैं। नरेन्द्र मोदी इन अधिकारों को समाप्त करना चाहते हैं। वे पूरी सत्ता अपने हाथ में रखना चाहते हैं।''

उन्होंने कहा कि भाजपा नेताओं ने घोषणा की है कि यदि वे जीते तो संविधान को बदल देंगे। इसीलिए इन्होंने ''400 सीटों'' का नारा दिया, लेकिन 4 सौ तो छोड़िए, इन लोगों को 150 सीटें भी नहीं मिल रही हैं। ये कहते हैं कि ये आरक्षण खत्म कर देंगे। मैं आपको अभी से यह बताना चाहता हूँ कि हम आरक्षण को 50 प्रतिशत की सीमा आगे बढ़ाएंगे। उन्होंने कहा कि गरीबों, पिछड़ों दलितों और आदिवासियों को जितने आरक्षण

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- राहुल गांधी ने कहा, दलित, बैकवर्ड व ट्राइबल समुदाय को उतना आरक्षण दिया जायेगा, जितनी उसको आवश्यकता है
- गुजरात में बनास कांठा में आयोजित आम सभा में प्र.मंत्री मोदी ने राहुल के ऐलान पर पलटवार करते हुए कहा, ''कांग्रेस आरक्षण से छेड़-छाड़ इसलिए कर रही है, क्योंकि वह धर्म के नाम पर मुसलमानों को आरक्षण देना चाहती है।''
- मोदी ने इसी लय में आगे यह भी कहा कि, राहुल गांधी व उनके समर्थक घोषणा करें कि, वे संविधान में तब्दीली नहीं लायेंगे तथा धर्म क नाम पर आरक्षण नहीं देंगे।

रायबरेली से राहुल गांधी के नामांकन को चुनौती

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 मई। चुनाव आयोग ने रायबरेली में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गाँधी के नामांकन को लेकर दो शिकायतें स्वीकार की हैं, एक तो उनकी ब्रिटिश नागरिकता और हाल ही में मानहानि के केस में उन पर सिद्ध हुए आरोप को लेकर।

शिकायतकर्ता अनिरूद्ध प्रताप सिंह ने एडवोकेट अशोक पाण्डे के माध्यम से शिकायत दर्ज कराई है। पाण्डे ने रायबरेली के रिटर्निंग ऑफिसर के पास शिकायत दर्ज करवाकर राहुल के नामांकन को रद्द करने की मांग की है।

एडवोकेट पाण्डे ने कहा, ''पहले तो, राहुल गाँधी को दो साल की सजा मिली है, जिसके कारण वो चुनाव लड़ने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- यह चुनौती किसी अनिरूद्ध प्रताप सिंह ने दो आधारों पर दी है, एक तो राहुल की ब्रिटिश नागरिकता, दूसरे हाल ही में मानहानि केस में उनका दोषी साबित होना।

जे.पी. नड्डा व मीडिया इंचार्ज अमित मालविया के खिलाफ एफ.आई.आर. दर्ज करायी कांग्रेस ने

कर्नाटक में दर्ज इस एफ.आई.आर. में भाजपा पर आरोप लगाया गया है कि, सोशल मीडिया पोस्ट के मार्फत कर्नाटक के विभिन्न समुदायों में वैमनस्य फैलाने की चेष्टा की गयी है

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 मई। एक सोशल मीडिया पोस्ट को लेकर भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा, पार्टी के मीडिया प्रभारी अमित मालवीय और कर्नाटक के प्रदेश भाजपा अध्यक्ष बी.वाय. विजेन्द्र के खिलाफ एफ.आई.आर. दर्ज की गई है। आरोप है कि इस सोशल मीडिया पोस्ट में एस.सी. और एस.टी. समुदायों के वोटर्स को कथित रूप से भयभीत किया गया है।

कांग्रेस को एक धर्म विशेष का पक्ष लेने वाली पार्टी के रूप में चित्रित करने वाले एक एनीमेटेड वीडियो के जारी होने के बाद कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस ने इसकी शिकायत दर्ज करायी थी। सोशल मीडिया साइट ''एक्स'' भाजपा की कर्नाटक इकाई के ऑफीशियल हैंडल पर पोस्ट किए गए एक वीडियों में राहुल गांधी और मुख्यमंत्री सिद्धारमैया के कैरिकेचर के साथ एक घोंसला दिखाया गया है जिसमें चार अण्डे रखे हैं। एक अण्डे पर ''मुसलमान'' लिखा है, जबकि अन्य पर एस.सी. एस.टी. और ओ.बी.सी। वीडियों में राहुल गांधी के अगले कैरिकेचर में उन्हें उसी चूजे को ''फण्ड्स'' रूपी भोजन देते बताया गया है जो ''मुस्लिम'' अण्डे से निकला है।

वीडियो का कैप्शन है ''सावधान, सावधान, सावधान।'' वीडियो में दिखाया गया है कि मुस्लिम अण्डे से निकला चूज़ा अन्य तीन अण्डों से निकले चूज़ों को धक्का देकर अलग करता है। उसके बाद हंसी की आवाज आती है।

कांग्रेस की शिकायत में कहा है कि वीडियो में पिछड़े समुदायों को अंडे के रूप में प्रदर्शित कर उनका अपमान किया

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- सोशल पोस्ट में दिखाया गया है कि, कांग्रेस एक डब्बे में चार अण्डे रख रही है, जिन पर मुसलमान, एस.टी., एस.सी, ओ.बी.सी. लिखा है।
- जब इन अण्डों से चूज़े निकलते हैं, तब राहुल गांधी केवल उस चूज़े को आहार दे रहे हैं जिस पर मुस्लिम लिखा है तथा मुस्लिम चूज़ा अन्य चूज़ों को धक्के मार कर बाहर निकाल देता है।

'जेल का जवाब वोट से देंगे'

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 मई। चुनाव आयोग ने आम आदमी पार्टी (आप) के चुनाव प्रचार गीत ''जेल का जवाब वोट से'' को मंजूरी दे दी है, वो भी बिना किसी परिवर्तन के।

आप के वरिष्ठ नेता दिलीप पांडे ने सोमवार को बताया कि वे किस तरह से अपने पक्ष के लिए लड़े। उन्होंने कहा हम भाजपा के घटिया प्रयासों के आगे नहीं झुकेंगे।

पार्टी ने कहा कि हम मुख्यमंत्री केजरीवाल की गिरफ्तारी का जवाब वोट से देंगे। पार्टी ने गुंडागर्दी के खिलाफ वोट देने की अपील भी की है।

- आप पार्टी के इस चुनाव प्रचार गीत को चुनाव आयोग से मंजूरी मिलने के बाद आप नेता दिलीप पांडे ने कहा कि, हम आयोग के निर्देशों के आगे नहीं झुके।

चंद्रबाबू नायडू ने भी अफलातूनी प्रचार अभियान चलाया कि, सरकार परिवार की विवादित भूमि अधिग्रहित कर लेगी

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 मई। भाजपा जिस प्रकार से कांग्रेस के खिलाफ प्रचार कर रही है कि यह लोगों के मंगलसूत्र और पैसा छीन कर गरीब मुसलमानों को दे देगी। अब भाजपा की सहयोगी तेलुगूदेसम पार्टी ने जगन मोहन रेड्डी सरकार पर आरोप लगाया है। लैंड टाइटलिंग एक्ट के जरिए यह सरकार आम जनता की ज़मीन-जायदाद हथिया लेगी। पता चला है कि इस मुद्दे पर चल रहे टैलिफोनिक अभियान के पीछे तेलुगूदेसम है। इनमें फोन करने वाला व्यक्ति बताता हैं कि लैंड टाइटलिंग एक्ट कुछ ही दिनों में लागू हो जाएगा और इसके बाद आपकी सारी ज़मीन सरकार हथिया लेगी। सत्तारूढ़ पार्टी वाय.एस.आर.सी.पी. ने इसके खिलाफ चुनाव आयोग में शिकायत दर्ज की है और साइबर सैल से एक्शन लेने को कहा है।

लेकिन गाँवों और कस्बों में लोगों में डर सा व्याप्त होने लगा है कि सरकार उन लोगों की ज़मीन व घर छीन लेगी जो उन्हें विरासत में मिली है। डर यह है कि कागज़ी कार्यवाही बेहद भ्रामक है कि कुछ लोग तो अपनी खानदानी जायदाद से वंचित हो जाएंगे। असल में सरकार लैंड रिकॉर्ड को ''डिजाटलाइज़'' करने जा रही है कानून के मार्फत, इसलिए लोगों से कागज़ात मांग रही है, पर इन कागज़ातों की वापसी की प्रक्रिया बेहद जटिल है। इसलिए जनता के डर बढ़ गया है। आंध्र प्रदेश में 13 मई को लोकसभा और विधानसभा चुनाव के लिए मतदान होगा।

तेलुगूदेसम के प्रमुख चंद्रबाबू नायडू सितम्बर 2022 में आंध्र विधानसभा पारित लैंड टाइटलिंग एक्ट को अपने प्रचार अभियान में लैंड ग्रैबिंग (कब्जा) एक्ट बता रहे हैं। जन सेना के प्रमुख पवन कल्याण भी फोन कॉल में कही गई बात दोहराते हुए कहते हैं कि जगन मोहन रेड्डी फिर से सत्ता में आए तो कानून का दुरुपयोग कर जनता की ज़मीन जायदाद छीन लेंगे। उन्होंने कहा कि अगर तेलुगूदेसम और जन सेना की सरकार सत्ता में आई तो वे इस कानून को खत्म कर देंगे।

आम जनता में डर है कि जिस ज़मीन के वे कानूनन हकदार है उसे सरकार किसी ना किसी बहाने से छीन लेगी। इस सबके पीछे तेलुगूदेसम है नायडू ने जगन मोहन रेड्डी पर आरोप लगाया कि रिकॉर्ड डिज़ीटल करने के नाम पर वे जनता की ज़मीन छीन लेंगे। तेलुगूदेसम ने बड़ी ही सफलता से लोगों के दिलों-दिमाग में यह डर घुसा दिया है। ऐसा डर है कि ऐसी ज़मीनें जिन पर कानूनी विवाद है या खानदानी झगड़ा है और जिनके पूरे कागज़ात नहीं हैं, उन ज़मीनों को सरकार ले लेगी। दूसरे जन्म, मृत्यु, स्थानीय निवास और अन्य दस्तावेज़ों, जो राजस्व विभाग जारी करता है, उन पर मुख्यमंत्री जगन मोहन रेड्डी का फोटो लगा है। विपक्ष लोगों से कह रहा है कि ये दस्तावेज़ संकेत हैं कि ज़मीन पूरी तरह से आपकी नहीं हैं कागज़ों पर जगन की तस्वीर की मौजूदगी को भी मुद्दा बनाया जा रहा है। नायडू जन सभाओं में ये कागज़ दिखा कर जनता को और डरा रहे हैं।

नायडू जो कह रहे हैं वह तेलंगाना विधानसभा चुनावों में कांग्रेस के प्रचार से अलग नहीं है। कांग्रेस ने भी आरोप लगाया था कि बी.आर.एस. सरकार के लैंड रिकॉर्ड पोर्टल में ज़मीनों की सुरक्षा संदिग्ध है।

लैंड टाइटलिंग विधेयक नीति आयोग के मॉडल ड्राफ्ट पेपर पर आधारित है। आयोग ने मकान व भूखंडों पर आम लोगों को ज़मीन का हक देने के लिए ऐसा कानून बनाने को कहा था, जिससे ज़मीन विवादों की संख्या में कमी आएगी और इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रोजैक्ट्स के अधिग्रहण के लिए पारदर्शी व्यवस्था बनेगी।

वाय.एस.आर.सी.पी. को बहुत बाद में जाकर यह अहसास हुआ है कि लैण्ड टाइटलिंग एक्ट से जनमानस में नकारात्मक भावना निर्मित हो रही है, इसलिए जगन ने अब अपनी प्रत्येक

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- चंद्रबाबू नायडू का तर्क है कि, सरकार ने सितम्बर 2022 को ''लैण्ड टाइटलिंग एक्ट'' पारित किया था, जिसके तहत, परिवारों की विरासत में मिली भूमि को, जिस पर उत्तराधिकारियों में विवाद है, सरकार अपने कब्जे में ले लेगी।
- सरकार इन ज़मीनों के रिकॉर्ड को ''डिजिटाइज़'' करने के लिये, प्रापर्टी के कागज़ात परिवार वालों से मांग रही है। पर, जनता द्वारा इस कागज़ातों को वापस लेने की प्रक्रिया को इतना जटिल बना दिया गया है कि, प्रापर्टी के ऑरिज़नल कागज़ात सरकार से प्राप्त करना अत्यन्त जटिल व लम्बा काम हो जाएगा, प्रापर्टी सरकार के कब्जे में ही चली जायेगी।
- चंद्रबाबू नायडू का प्रचार ग्रामीण क्षेत्रों में काफी असर डाल रहा है, तथा दहशत भी फैल गयी है।

अमेठी और रायबरेली का प्रभार दो पूर्व मु.मंत्रियों को

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 मई। सोमवार को कांग्रेस ने दो पूर्व मुख्यमंत्रियों को वी.आई.पी. निर्वाचन क्षेत्र, रायबरेली व अमेठी के लिए पर्यवेक्षक नियुक्त किया है।

ए.आई.सी.सी. महासचिव के.सी.

- राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत अमेठी और छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री बघेल रायबरेली की चुनाव व्यवस्था संभालेंगे।

वेणुगोपाल द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को अमेठी लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र की जिम्मेवारी दी गई है तथा छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल राहुल गाँधी की लोकसभा सीट रायबरेली का काम देखेंगे।

विचार बिन्दु

क्रोध में मनुष्य अपने मन की बात नहीं कहता, वह केवल दूसरों का दिल दुखाना चाहता है। –प्रेमचंद

चुनाव न केवल निष्पक्ष और पारदर्शी होने चाहिएं, बल्कि ऐसा दिखना भी चाहिए

स्वस्थ लोकतंत्र की स्थापना के लिए सबसे महत्वपूर्ण और आवश्यक शर्त है कि चुनाव निष्पक्ष, स्वतंत्र और पारदर्शी हो। यही सुनिश्चित करने के लिए भारतीय संविधान में स्वतंत्र एवं निष्पक्ष निर्वाचन आयोग की अवधारणा को रखा गया। स्वतंत्रता के बाद पहले चुनाव 1952 में हुए और प्रारंभिक कई वर्षों तक तो चुनाव आयोग लगभग सरकार के विभाग की तरह ही काम करता दिखाई दिया क्योंकि विपक्ष मजबूत नहीं था। लोगों को यह पता भी नहीं रहता था कि चुनाव आयोग में मुख्य निर्वाचन आयुक्त की तरह कौन व्यक्ति पद स्थापित है ।

सातवें, आठवें दशक में आते-आते, चुनाव प्रक्रिया में कई प्रकार की विकृतियां आने लगीं। कुछ राज्यों में 'बूथ कैपचरिंग' आम बात थी। मतदाताओं को आतंकित और प्रभावित करने के लिए बल और बाहुबल का बहुत प्रयोग होने लगा। चुनावों में, विशेषकर बिहार, उत्तरप्रदेश और अन्य कई स्थानों पर हिंसा की अनेक घटनाएं होने लगीं। अधिकांश चुनावों में चुनाव आयोग की भूमिका लगभग मूक दर्शक की ही रही। जो भी सरकार, राज्य में शासन में होती उसका दखल भी कम नहीं था । ऐसे समय जब निर्वाचन आयोग की पहचान एक दंत विहीन, प्रभावहीन आयोग की बन गई थी, टीएन शेषन 1990 में चुनाव आयुक्त बने। वे इस पद पर 1996 तक रहे। उन्होंने अपने कार्यकाल में चुनाव आयोग की छवि को पूरी तरह बदल दिया। उन्होंने बिना किसी दबाव और भय के अपने सारे निर्णय बिना भेदभाव के लागू किए। आदर्श आचार संहिता का पालन कराने हेतु उन्होंने कई कड़े कदम उठाए। शेषन की सख्ती से परेशान होकर सरकार ने दो और चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति करते हुए चुनाव आयोग को बहु सदस्यीय बनाया। शेषन के द्वारा स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए उठाए गए कदम इतिहास में दर्ज हो गए हैं। उनके कठोर कदमों के कारण चुनावी हिंसा में बहुत कमी आई है। शेषन के बाद कई वर्षों तक चुनाव आयोग की छवि बरकरार रही। हाल के कुछ वर्षों में चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर संदेह के बादल मंडराने लगे हैं। इसके दो कारण प्रमुख हैं। पहला तो यह कि, आदर्श आचार संहिता का पालन निष्पक्ष रूप से, सत्ता और विपक्ष के नेताओं पर समान रूप से नहीं किया जा रहा है।

यह सर्व विदित है कि भाषा की मर्यादा एवं गरिमा, प्रत्येक चुनाव में गिरती गई है। वर्तमान लोक सभा चुनाव में तो इसने पतन की सारी सीमाएं पार कर ली है ।धर्म एवं जाति के आधार पर वोट मांगने के लिए लोगों को उकसाने वाले भाषण दिये जा रहे हैं। ऐसा करने में प्रधानमंत्री भी पीछे नहीं रहे। उन्होंने बहु संख्यक लोगों को यह कह कर डराने का प्रयास किया कि यदि विपक्ष सत्ता में आ गया तो उनकी सम्पत्ति, यहाँ तक कि महिलाओं का मंगल सूत्र तक छीन कर घुसपैठियों और अधिक बच्चे पैदा करने वालों में बांट दिये जायेंगे। स्पष्ट रूप से उनका इशारा अल्पसंख्यक समाज की ओर था।

ऐसे भड़काऊ बयानों के बावजूद चुनाव आयोग द्वारा सीधे प्रधानमंत्री से जवाब मांगने के बजाय भाजपा के अध्यक्ष को नोटिस दिया गया। इसी प्रकार राहुल गांधी के बयानों के लिए भी नोटिस कॉंग्रेस अध्यक्ष को दिया गया । चुनाव आयोग यह हिम्मत भी नहीं जुटा पाया कि प्रधानमंत्री को आदर्श चुनाव संहिता के उल्लंघन के लिए सीधे एक बार नोटिस भी भेज सके, कारवाई तो दूर की बात है । जब सत्ता पक्ष और विपक्ष के बारे में समान प्रकार का दृष्टिकोण नहीं अपनाया जाता है तब चुनाव आयोग की स्वतंत्रता और निष्पक्षता पर प्रश्न उठना स्वाभाविक है।

चुनाव आयोग में सब कुछ ठीक नहीं है, यह इससे भी स्पष्ट हुआ कि हाल ही में नियुक्त चुनाव आयुक्त अरुण गोयल ने पद संभालने के साढ़े तीन महीने बाद ही अपने पद से त्यागपत्र दे दिया जब कि उनका कार्यकाल 2027 तक था। यह उल्लेखनीय है कि उच्चतम न्यायालय ने अपने निर्णय द्वारा चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति हेतु प्रधानमंत्री, उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश और विपक्षी दल के नेता की समिति बनाई थी, किंतु सरकार ने संबंधित कानून में ही संशोधन करके चुनाव आयुक्तों के चयन हेतु, नई समिति का गठन कर लिया। इसमें प्रधानमंत्री, विपक्षी दल के नेता एवं कानून मंत्री सम्मिलित हैं । यहां यह भी लिखना उपयुक्त होगा कि अब तक सदैव सरकार की अनुशंसा पर राष्ट्रपति चुनाव आयुक्त की नियुक्ति करते रहे हैं। एक बार चुनाव आयुक्त नियुक्त हो जाते हैं, उसके बाद उनके ऊपर कोई दबाव नहीं है कि वह सरकार के अनुकूल ही काम करें, किंतु देखा यह जा रहा है कि सरकार की इच्छा के विपरीत चुनाव आयोग निर्णय लेने में संकोच करता रहा है । सात चरणों में चुनाव भी शायद इसीलिए कराए जा रहे हैं ताकि प्रधानमंत्री सभी चरणों में, अपना पूरा समय देकर, चुनाव प्रचार कर सकें । सत्ताधारी दल के लिए यह महत्वपूर्ण है क्योंकि उसका अपने पूरा प्रचार प्रधानमंत्री – केंद्रित है। यहाँ तक कि भाजपा का घोषणा पत्र भी 'मोदी की गारंटी' के नाम से ही प्रचारित – प्रसारित किया गया।

देखा यह जा रहा है कि सरकार की इच्छा के विपरीत चुनाव आयोग निर्णय लेने में संकोच करता रहा है । सात चरणों में चुनाव भी शायद इसीलिए कराए जा रहे हैं ताकि प्रधानमंत्री सभी चरणों में, अपना पूरा समय देकर, चुनाव प्रचार कर सकें । सत्ताधारी दल के लिए यह महत्वपूर्ण है क्योंकि उसका अपने पूरा प्रचार प्रधानमंत्री - केंद्रित है। यहाँ तक कि भाजपा का घोषणा पत्र भी 'मोदी की गारंटी' के नाम से ही प्रचारित - प्रसारित किया गया।

हाल ही में चुनाव आयोग द्वारा पहले दो चरणों के मतदान के आंकड़े जारी करने में जो अत्यधिक विलंब हुआ हुआ है, उससे निष्पक्षता पर सवाल तो उठ ही रहा है।

मतदान केंद्रों से मतदान संबंधी सूचना और आंकड़े मतदान के दिन या अधिकतम अगले दिन प्राप्त हो जाते हैं। पाठकों को यह जानना चाहिए कि एक संसदीय क्षेत्र में औसतन 1500 से 2000 मतदान केंद्र होते हैं। अगले दिन यह आंकड़े प्राप्त हो जाते हैं कि कितने मतदाताओं ने अलग-अलग मतदान केंद्रों में मतदान किया। इनका संकलन करके चुनाव आयोग पूरे आंकड़े सामान्यतया मतदान के दिन या अगले एक-दो दिन में जारी कर दिया करता है । इस बार चुनाव आयोग ने पहले एवं दूसरे चरण के मतदान जो कि 19 अप्रैल और 26 अप्रैल को हुआ, दोनों के आंकड़े एक साथ 30 अप्रैल को जारी किए । न केवल यह, अभी तो जो आंकड़े जारी किए गए, उनमें भी पूरे संसदीय क्षेत्र के मतदान का, केवल प्रतिशत बताया गया है। मतदाताओं की संख्या, जिन्होंने बूथ वार मत का प्रयोग किया, यह सार्वजनिक नहीं किया गया है । साथ ही यह भी सार्वजनिक रूप से इलेक्शन कमिशन की वेबसाइट पर उपलब्ध नहीं किया है किस मतदान केंद्र पर कितने मतदाताओं ने मतदान किया? चुनाव आयोग द्वारा प्रारंभ में जो अनुमानित आंकड़े जारी किए गए थे उनकी तुलना में अंतिम आँकड़ों में मतदान का प्रतिशत चार से छह प्रतिशत अधिक हो गया है। प्रारंभ में जहां 60-62 के लगभग मतदान बताया जा रहा था, वहां अब पहले चरण के लिए 66.14 एवं दूसरे चरण के लिए 66.71 बताया गया है। विपक्षी दलों द्वारा इतने विलंब से अंतिम आंकड़े जारी करने पर धांधली के आरोप लगाए जा रहे हैं। यह समझ से परे है कि चुनाव आयोग ने केवल प्रतिशत क्यों बताया, मतदाताओं की संख्या क्यों नहीं बताई? इसी प्रकार मतदान केंद्र वार आंकड़े क्यों जारी नहीं किए? इसका कोई स्पष्टीकरण भी आयोग द्वारा नहीं दिया गया है। सामान्य विवेक वाला व्यक्ति भी जानता है कि कुल मतदाताओं की संख्या एवं मत करने वाले लोगों की संख्या के आधार पर ही प्रतिशत ज्ञात किया जाता है। यह सही है कि फॉर्म 17 C, जिसमें मतदाता संबंधित विवरण होता है, उसकी पीठासीन अधिकारी द्वारा हस्ताक्षरित एक प्रति मतदान केंद्र पर उम्मीदवारों के पोलिंग एजेंट को दी जाती है। इनके आधार पर राजनैतिक दल और उम्मीदवार आँकड़ों का मिलान अपने स्तर पर कर सकते हैं। केंद्र पर काम ली गई ई वी एम के नंबर भी फॉर्म 17C में अंकित होते हैं। मतगणना के दिन, मतगणना एजेंट यदि सतर्क हों तो इस पर निगरानी रख सकते हैं। अत: धांधली की आशंका तो निर्मूल है, किंतु विलंब अपने आप में संदेह तो उत्पन्न करता ही है। संदेह को और बल मिलता है जब आयोग की अन्य कार्यवाही भी निष्पक्ष नहीं दिखाई देती हो। यह भी आश्चर्यजनक है कि दूसरे चरण का मतदान जो 26 अप्रैल को हुआ, उसके आंकड़े भी 30 अप्रैल को यानि चार दिन में जारी कर दिए गए तो फिर 19 अप्रैल के मतदान के आंकड़े जारी करने में 12 दिन क्यों लगे? इसका कोई संतोषजनक उत्तर चुनाव आयोग ने अब तक नहीं दिया है।

सब जानते हैं कि किसी भी काम में विलंब होने पर नीयत पर शंका उत्पन्न होना स्वाभाविक है। उदाहरण के लिए किसी सरकारी कार्यालय जैसे जेडीए, नगर निगम या अन्य किसी कार्यालय में यदि आपके प्रार्थना पत्र का निस्तारण लंबे समय तक न हो तो फिर संबंधित नागरिक के मन में है यह संदेह होना स्वाभाविक है कि किसी कार्मिक को 'सुविधा शुल्क (रिश्वत)' की आवश्यकता है। विलंब अपने आप में भ्रष्टाचार को पनपने का अच्छा अवसर देता है।

मतदान के आंकड़े जारी करने में अत्यधिक विलंब और उसके बाद भी पूरे संसदीय क्षेत्र के केवल प्रतिशत के आंकड़े जारी करने के कारण, विपक्षी राजनीतिक दलों को चुनाव आयोग की नीयत पर संदेह उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त आधार प्रदान कर दिया है। मैंने स्वयं ने कई चुनावों में निर्वाचन आयोग के पर्यवेक्षक, निर्वाचन अधिकारी और सहायक निर्वाचन अधिकारी के रूप में देश के कई राज्यों में भूमिका निभाई है, किंतु मतदान के आंकड़े जारी करने में इतना विलंब कभी नहीं देखा । यदि निर्वाचन आयोग की नियत में किसी प्रकार की खोट नहीं है या उन पर सरकार का कोई दबाव नहीं है तो उन्हें मत दान आंकड़े तत्काल प्रभाव से जारी कर देने चाहिए थे। नैसर्गिक न्याय का सिद्धांत है कि न्याय न केवल होना चाहिए अपितु दिखाई भी देना चाहिए । जब भी किसी मामले में विलंब होगा तो वह नीयत पर संदेह उत्पन्न करेगा। न्यायालय द्वारा भी लंबे समय तक निर्णयों को सुरक्षित रखने को मुख्य न्यायाधीश तक ने सही नहीं माना है।

चुनाव आयोग द्वारा मतदान संबंधित विस्तृत आंकड़े तत्काल जारी कर दिए जाना चाहिए थे। ऐसा नहीं करके या तो निर्वाचन आयोग ने केवल अपनी अकर्मण्यता को सिद्ध किया है अथवा यह संकेत दिया है कि वह किसी के दबाव में काम कर रहे हैं।

अभी भी पांच चरण और शेष हैं । अपेक्षा यही है कि आगामी चरणों में निर्वाचन आयोग, मतदान के दिन से अधिकतम एक या दो दिन के अंदर, मत देने वाले व्यक्तियों की संख्या, बूथ वार, सार्वजनिक कर देगा, ताकि पिछले दो चरणों के सम्बन्ध में जो संदेह व्यक्त किया जा रहा है, वैसी कोई स्थिति उत्पन्न न हो ।

अंत में, हम यही कह सकते हैं कि चुनाव आयोग के लिए निष्पक्ष और स्वतंत्र होना ही पर्याप्त नहीं है अपितु नागरिकों को ऐसा दीखना भी चाहिए।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

संसद के लिए चुनाव प्रचार में राजनीतिक दल अपने कार्यों, वादों, घोषणा पत्रों का प्रचार कम और विरोधियों पर कटाक्षों, प्रतिक्रियाओं के जरिए जनता का मनोरंजन ज्यादा कर रहे हैं

महावीर सिंह

आज कल बहुत से लोगों ने मनोरंजन के लिए टीवी सीरियल्स देखने के स्थान पर विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं के उलूल-जुलुल बयान सुन कर ज्यादा मनोरंजित होते है। अभी कुछ दिन पहले विपक्षी दलों में से एक प्रमुख दल के प्रमुख नेता नें एक बयान दिया जिस पर दूसरी ओर के दल के बड़े नेताओं सप्ताह भर से उसकी व्याख्यता करके ही जनता का मनोरंजन कर रहे है।

विपक्षी दलों के एक तथाकथित बड़े नेता ने कहा कि अगर उनका दल सत्ता में आया तो जातीय जनगणना करवाएगा, संख्या के आधार पर सबके साथ न्याय किया जाएगा, हिस्सेदारी दी जाएगी। यहां तक तो उनकी बात सभी के अच्छी तरह समझ आयी। इस पर कोई उनको दांए-बांए भी नहीं लिया जा सकता क्योंकि किसी भी राजनीतिक दल में यह हिम्मत नही कि वे जातीय जनगण से सीधे-सीधे इनकार कर दें। उनका कहना था कि सत्ता में आने पर पूरे देश में फाइनेंसियल व इंस्टिट्यूशनल सर्वे कराकर यह पता लगाया जाएगा कि किन लोगों के पास में कितनी सम्पति, क्या संसाधन है और इसके आधार रिडस्ट्रिब्यूसन किया जाएगा।

बयान आम आदमी के तो कम समझ में आया ही किंतु जो कहा वह तो अच्छे-अच्छो के भी समझ नहीं आया।

शायद, वो यह कहना चाहते होंगे कि सरकार की आय में बढ़ोतरी की जाएगी और गरीबों, महिलाओं, युवाओं, श्रमिकों आदि के कल्याणार्थ योजनाओं में तथा छोटे व माध्यम दर्जे के उद्योगों में ज्यादा निवेश किया जाएगा। उस नेता नें जो कहा उस से दूसरे पक्ष के तथाकथित बड़े नेताओं को भी जनता का मनोरंजन करने का भरपूर मसाला व मौका मिल गया।

शायद उस नेता को यह नहीं समझाया गया कि जनगणना में भी हर परिवार के शैक्षणिक व वित्तिय स्तर से सम्बंधित सूचनाएं एकत्र की जाती है। यह बात अलग है कि किन्ही अज्ञात डरों के कारण वर्तमान सरकार जनगणना टालती आ रही है। अभी भी 2011 की जनगणना के आंकड़ों को काम में लिए जा रहे है। इस से अलग बीपीएल परिवारों की अलग से पहचान की जाती है। इसमें प्रमुखता से परिवारों के पास कितने कच्चे-पक्के घर है, वाहन है या नही, शैक्षणिक स्थिति, नोकरियों, आय के साधनों की जानकारी एकत्र की जाती है। इन सब के आधार पर विभिन्न सरकारी योजनाओं में लाभ प्राप्त कर सकने वालों की सूची तैयार होती है। इसे ही बीपीएल सूची कहते है और इसी के आधार पर इनको विभिन्न योजनाओं का लाभ दिया जाता है।

वैसे भी 80 करोड़ जनता तो सरकार द्वारा दिए जाने वाले फ्री राशन पर निर्भर है तो जनगणना, बीपीएल सर्वे से अतिरिक्त इनका तथाकथित फाइनेंसियल व इंस्टिट्यूशनल सर्वे करके करना भी क्या और क्या मिलना है??

रही बात बीपीएल या जनगणना के आंकड़ों से भिन्न सूचनाओं के लिए फाइनेंसियल/इंस्टिट्यूशनल सर्वे (ये जो कुछ भी हैं) की तो जिनके पास अच्छी इनकम है, वे अपने इनकम टैक्स रिटर्न में सारी काम की सूचनाएं देते है। किस व्यक्ति के पास क्या आय है, कितने मकानात है, कितनी संचित सम्पति (वेल्थ) है, कितनी विभिन्न श्रेणियों की जमीनें हैं, बिजिनेस-कम्पनियों में क्या हिस्सेदारी-शेयर्स है, लॉकर्स की पूरी सूचना इत्यादि सब जानकारियां, सरकार के पास है तो फिर तथाकथित फाइनेंसियल-इंस्टीट्यूसनल सर्वे का मतलब क्या है। बयान देने वाली पार्टी से कोई स्पष्टीकरण नहीं।

तो अस्पष्ट बयान है तो भुगतें, सामने वाले क्यों रहम करें? विपक्षियों नें इसे लपका किन्तु उन्होनें भी अपनी बयान बाजी से ज्यादा ही मनोरंजन कर दिया। उनका कहना था आपकी हर सम्पति, धनदौलत का एक्स रे किया जाएगा। माताओं, बहिनों का मंगल सूत्र छीन लेंगे, एक से अधिक मकान है तो उसे भी छीन लेंगे। जमीन जायदाद छीन लेंगे। आभूषण छीन लेंगे। और छीन कर उनको देंगे जो ज्यादा बच्चे पैदा करते है, जो घुसपैठिया हैं ! खैर हर पार्टी को अपनी बात कहने का अधिकार है, सो जैसा उन्हें मुफीद लगती वैसी व्याख्या कर देते हैं। किन्तु 400 पार के नारे से व हाइवेज, नई नई ट्रेन्स, हवाई अड्डों आदि की गिनती आदि से चुनाव मैदान में उतरने वाली पार्टी द्वारा जनता का ऐसा निम्न स्तरीय मनोरंजन उसकी थोड़ी बहुत कमजोरी की ओर इशारा तो नहीं?

इसके अलावा भी चुनाव प्रचार विकास की पटरी से उतर कर, निम्नलिखित सारहीन मुद्दों पर सिमटता जा रहा है। शाहजादे/शहजादे बनाम असली शहंसाह जो महलों से निकल कर किसानों, बेरोजगारों, अग्निवीर योजना से त्रस्त नोजवानों की न सुनने वाला, न मिलने वाला,

शहजादे बनाम पीरजादे---शहंसाह बनाम पैदल 4000 किलोमीटर की पैदल यात्रा कर जनता की समस्यों की जानकारी लेने वाले सामने वाले भ्रष्टतमों का जमावड़ा बनाम सबसे बड़े भ्रष्टों को छांट-छांट कर उन्होनें अपने दल में मिला लिए।

80 बनाम 20---राम जी बनाम शिव जी,

डरो मत-भागो मत बनाम गुजरात से क्यों भागे-दायित्वों से क्यों भागे व न जाने ओर क्या क्या बोलते है लोग सोसल मीडिया पर जो यहां लिखना उचित नही, संविधान को सिर पर रख कर नाचने वाले बनाम 370 हटाकर संविधान की गरिमा बढ़ाने वाले, ट्रीपल तलाक खत्म करने वाले, शाही परिवारों से ही पीएम, सीएम बनाम क्या शास्त्रीजी, मोरारजी, चरणसिंह, नरसिम्हा राव, अटल बिहारी, मनमोहन सिंह व अनेकानेक सीएम शाही परिवारों से थे। बिना बच्चों वाले इसलिए खप रहे कि आपके बच्चे पीएम सीएम बने बनाम--बहुत हुआ, यह पद ही निःसन्तानों के लिए आरक्षित कर दो, सारे झंझट-झगड़े खत्म महिलाओं पर अत्याचारियों-व्यभिचारियों को टिकट तथा सह देने वाले बनाम तुम लोगों ने भी अपने शासन काल में अनेकानेक ऐसे लोगों को बचाया, सह दी,

ED, CBI, IT का डर दिखा कर लोकतंत्र की हत्या करने वाले बनाम एजेंसियां पूर्णत: स्वतंत्र है, सरकार का कोई दखल नही, तुम्हारे बनाए कानून के अनुसार ही काम कर रही है--आदि आदि----

अर्थात जैसे हम वैसे ही तुम थे, जो हम कर रहे है वैसा ही तुम कर रहे थे।

400 पार-अगली सरकार फिर मोदी सरकार बनाम नोटबन्दी से त्रस्त आम आदमी, से त्रस्त छोटे व्यापारी, अचानक लोकडावन से त्रस्त श्रमिक, दुखी किसान-बेरोजगार युवा, अग्निवीर योजना से दुखी ग्रामीण भारत के युवा अगला पीएम चुनेंगे। ओर अब तो पाकिस्तान में यहां के एक नेता विशेष के लिए पीएम बनने के लिए दुवाएँ मांगी जाने की बात भी आ गई, मुस्लिम लीग वाली बात तो आकर पुरानी भी हो गई। इसके विपरीत आवाजें आती है कि पाकिस्तान की क्या औकात जो हिंदुस्तान का पीएम चुने? हिंदुस्तान का पीएम यहां का 140 करोड़ अवाम चुनेगा जिसमें हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई व दूसरे पन्थो के सब लोग शामिल।

किन्तु कुछ तथाकथित बड़े नेताओं के मुंह से यह सुनकर आश्चर्य भी होता है कि हिन्दू-मुसलमान का तो मुद्दा है ही क्योंकि हिंदुस्तान का विभाजन इसी आधार पर हुआ था--आपके कुछ समझ आया ऐसे नेता आखिर कहना क्या चाहते हैं? एक तरफ के पहलवान अपने सारे अस्त्र-शस्त्र फेंक रहे हैं, दाव पेच लगा रहे है--जिन पर फेंके जाते है, वे तक बखूबी अपना बचाव कर रहे है---अंत में जनता जाने विजयश्री की तालियां किस के लिए बजाए। अब बताओ इन सब के आगे तूँ-तूँ, मैं-मैं वाले टीवी सीरियल्स भी मात खाते हैं या नही? नेताओं की ऐसी कॉमेडी के आगे पुराने जमाने के जोनी वाकर, मुकरी, महमूद, असरानी आदि की कॉमेडी क्या कॉमेडी?

आम आदमी तो यह सुनने का इन्तजार ही करता रह जाएगा कि कोई कुछ उसके लिए महत्वपूर्ण महगाई-बेरोजगारी-अग्निवीर-किसानों पर बढ़ता कर्ज-माताओं, बहनों की सुरक्षा-अच्छी शिक्षा-स्वास्थ्य आदि मुद्दों पर भी कोई विस्तार से बोले गाक्या????

–महावीर सिंह,
पूर्व आईएएस

मस्टरोल में फर्जी उपस्थिति दर्ज कर बिना कार्य लाखों रुपए का भुगतान उठाने का आरोप

- **मामला ब्यावर जिले की मसूदा पंचायत समिति क्षेत्र की रामगढ़ ग्राम पंचायत में मनरेगा कार्यो में फर्जीवाड़ा करने से जुड़ा हुआ है**
- **इस मामले में पूर्व में भी दो अप्रेल को विकास अधिकारी को दी थी शिकायत, पर नहीं हुई कोई कार्रवाई**

मसूदा, (निसं)। सरकार ग्रामीणों को रोजगार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से महात्मा गांधी रोजगार योजना के अंतर्गत कार्य स्वीकृत कर लोगों को रोजगार उपलब्ध करने में तत्पर है। वहीं दूसरी और कर्मचारियों अधिकारियों की अनदेखी एवं अपेक्षित रवैया के चलते कुछ लोग इस योजना में लोगों को रोजगार उपलब्ध कराने के बजाय फर्जीवाड़ा से सरकारी राशि का दुरुपयोग कर रहे हैं।

मामला ब्यावर जिले की मसूदा पंचायत समिति क्षेत्र की रामगढ़ ग्राम पंचायत में मनरेगा कार्यों में फर्जीवाड़ा करनें से जुडा हुआ है। इस मामले की पंचायत समिति के विकास अधिकारी से लेकर जिला कलेक्टर तक की गई शिकायत में दर्शाए गए बिंदुओं के अनुसार पंचायत रामगढ़ में मनरेगा मार्ग श्मशान घाट के पारा नाड़ी डीसीलिंटिंग कार्य में 7 मार्च से 22 मार्च तक के मस्टररोल नंबर 33986, 33987, 33988, 33989, 33990, 33991 में फर्जी उपस्थिति और फर्जी फोटो अपलोड कर फर्जीवाड़ा किया जाना बताया गया है।

इस मामले महत्वपूर्ण बिन्दु यह कि मस्टरोल में अंकित श्रमिक 7 मार्च से 22 मार्च तक की समयावधि में काम पर गए ही नहीं, इसके बावजूद किसी तकनीकी माध्यम से फर्जी फोटो को अपलोड किया जाकर अपलोड ग्रुप फोटो अपलोड कर फर्जी हाजिरी दर्शा दी गई। जबकि फोटो किसी अन्य की लगाई तो उपस्थिति किसी अन्य की दर्शाई गई, जबकि मौके पर काम कुछ भी नहीं होने के बावजूद बिना कार्य के लाखों रुपए का भुगतान उठा लिया।

जब इस मामले की 2 अप्रेल को भी मसूदा विकास अधिकारी के समक्ष उपस्थित होकर शिकायत की गई थी फिर भी सम्बन्धित मामले की जांच नहीं की गई। हाल ही में रजिस्टर्ड डाक से भेजी गई शिकायत को लेकर पंचायत समिति के विकास अधिकारी ने पंचायत प्रसार अधिकारी को जांच करने के आदेश दिए। शिकायत कर्ताओं द्वारा एक बार पुन: विकास अधिकारी मसूदा, जिला कलेक्टर ब्यावर, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद अजमेर उपखंड अधिकारी मसूदा एवं पुलिस अधीक्षक ब्यावर को भेजी शिकायत में दोषियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करके दंडित करने की मांग करने के साथ ही अन्यथा ग्रामवासियों को राजकीय राशि का गबन करने के मामले में न्यायालय की शरण लेने तक का उल्लेख किया है। जानकारी के अनुसार इस मामले की जांच अतिरिक्त विकास अधिकारी देवकीनंदन शर्मा को सौंपी गई है।

जांच अधिकारी अतिरिक्त विकास अधिकारी देवकीनंदन शर्मा का कहना है कि इस मामले से सम्बंधित तथ्य एवं ग्राम पंचायत से 11 मई तक रिकॉर्ड तलब किया है। सम्बन्धित रिकॉर्ड उपलब्ध होते ही मामले की जांच की जाकर जांच रिपोर्ट तैयार की जाएगी।

अवैध खनन के जुर्माने के 15 करोड़ रुपए नहीं वसूल पाया विभाग

बीकानेर, (निसं)। अवैध खनन को विभाग के अधिकारियों की ढिलाई से बढ़ावा मिलता है। अवैध खनन के मामलों में विभाग की ओर से पैनल्टी लगाई जाती है। माफिया एक बार मौके पर पैनल्टी भुगतान के लिए समय ले लेता है, लेकिन बाद मेंठेंगा दिखा देते हैं। खनन विभाग के अकेले बीकानेर जिले कोलायत क्षेत्र में खनन कारोबारियों से पैनल्टी पेटे वसूली के 15 लाख रुपए बकाया पड़े हैं। रसूख के दबाव में खनन माफिया ने विभाग में ऐसे मामलों में आगे की कार्रवाई रुकवा रखी है।

आचार संहिता लगने के बाद क्षेत्र में अवैध खनन बढ़ गया है। मुख्यमंत्री के निर्देश पर पुलिस-प्रशासन व खनिज विभाग खनन माफिया पर कार्रवाई नहीं रहे हैं। कोलायत क्षेत्र के गजनेर थाने के गंगापुरा और शरह किशनायत मोटावता में अवैध खनन पर विभाग ने पैनल्टी लगाई थी। पैनल्टी का भुगतान नहीं किया गया और खनन कार्य भी नहीं रोका गया है। कुछ समय तक इनका पिटमैजरमेंट तक नहीं किया जा सका था। यहां अवैध खनन करने से ओरण और सरकारी भूमि को छलनी कर रखा है। जागरूक ग्रामीण दलीप सिंह ने आरटीआई के तहत सूचना मांगी तो खनिज अभियंता ने जवाबी पत्र में कहा कि अवैध खनन की जांच कराई गई है। खनन माफिया को नोटिस देने के बाद अवैध खनन की गणना कर राशि वसूली के लिए लिखा गया है। जबकि हकीकत में राशि वसूली एक रुपया भी नहीं की गई है। पिछले तीन साल में खनिज विभाग की ओर से जिन अवैध माइंस पर पैनल्टी लगाई, उनकी दोबारा जांच व पिटमैजरमेंट व ड्रोन से जांच कराने की मांग निदेशालय के पास पहुंची थी। शिकायत में आरोप लगया गया कि जिन अवैध खनन क्षेत्र पर खनन विभाग ने पैनल्टी लगाई, उन्हीं पर फिर से अवैध खनन हुआ है। पिछले साल श्रीकोलायत एसडीएम व खनिज अभियंता ने निरीक्षण किया तो अवैध खनन की पुष्टि भी हुई। जिला कलेक्टर व पुलिस अधीक्षक के निरीक्षण में भी अवैध खनन होना पाया। इसके बाद भी खनन विभाग ने खनन माफिया से जुर्माने राशि तक वसूल नहीं की। इससे अवैध खनन को बढ़ावा मिल रहा है।

राशिफल मंगलवार 7 मई, 2024

पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, चतुरदशी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2081, अश्विनी नक्षत्र दिन 3:32 तक, आयुष्मान योग रात्रि 8:59 तक, शकुनि करण दिन 11:41 तक, चन्द्रमा आज मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-मेष, मंगल-मीन, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मेष, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग और अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 3:32 तक है। आज पितृकार्य अमावस्या है और श्री रविन्द्रनाथ टैगोर जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:06 से 10:44 तक, लाभ-अमृत 10:44 से 2:02 तक, शुभ 3:41 से 5:20 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:48, सूर्यास्त 6:59

मेष

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। पारिवारिक परेशानियों से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

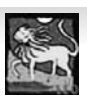

सिंह

धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक संदेश प्राप्त होंगे। पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

धनु

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

वृष

मित्रों/रिश्तेदारों से आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं और समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी।

कन्या

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मकर

घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है।

तुला

व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आज विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है।

कुंभ

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

वृश्चिक

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। मन का भय दूर होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

विधायक व्यास ने चंदा उड़ाकर की शहर की खुशहाली और समृद्धि की कामना

बीकानेर नगर के 537 वें स्थापना दिवस के अवसर पर विधायक जेठानंद व्यास ने धरणीधर मैदान में समर्थकों के साथ चंदा उड़ाया।

■ विधायक व्यास ने चाइनीज मांझे का उपयोग नहीं करने तथा दूसरों को इसके लिए प्रेरित करने की शपथ दिलाई

बीकानेर, (कासं)। बीकानेर नगर के 537वें स्थापना दिवस के अवसर पर विधायक सेवा केन्द्र का चार दिवसीय नगर स्थापना दिवस समारोह सोमवार को प्रारंभ हुआ। पहले दिन विधायक व्यास ने शहरवासियों के साथ धरणीधर मैदान में चंदा उड़ाया और शहर की समृद्धि और खुशहाली की कामना की।

इस दौरान अन्न-धन रो भंडार भरै मां, मौज मनावै टाबरिया.., गवरा दादी पून दै.., टाबरियां रौ चंदो उडै.. तथा आकासां में उडै म्हारौ चंदौ- लखमीनाथ म्हारी स्हाय करै... जैसे दोहों के साथ हवा में चंदा उड़ाया गया। विधायक व्यास ने कहा कि नगर स्थापना दिवस हम सभी के लिए गर्व और खुशी का अवसर है। राव बीका का बसाया यह शहर आज देश और दुनियां में विशेष पहचान रखता है। स्थापना दिवस का समारोह प्रत्येक बीकानेरवासी मनाएं। इसके मद्देनजर यह शुरूआत की गई है। उन्होंने बताया कि आगामी वर्षों में इसे और अधिक भव्य तरीके से मनाया जायेगा।

इस दौरान विधायक व्यास ने चाइनीज मांझे का उपयोग नहीं करने तथा दूसरों को इसके लिए प्रेरित करने की शपथ दिलाई। उन्होंने कहा कि प्रत्येक त्यौहार को पारम्परिक रूप से मनाया जाए, जिससे हमारे पूर्वजों की परम्पराओं का युवा पीढ़ी तक पहुंचाया जा सके। उन्होंने कहा कि जागरुक नागरिक होने के नाते हमें चाइनीज मांझे का विक्रय, उत्पादन और भंडारण करने वालों की जानकारी प्रशासन और पुलिस को देनी चाहिए। चंदा महोत्सव प्रभारी पवन व्यास ने बताया कि इस दौरान विभिन्न संदेशपरक चंदा उड़ाए गए। उन्होंने चंदा उड़ाने की परम्परा के बारे में जानकारी दी। बृजेश्वर व्यास, गणेश लाल व्यास और राहुल व्यास ने चंदा उड़ाने में सहयोग किया।

इस दौरान वरिष्ठ भाजपा नेता शशि शर्मा, पूर्व पार्षद शिव कुमार रंगा, पार्षद अरविंद किशोर आचार्य, राजकुमार किराडू, जे.पी. व्यास, पूर्व उप महापौर अशोक आचार्य, वीरेंद्र किराडू, राजकुमार पारीक, दीपक व्यास, भगवती प्रसाद गौड़, आनंद जोशी, एस. एन. आचार्य, सरजू नारायण पुरोहित, दुर्गाशंकर आचार्य, शेखर आचार्य, अनादि पारीक, भंवर पुरोहित, गोपाल आचार्य, अनिल आचार्य, एडवोकेट त्रिलोक नारायण पुरोहित, राजेन्द्र शर्मा, लालजी आचार्य, रामकुमार व्यास, दुर्गाशंकर आचार्य, नेमीचंद तंवर, दिनेश सांखला, पूर्व पार्षद प्रेम सिंह मेडतिया, रामपाल सैन, रमेश स्वामी, नारायण हर्ष, मुरली व्यास आदि मौजूद थे।

विधायक व्यास ने बताया कि नगर स्थापना दिवस कार्यक्रमों की श्रृंखला में बुधवार को बारहगुवाड़ में सायं 7.30 बजे से विराट कवि सम्मेलन आयोजित किया जायेगा। इसमें बाबूलाल छंगाणी, मनीषा आर्य सोनी, राजेन्द्र स्वर्णकार, डॉ. कृष्णा आचार्य, संजय आचार्य वरूण, लीलाधर सोनी, गोपाल पुरोहित और आनंद मस्ताना आदि कविताओं की प्रस्तुति देंगे। उन्होंने बताया कि शहरी क्षेत्र में लम्बे समय बाद ऐसा कवि सम्मेलन आयोजित किया जायेगा।

विधायक ने बताया कि इसी श्रृंखला में 8 मई को दीपदान का कार्यक्रम होगा। इसके तहत जस्सूसर गेट के अंदर वृहद स्तर पर दीप प्रज्वलित किए जायेंगे। यह कार्यक्रम कम्युनिटी वेलफेयर सोसायटी द्वारा आयोजित किया जायेगा। जिसके प्रभारी राजकुमार किराडू होंगे।

दस हज़ार पतंगें बांटेंगे: बीकानेर (पश्चिम) विधायक जेठानंद व्यास ने सोमवार को टीम धरणीधर द्वारा तैयार दस हजार संदेशपरक पतंगों का विमोचन किया। टीम धरणीधर के दुर्गा शंकर आचार्य ने बताया कि व्यास और कोलायत विधायक अंशुमान सिंह भाटी के सौजन्य से पांच- पांच हजार पतंगें तथा सौ चरखी तैयार करवाई गई हैं। कच्ची बस्तियों में इनका वितरण करवाया जायेगा।

आर.टी.ई.में आवेदन दस तक

बीकानेर, (कासं)। शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आरटीई) के तहत निजी स्कूलों में प्रवेश की प्रक्रिया में संशोधन किया गया है। आरटीई के तहत विद्यार्थियों का प्रवेश कराने के लिए अभिभावक 10 मई तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। इसके बाद आवेदन नहीं कर सकेंगे।

इसके बाद राज्य स्तर पर एनआईसी की ओर से 13 मई को ऑनलाइन लॉटरी के माध्यम से प्रवेश के लिए विद्यार्थियों का वरियता क्रम तय किया जायेगा। इसके बाद फिर से अभिभावकों की बारी होगी। वे 20 मई तक ऑनलाइन रिपोर्टिंग करेंगे। विद्यालयों के चयन का क्रम बदल सकेंगे। आरटीई के तहत प्रवेश के आवेदन के बाद अभिभावक की ओर से चयनित पहले निजी विद्यालय की ओर से 13 से 24 मई के बीच आवेदन पत्रों की जांच की जायेगी।

अभिभावक 13 से 30 मई के बीच दस्तावेजों में संशोधन भी करवा सकते हैं। विद्यालय की ओर से रिक्वेस्ट करने पर सीबीईओ की ओर से जांच 13 मई से 3 जून के बीच की जायेगी। यह रिक्वेस्ट अभिभावकों की ओर से दस्तावेज रिअपलोड नहीं करने पर संशोधन किए जाने के बाद होगी। जांच के बाद शेष सभी आवेदनों का ऑटोवेरिफिकेशन राज्य स्तर पर एनआइसी की ओर से 6 जून को किया जायेगा। प्रथम चरण के तहत आवंटन 7 से 25 जुलाई तक राज्य स्तर पर किया जायेगा। इसके बाद दूसरे चरण की सीटों का आवंटन 26 जुलाई से 16 अगस्त किया जायेगा। अंतिम चरण में 17 से 31 अगस्त तक चलेगा।

सार-समाचार

अभियोजन अधिकारियों को प्रशिक्षण

नए कानूनों पर अभियोजन अधिकारियों के प्रशिक्षण को अभियोजन अधिकारी डॉ चन्द्रप्रकाश ने संबोधित किया।

बीकानेर, (कासं)। केन्द्र सरकार की ओर से पारित नवीन कानून की जानकारी को लेकर आज सदर थाना सभागार में अभियोजन अधिकारीगणों के लिए एक दिवस का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में जिले भर से आये अभियोजन अधिकारी शामिल हुए। सीजेएम कोर्ट, श्रीगंगानगर से आये अभियोजन अधिकारी डॉ. चंद्रप्रकाश ने सभी अभियोजन अधिकारियों को नवीन विधियों का प्रशिक्षण दिया। जिसमें भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता-2023, भारतीय न्याय संहिता-2023 व भारतीय साक्ष्य अधिनियम-2023 से जुड़ी जानकारी दी गई। अभियोजन निदेशालय राजस्थान, जयपुर के निर्देश पर आयोजित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में संयुक्त निदेशक अभियोजन बीकानेर संभाग राजेन्द्र तंवर सहित कुल 21 अभियोजन अधिकारी मौजूद थे। प्रशिक्षण में अभियोजन अधिकारी संजीव पुरोहित, कॉर्डिनेटर हरीश श्रीमाली ने भी सहयोग किया।

बुलेट से पटाखे की आवाज पर जब्त

मुक्ता प्रसाद थाना पुलिस ने बुलेट से पटाखे की आवाज निकाल परेशान करने पर एक दर्जन बुलेट बाइक जब्त की।

बीकानेर, (कासं)। बुलेट चलाने की शौकीन वे युवा जो अपनी बुलेट से साइलेंसर से आवाज निकालते हैं। उनके लिए सावधान होने की जरूरत है पुलिस ने अब ऐसे बुलेट चालकों के खिलाफ शिकंजा कसना शुरू कर दिया है जो बुलेट चलाते समय आवाज निकालते है। शहर के मुक्ता प्रसाद थाना पुलिस ने आवाज करने वाली बुलेट चालकों पर कार्रवाई की है और एक दर्ज बुलेट जब्त की है। थानाधिकारी धीरेंद्र सिंह ने बताया कि यातायात पुलिस की ओर से चलाई जा रही विशेष अभियान में एमवी एक्ट के तहत यह कार्रवाई की है। गूगल रोड रामपुरा बस्ती सहित आधा दर्जन स्थान पर पुलिस ने दबिश देकर पटाखे की आवाज करने वाली बुलेट चालकों की बुलेट जप्त की है। पुलिस द्वारा की गई इससे कार्रवाई में उप निरीक्षक राधेश्याम, राजेंद्र कुमार, रेनू बाला, हैड कांस्टेबल सवाई सिंह, हीरा सिंह, नरेश सिंह, कांस्टेबल संजय भूर सिंह, हेम सिंह, छगनलाल, मनोज आदि शामिल थे।

चाकू से हमला कर बालियां लूटी

श्रीगंगानगर, (कासं)। जिले के जैतसर थाना क्षेत्र के गांव तीन जेकेएम में बदमाशों ने एक महिला पर चाकू से हमला कर उसके कानों में पहनी सोने की बालियां लूट ली। महिला जब तक शोर मचाती बदमाश फरार हो गए। बदमाशों ने महिला पर चाकू से इतना तेज वार किया कि वह गंभीर रूप से घायल हो गई। उसे श्रीबिजयनगर के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र ले जाया गया जहां इलाज के दौरान उसने दम तोड़ दिया। दिन-दहाड़े हुई वारदात से ग्रामीणों में दहशत का माहौल है। उनका कहना है कि छोटे से गांव में इस तरह की वारदात होना बेहद चिंता का विषय है।

घर में घुसकर अकेली देख नाबालिग से रेप की कोशिश

■ पीड़िता से शारीरिक संबंध बनाने का प्रयास किया

■ किसी को बताने पर जान से मारने की धमकी भी दी

श्रीगंगानगर, (कासं)। कोतवाली थाना इलाके में घर में घुसकर नाबालिग से रेप की कोशिश का मामला सामने आया है। पीड़िता की मां ने थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई है।

नाबालिग की मां ने एक व्यक्ति के खिलाफ मामला दर्ज करवाया है। जिसमे बताया कि आरोपी नाबालिग लड़की का पीछा करता है। उससे छेड़छाड़ करता है। उस पर दोस्ती करने के लिए दबाव डालता था। एक बार आरोपी पीड़िता को घर में अकेली देखकर घर में भी घुस आया। उसने पीड़िता से शारीरिक संबंध बनाने का प्रयास भी किया। किसी को बताने पर जान से मारने की धमकी भी दी। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

पीड़िता की मां की ओर से दर्ज मामले में कहा गया कि आरोपी नाबालिग बेटी को लगातार परेशान करता रहता। जब वो स्कूल जाती या किसी अन्य काम से घर से बाहर निकलती तो आरोपी उसका पीछा करता है और उससे छेड़छाड़ करता है। जांच अधिकारी कोतवाली एसएचओ पृथ्वीपाल सिंह ने बताया कि मामला देर रात करीब 12 बजे दर्ज हुआ है। इस संबंध में अब तक पीड़ित पक्ष के बयान नहीं हुए हैं। बयान होने के बाद ही स्थिति स्पष्ट हो सकेगी।

पिस्तौल की नोंक पर लूट : हनुमानगढ़ के टाउन थाना क्षेत्र में कनपटी पर पिस्तौल रखकर नगदी लूट ले जाने का मामला सामने आया है। पुलिस ने पीड़ित की रिपोर्ट के आधार पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। एएसआई दरिया सिंह ने बताया कि सुबेग सिंह उर्फ काली (38) पुत्र सरदार भजनसिंह लबाना निवासी वार्ड नम्बर 27 अम्बेडकर कॉलोनी हनुमानगढ टाउन ने थाने में आकर रिपोर्ट दी। जिसमें उसने बताया कि वह टाउन के वाल्मीकि चौक पर डीजे और किराना की दुकान करता है। 3 मई की देर शाम को लगभग 8:30 बजे वह अपनी दुकान पर बैठा था। इसी दौरान बिट्टू उर्फ जसपाल पुत्र पप्पू निवासी लोहिया कॉलोनी, शाहरूख खान निवासी गली नम्बर 6 नई आबादी और दो अन्य दुकान पर आए। पीडित ने आरोप लगाया कि आरोपियों ने दुकान में घुसकर उसके साथ मारपीट और गाली गलौच की। आरोपियों ने उसकी कनपटी पर पिस्तौल लगाकर दुकान के गल्ले में रखे साढ़े 8 हजार रूपए निकाल लिए।

रात को मारपीट कर 36 हजार रूपये छीने

बीकानेर, (कासं)। बीती देर रात को ठेके के सामने स्कार्पियो गाड़ी में एक लड़की व दो लड़कों ने मारपीट कर 35840 रूपये छीनने का मामला सदर पुलिस थाना क्षेत्र में सामने आया है।

राजपूतों का मोहल्ला हिम्मतासर निवासी नरेन्द्र सिंह ने इस आशय की रिपोर्ट थाने में दी है। रिपोर्ट के मुताबिक वारदात पांच मई की रात को एक व दो बजे के बीच की है। रिपोर्ट में परिवादी ने बताया कि रात को करीबन एक व दो बजे के बीच वह अपने ठेके के आगे आया। जहां पहले से काले रंग की स्कार्पियो गाड़ी खड़ी हुई थी। गाड़ी के नजदीक एक लड़की व दो लड़के खड़े हुए थे। उन्होंने शराब पी रखी थी।

आरोप है कि आरोपियों ने उसके साथ मारपीट की तथा उससे 35840 रूपये छीनकर फरार हो गए। पुलिस ने रिपोर्ट के आधार पर विवेक व दो-तीन अन्य के खिलाफ मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है।

बीकानेर आगार को पांच रोडवेज बसें और मिली

■ बसों का संचालन सोमवार से ही शुरू कर दिया गया

बीकानेर, (कासं)। रोडवेज आगार के बेड़े में पांच नई बसें और शामिल हो गई है। इन बसों को रोडवेज प्रबंधन ने चलाने के लिए रूट तय कर दिए है। थ्री बाई टू इन बसों में से एक को दिल्ली वाया झुंझुनूं चलाया जायेगा।

बसों का संचालन सोमवार से ही शुरू कर दिया गया। वर्तमान में चार बसें दिल्ली रूट पर चल रही है। नई मिली शेष चार बसों को ग्रामीण रूट पर चलाने के लिए कसरत चल रही है। रोडवेज़ प्रबंधन के अनुसार बीकानेर से दिल्ली वाया झुंझुनूं बस सुबह सवा सात बजे बीकानेर से रवान हुई और रात को वापस आयेगी।

बीकानेर आगार से पिछले चार महीने में 25 बसों का करार खत्म हुआ है। इसमें से अब तक 20 बसें नए वर्जन की मिल चुकी हैं। शेष 5 बसें अभी और मिलनी है।

रोडवेज सूत्रों की मानें तो 15 मई तक रोडवेज को चार-पांच एसी बसें मिल जायेगी। इनको लम्बे रूट पर चलाया जायेगा।

साथ ही नॉन एसी बसों को बीकानेर से जोधपुर-भीनमाल, जोधपुर-अजमेर, श्रीगंगानगर एपीजी, श्रीगंगानगर 5 टीजी, श्रीगंगानगर, अजमेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर केडब्लयू, अजमेर-नोखा, जोधपुर, नोखा-धरनोक, जोधपुर रूट पर संचालित किया जायेगा।

इन्द्रा गोदारा, मुख्य प्रबंधक बीकानेर आगार रोडवेज का कहना है कि नई मिली पांच बसों में से एक को दिल्ली रूट पर चला रहे हैं। शेष चार के लिए रूट तय किए जाने हैं। अभी पांच बसें और मिलेगी। इसके बाद लोकल रूटों पर बसों के रात्रि ठहराव और रूटों के फेरे बढ़ाने का निर्णय कर सकेंगे।

भाई की हत्या के आरोपी भाई-भाभी गिरफ्तार

■ जमीन विवाद के चलते की भाई की हत्या

खाजूवाला, (कासं)। खाजूवाला कस्बे के तीन केजेडी गांव में दो दिन पहले जमीन विवाद के चलते एक व्यक्ति की हत्या के मामले में पुलिस ने मृतक के भाई और भाभी को गिरफ्तार किया है। दोनों आरोपियों पर सिर पर कुल्हाड़ी से वार कर हत्या करने का आरोप है।

वारदात का अंजाम देने एवं साक्ष्य मिटाने के साथ पुलिस को गुमराह करने का प्रयास भी किया। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ग्रामीण डॉ. प्यारेलाल शिवरान ने बताया कि तीन केजेडी निवासी नरेन्द्र सिंह उर्फ राजू (44) पुत्र बलदेव सिंह एवं वीरपाल कौर (32) पत्नी नरेन्द्र सिंह उर्फ राजू को गिरफ्तार किया है। दोनों आरोपी मृतक के भाई-भाभी हैं।

पुलिस ने मौके से जुटाए साक्ष्य व सबूत के आधार पर आरोपी नरेन्द्र सिंह से सख्ती से पूछताछ की। उसने हत्याकांड का राज उगल दिया है।

खाजूवाला के चक तीन केजेडी में 3 मई को हरविन्दर सिंह की कुल्हाड़ी से वार कर हत्या कर दी गई। उसका शव घर की बाखल में पड़ा मिला। पुलिस पहुंची तो आरोपियों ने पुलिस व ग्रामीणों को गुमराह करने के लिए झूठी कहानी बताई। परन्तु पुलिस ने असलियत का पता लगाकर मृतक के भाई नरेन्द्र को हिरासत में ले लिया। मृतक की पत्नी कर्मजीत कौर ने जेठ नरेन्द्र सिंह, जेठानी वीरपाल कौर व भतीजे के खिलाफ मामला दर्ज कराया है।

मतगणना को लेकर प्रभारी लगाए

श्रीगंगानगर, (कासं)। लोकसभा आम चुनाव-2024 के दौरान भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार संसदीय निर्वाचन क्षेत्र गंगानगर से संबंधित मतगणना की तैयारियों, मतगणना एवं परिणाम से संबंधित समस्त प्रपत्रों को निर्धारित फार्मेट में तैयार करने के उपरांत निर्वाचन विभाग राजस्थान व भारत निर्वाचन आयोग को प्रेषित करने के लिए प्रभारी व अतिरिक्त प्रभारी अधिकारी नियुक्त किए गए हैं।

जिला निर्वाचन अधिकारी लोकबंधु ने मतगणना कार्यों की त्वरित निगरानी हेतु पर्यवेक्षण के लिए आयुक्त नगर परिषद यशपाल आहुजा को प्रभारी अधिकारी तथा उप निदेशक आर्थिक व सांख्यिकी विभाग मोहनलाल को अतिरिक्त प्रभारी अधिकारी नियुक्त किया गया है।

श्रीबिजयनगर में स्कूल बिल्डिंग से गिरे मजूदर की मौत

■ पुरानी स्कूल बिल्डिंग की रिपेयरिंग करने के दौरान सीढ़ी गिरने से काम कर रहा मजदूर पहली मंजिल पर आ गिरा

अनूपगढ़, (कासं)। जिले के श्रीबिजयनगर में हरिपुरा रोड स्थित एक पुरानी स्कूल बिल्डिंग की रिपेयरिंग करने के दौरान गिरने से बुजुर्ग मजदूर की मौत हो गई।

हादसा दोपहर में हुआ। बुजुर्ग मजदूर यहां पिछले कुछ दिन से काम कर रहा था। यहां एक पुरानी स्कूल बिल्डिंग की रिपेयरिंग का काम चल रहा था। इसी दौरान यह हादसा हो गया। जानकारी मिलते ही बुजुर्ग मजदूर का बेटा और अन्य परिचित मौके पर पहुंच गए। श्रीबिजयनगर पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

गांव हरिपुरा का रहने वाला बुजुर्ग मजदूर जीतराम (62) अन्य दिनों की तरह श्रीबिजयनगर के हरिपुरा रोड पर एक बिल्डिंग रिपेयरिंग के काम पर आया था। वह मेहनत मजदूरी करके जीवन यापन करता था। उसने सुबह से बिल्डिंग रिपेयरिंग के काम में सहयोग करना शुरू कर दिया। वह लकड़ी की सीढ़ी लगाकर दूसरी मंजिल पर ऊंचाई पर काम करने लगा। इसी दौरान सीढ़ी असंतुलित हुई और वह पहली मंजिल पर आ गिरा। इससे वह गंभीर घायल हो गया। उसे आसपास के लोगों ने संभाला।

उन्होंने उसे तुरंत सरकारी अस्पताल में भर्ती करवाया जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। घटना की जानकारी मिलते ही मौके पर श्रीबिजयनगर थाने के एएसआई सहीराम पहुंचे। उन्होंने हालात का जायजा लिया और आसपास काम कर रहे लोगों से जानकारियां जुटाई। जानकारी मिलते ही गांव हरिपुरा से जीतराम की पत्नी और बेटा मौके पर पहुंचे। शव को सरकारी अस्पताल की मोर्च्यूरी में रखवाकर पोस्टमार्टम की तैयारी की गई।

एएसआई सहीराम ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। उन्होंने बताया कि हादसा जहां हुआ वह स्कूल बिल्डिंग है। जीतराम यहां मेहनत मजदूरी कर रहा था। इसी दौरान हादसा हो गया।

साइकिल यात्री नितेश का अभिनंदन

बीकानेर, (कासं)। दिल्ली निवासी नितेश शर्मा पर्यावरण व शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिये साइकिल पर 2 फरवरी को निकला।

ग्लोबल वार्मिंग व पर्यावरण संरक्षण का संदेश व समाज को शिक्षित करने की अपील करते हुए नितेश शर्मा बीकानेर पहुंचा। पहाड़ों में भी पर्यावरण संतुलन बनाये रखने हेतु जागृति हेतु ज्योर्तिलिंग व चार धाम की यात्रा को भी इस यात्रा में शामिल कर लिया है। अपने यात्रा वृतांत साझा करते हुए बताया कि अब तक राजस्थान प्रदेश की चालीस प्रतिशत यात्रा पूरी कर ली है। 2500 किमी. से अधिक की यात्रा पूरी कर बीकानेर पहुंचने पर जब नितेश को पता चला कि बीकानेर का एक दल एवरेस्ट बेस कैम्प जा रहा है तो वह बहुत रोमांचित हुआ। इस दौरान बीकानेर के पायोनियर्स ने नितेश का अभिनंदन किया व शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर आर. के. शर्मा, नरेश अग्रवाल, श्रीराम शर्मा, सैयद मुश्ताक अली, दिनेश माथुर सहित अन्य उपस्थित थे।

चारदीवारी विहीन खेल मैदानों की बाउंड्री बनाने के प्रस्ताव भिजवाएं : कलेक्टर

बीकानेर कलेक्ट्रेट सभागार में साप्ताहिक समीक्षा बैठक को कलेक्टर नम्रता वृष्णि ने संबोधित किया।

■ साप्ताहिक समीक्षा बैठक में कलेक्टर ने ये निर्देश दिए

बीकानेर, (कासं)। जिला कलेक्टर नम्रता वृष्णि ने आयुर्वेद विभाग को सहजन के पौधे लगाने वाले विद्यालयों, प्राप्त और वितरित पौधों की संख्या संबंधी रिपोर्ट आगामी एक सप्ताह में उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए हैं।

सोमवार को कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित साप्ताहिक समीक्षा बैठक में जिला कलेक्टर ने कहा कि विद्यालयों और आंगनबाड़ी केन्द्रों में लगे मोरिंगा पौधों का रखरखाव किया जाना भी सुनिश्चित करें। उन्होंने आयुर्वेद विभाग द्वारा संचालित चिकित्सा केन्द्रों एवं चिकित्सकीय स्टाफ के संबंध में जानकारी ली। उन्होंने कहा कि खेल मैदानों को अतिक्रमण मुक्त रखा जाए एवं जिला परिषद द्वारा चारदीवारी विहीन खेल मैदानों की बाउंड्री बनाने हेतु प्रस्ताव भिजवाए जाएं।

उन्होंने कहा कि जिन विद्यालयों के पास पट्टे नहीं है, उनके आवेदन सक्षम स्तर से भिजवाएं। इस दौरान नम्रता वृष्णि ने गर्मी के मौसम के मद्देनजर पेयजल आपूर्ति की प्रवावी व्यवस्था सुनिश्चित करने, इसकी प्रभावी मॉनिटरिंग एवं किसी शिकायत के समाधान के लिए एक्शन मोड पर कार्य करने के निर्देश दिए। उन्होंने जिले में अल्पसंख्यक विभाग द्वारा संचालित मदरसों एवं छात्रावासों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की छात्रवृति के बारे में जानकारी ली। आरएसएलडीसी द्वारा संचालित प्रशिक्षणों के बारे में जानकारी प्राप्त की।

उन्होंने कहा कि अब तक आयोजित प्रशिक्षणों, युवाओं के प्लेसमेंट एवं आगामी कार्ययोजना की जानकारी उपलब्ध करवाई जाए। अन्नपूर्णा रसोई के भोजन में मिलेट्स को भी शामिल करने के निर्देश दिए। गर्मी के मौसम के मद्देनजर लू और तापघात से बचाव के लिए आमजन को जागरूक करने के लिए गतिविधियां संचालित करने के निर्देश दिए। साथ ही कहा कि सभी अस्पतालों में उपचार से जुड़ी आवश्यक व्यवस्थाएं हों।

टीकाकरण को लेकर कार्यशाला आयोजित

नोखा, (कासं)। स्वास्थ्य विभाग की ओर से नियमित टीकाकरण सुदृढीकरण हेतु आवश्यक बल दिया जा रहा है।

इसी संदर्भ में डब्लयूएचओ ईकाई, बीकानेर के सहयोग से यहां सोमवार को पंचायत समिति सभागार में नियमित टीकाकरण के सुदृढीकरण एवं डिजिलाइजेशन को लेकर ब्लॉक स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें डब्लयूएचओ के डॉ अनुरोध तिवारी द्वारा नोखा ब्लॉक के समस्त चिकित्सा अधिकारी, सेक्टर हेल्थ सुपरवाइजर, एलएचवी व एएनएम को नियमित टीकाकरण के सुदृढ़ीकरण को लेकर जानकारी दी गई।

कार्यशाला में खण्ड मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ कैलाश गहलोत द्वारा नोखा खण्ड में वर्तमान में हो रहे नियमित टीकाकरण की स्थिति पर चर्चा की गई और नियमित टीकाकरण में आ रही कमियों को दूर करने हेतु आवश्यक निर्देश दिए।

वाद पत्रों के लिए स्थिरीकरण के लिए सम्मन
(आदेश 5 नियम 1 और जाब्ता दिवानी परिशिष्ट-ख-संख्या 2)
अज अपर जिला न्यायाधीश सं. 1 मुकाम श्रीगंगानगर। बइजलास ...... वादी सौरभ कौशिक प्रतिवादी बिमला शर्मा वगैरा दावा बाबत काउंटर क्लेम बाबत घोषणा एवं विभाजन सम्पति मुकदमा नं. CO =1/22 वर्ष .. CIS-83/21 बनाम 1. अश्वनी पुत्र स्व. कैलाश पोता स्व. चन्द्रशेखर जाति ब्राहम्ण निवासी 5-बी-7, जयनारायण व्यास कॉलोनी, बीकानेर हाल आबाद ए-80, राजमाता सुदर्शनानगर, नजदीक साईबाबा मंदिर, बीकानेर। 2. रश्मि पुत्री स्व. कैलाश पोता स्व. चन्द्रशेखर जाति ब्राहम्ण निवासी 5-बी-7, जयनारायण व्यास कॉलोनी, बीकानेर हाल आबाद ए-80, राजमाता सुदर्शनानगर, नजदीक साईबाबा मंदिर, बीकानेर। कि सौरभ कौशिक वादी ने तुम्हारे खिलाफ घोष्णा एवं शहरी सम्पति के विभाजन के आधार पर काउन्टर क्लेम संस्थित किया है अतएव तुम्हें एतद्वारा आहत किया जाता है कि तुम या तो स्वयं या ऐसे अधिवक्ता द्वारा जो कि समय के रूपेण अनविष्ट है और काउन्टर क्लेम सम्बन्धी सब सारवान प्रश्नों के उत्तर देने में समर्थ है या जिसके साथ ऐसा कोई व्यक्ति जोकि ऐसे सब प्रश्नों के उत्तर देने में समक्ष है दिनांक 13 माह 5 सन 2024 वार... को 10.00 बजे अद में काउन्टर क्लेम का उत्तर देने के लिए इस न्यायालय में उपस्थित हो और तुम्हें आगे यह निर्देश दिया जाता है कि तुम उस दिन अपनी प्रतिरक्षा को लिखित कथन फाईल करो और उस दिन सब दस्तावेजों को जो तुम्हारे कब्जे या शक्ति में हो पेश करो जिन पर तुम अपनी प्रतिरक्षा या मुबरा या एतदावा निर्भर करते हो वहां तुम अपनी प्रतिरक्षा मुबरा प्रतिदावा के समर्थन में साक्ष्य के रूप में ऐसी दस्तावेजों को लिखित कथन के साथ आगे को जाने वाली सूची में प्रविष्ठ करोगे। तुमको यह सूचना दी जाती है कि पूर्ववर्णि दिवस की तुम्हारी उपजाति चैक होने पर काउन्टर क्लेम तुम्हारी अनुपस्थिती में सुना जावेगा और अवधारित किया जावेगा। मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुद्रा सहित आज दिनांक 3/5/24 को निकाला गया। -न्यायालय की आज्ञा से,
मुद्रा रीडर/शेह निस्तेदार ग्रेड - 1, अपर जिला एवं सैशन न्यायाधीश संख्या-1, श्रीगंगानगर (राज.)

राजस्थान सरकार
कार्यालय नगर विकास न्यास,श्रीगंगानगर (राज)
TelefaxNo.0154-2466652, Email:-SECYUIT SGNR @ RASTHAN GOV.IN
Office Address-uit Office Model Town,Sri Ganganagar (Raj)33500
क्रमांक-नियमन/2024/2920 दिनांक6.5.2024
सार्वजनिक आपत्ति सूचना
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि श्रीमती अलका असीजा पत्नी श्री आनंद प्रकाश असीजा एवं साबिया असीजा पुत्री श्री आनंद प्रकाश असीजा निवासी 371 विनोबा बस्ती, श्रीगंगानगर के द्वारा न्यास क्षेत्र में स्थित आवासीय भूखण्ड का न्यास रिकार्ड में नामान्तरण हेतु आवेदन किया गया है। उक्त भूखण्ड के सम्बन्ध में न्यास रिकार्ड एवं आवेदक के द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज की स्थिति निम्नानुसार है:-

न्यास रिकार्ड के अनुसार भूखण्ड का विवरण		आवेदक के द्वारा भूखण्ड के नामान्तरण हेतु प्रस्तुत दस्तावेजों का विवरण		
भूखण्ड का विवरण	मूल भूखण्डधारी	मृत्यु प्रमाण पत्र एवं विवरण	जायजवारिसों विवरण	दस्तावेजों का विवरण
चक 1ए छोटी मुरब्बा नं.30/41 15,16 माप 15 इन्टू 60 फीट भूखण्ड सख्या सं- ए-30	आवासीय नियमन पटटा संख्या 23227 दिनांक 29.09.2023 को श्री आनंद प्रकाश असीजा पुत्र श्री लेखराज असीजा के नाम से जारी है। जो आज कितिथि में दर्ज है।	श्री आनंद प्रकाश असीजा की मृत्यु दिनांक 23.01.2024 को हो चुकी है	1 अलका असीजा-पत्नी 2. सानिया आसीजा पुत्री	श्री आनंद प्रकाश असीजा की मृत्यु उपरान्त इनके वारिस श्रीमती अलका असीजा एवं सानिया असीजा द्वारा पट्टे की प्रति.वारिस प्रमाण पत्र व आनंद प्रकाश असीजा का मृत्यु प्रमाण पत्र प्रस्तुत कर नामान्तरण हेतु न्यास में आवेदन प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार उक्त भूखण्ड के सम्बन्ध में उपर्युक्तानुसार दस्तावेजों की प्रति इस कार्यालय में प्रस्तुत कर नामान्तरण चाहा गया है इस सम्बन्ध में श्रीमती अलका असीजा पत्नी श्री आनंद प्रकाश असीजा एवं सानिया असीजा पुत्री श्री आनंद प्रकाश असीजा निवासी ३७१ विनोबा बस्ती, श्रीगंगानगर द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों के सम्बन्ध में कोई आपत्ति है तो सूचना के प्रकाशन के ०७ दिवस में पुख्ता दस्तावेजों सहित अपनी आपत्ति/उजर/दावा निम्न हस्ताक्षरकर्ता के समक्ष प्रस्तुत कर सकते है। उक्त अवधि के दौरान इस भूखण्ड से सम्बन्धित समस्त दस्तावेजों को आमखास/हितबद्ध व्यक्ति के देखने व पढने के लिये कार्यालय समय में खुला रखा गया है। वाद मियाद प्रकरण का निस्तारण कर दिया जावेगा एवं कोई आपत्ति/उजर स्वीकार नही होगा।

सचिव
नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

सड़क हादसे में सेना के जवान सहित पांच जनों की मौत

सिंघाना के पास बाइक को टक्कर मारकर बस में घुस गई थी स्कार्पियो गाड़ी

हादसे में स्कार्पियो गाड़ी चकनाचूर हो गई।

सिंघाना थाना क्षेत्र के थली के पास हुये सड़क हादसे में मृतक।

खेतड़ी, (निसं)। सिंघाना थाना क्षेत्र के थली के पास सोमवार सुबह एक दर्दनाक हादसे में सेना के जवान सहित पांच जनों की मौत हो गई। हादसे में बस में सवार 22 लोग घायल हो गए, जहां आठ जनों की हालत गंभीर होने पर झुंझुनूं रैफर किया गया है। इस दौरान चीख पुखार मचने पर आसपास के ग्रामीण मौके पर पहुंचे तथा बस में सवार घायलों को निजी वाहनों से सिंघाना के राजकीय अस्पताल में पहुंचाया। इसके बाद सूचना पर सिंघाना पुलिस मौके पर पहुंची तथा जेसीबी व क्रेन की सहायता से घायलों को निकाला व आसपास की एंबुलेस बुलाकर उपचार के लिए अस्पताल भिजवाया गया।

मृतक करणवीर भारतीय सेना की सिग्नल कौर मे लांस हवलदार के पद पर मे तैनात था। वह रविवार रात को ही एक माह की छुट्टी लेकर घर आया था। एक महिने पहले ही दस दिन की छुट्टी आने पर स्कार्पियों गाड़ी निकलवाई थी। सुबह अपने भाई के बेटे का स्कूल में एडमिशन करवाने के बाद उन्हें घर छोड़कर सिंघाना के लिए अपने दोस्त रिंकु व भांजे साहिल के साथ गाड़ी में सवार होकर जा रहा था। गांव से कुछ दूर पहुंचने की बाद ही हादसे का शिकार हो गए। क्षेत्र में बड़ा हादसा होने पर सीएमएचओ डॉ. राजकुमार डांगी ने घायलों के उपचार के लिए बुहाना, उपजिला अस्पताल खेतड़ी से अतिरिक्त स्टाफ मौके पर भेजा। सूचना पर जिला कलेक्टर चिन्मयी गोपाल, बुहाना एसडीएम हेमंत कुमार, डीएसपी नोपाराम भाकर, नायब तहसीलदार बजरंग जाखड़, बुहाना बीसीएमओ डॉ. जयवीर भगासरा, खेतड़ी बीसीएमओ डॉ. हरीश यादव, आरआरटी प्रभारी डॉ. महेंद्र सैनी, एएसआई सूबेसिंह यादव, एएसआई धूड़सिंह, गाडाखेड़ा चौकी प्रभारी इंद्राज सिंह भी मौके पर पहुंचे तथा घटना की जानकारी ली।

- बस में सवार 22 जने घायल, आठ लोग गंभीर हालत में जिला अस्पताल में रैफर
- हादसे का शिकार सेना का जवान रविवार रात को ही एक महीने की छुट्टी लेकर आया था

इस दौरान हादसे में हमीरवास निवासी करणवीर (29) पुत्र शीशराम गुर्जर, रोहित उर्फ रिंकू (22) पुत्र बलवीर गुर्जर, नारेडी निजामपुर निवासी साहिल उर्फ राहुल (20) पुत्र शीशराम, बाइक सवार चोबारा की ढाणी तन सेफरागुवार निवासी सुरेश कुमार (39) पुत्र प्रभूदयाल यादव, बस चालक हनुमान प्रसाद उर्फ भानी (36) पुत्र नत्थूराम यादव की मौत हो गई। हादसे में रोशनी पत्नी लीलाराम निवासी माकड़ो, हिमांशु निवासी माकड़ो, राजबाला पत्नी सुबे सिंह निवासी सागा, कैलाश पुत्र प्रहलाद निवासी थली, पवन निवासी थली, ढाणी हुक्मा निवासी मनीषा, सोनू कुमारी, सोनू जांगिड़, अनिता, सुमन, सिंघाना निवासी भोमसिंह, संतलाल, चिरानी निवासी बलवंत, सुल्ताना अहिरान निवासी राजकी, कार्तिक, मेहाड़ा निवासी मोहित, बनवास निवासी सीमा घायल हो गए। इनमें सागा निवासी राजबाला, माकड़ो निवासी हिंमाशु, पताशी देवी, अमरपुरा निवासी रूकेश, राजपाल, शकुंतला, अनिता, सुखराम की हालत गंभीर होने पर रैफर कर दिया।

बाइक सवार सेफरागुवार से जा रहा था सूरजगढ़ :-हादसे का शिकार हुआ बाइक सवार अपने गांव सेफरागुवार से सूरजगढ़ जा रहा था। मृतक के भाई मुकेश यादव ने बताया कि उसका भाई सुरेश यादव सुबह बाइक पर सवार होकर सूरजगढ़ गया था। इस दौरान जब वह थली के पास पंहुचा तो सामने से आ रही स्कार्पियों गाड़ी ने उसकी बाइक को टक्कर मार दी, जिससे उसकी मौत हो गई। पुलिस द्वारा सूचना करने पर वह मौके पर पहुंचे। मृतक सुरेश के एक बेटा पीयुष (13) तथा छोटा बेटा लक्की (10) का है। सुरेश यादव टीचर बनने की तैयारी कर रहा था।

हादसे का शिकार हुआ सेना का जवान रविवार रात को ही एक महीने की छुट्टी लेकर घर आया था। जवान करणवीर वर्ष 2015 में भारतीय सेना में भर्ती हुआ था। इनके पिता शीशराम भी सेना से सेवानिवृत है। करणवीर दो भाईयों में छोटा था बड़ा भाई विकास घर पर ही रहता है। करणवीर का विवाह 2016 में कोटपूतली के बिंजाहेडा निवासी मीरा के साथ हुआ था। इनके एक चार साल की बेटी पबीना है।

जन शिक्षण संस्थान की निदेशक बीस हजार की रिश्वत लेते गिरफ्तार

कर्मचारी से बढ़ी हुई सैलेरी देने की एवज में 40 हजार की घूस मांगी थी

अजमेर, (कासं)। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो अजमेर ने सोमवार को कार्रवाई करते हुए जन शिक्षण संस्थान की निदेशक को 20 हजार की रिश्वत लेत हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। निदेशक के द्वारा संस्थान के कर्मचारी को उसकी बढ़ी हुई सैलेरी को देने की बदले में साल के 40 हजार रुपए रिश्वत डिमांड कर परेशान किया जा रहा था। कर्मचारी के द्वारा भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो अजमेर को इसकी शिकायत दी गई जिसके बाद इस कार्रवाई को अंजाम दिया। एसीपी के द्वारा संस्थान की निदेशक के आवास और कार्यालय पर भी सर्च किया जा रहा है।

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो अजमेर ने रिश्वत के आरोप में जन शिक्षण संस्थान की निदेशक श्वेता आनंद को गिरफ्तार किया।

जन शिक्षण संस्थान के पीड़ित कर्मचारी राजीव कॉलोनी अजमेर निवासी शैलेंद्र कुमार ने बताया कि 1993 से वह जन शिक्षण संस्थान में कार्यरत हैं। 2021 में उसे प्रोग्राम ऑफिसर के पद का एडिशनल चार्ज दिया गया था। एडिशनल चार्ज मिलने के बाद उसकी सैलरी 14,000 से 26,000 की गई थी। वेतन बढ़ोतरी के बाद संस्थान की निदेशक श्वेता आनंद के द्वारा सैलेरी बढ़ाकर देने की एवज में 4 हजार रुपए हर महीने देने साल के करीब साल के 40 हजार रुपए की रिश्वत मांग कर परेशान किया जा रहा था। उस समय उसने निदेशक को रिश्वत देने से मना कर दिया था। लेकिन उसे लगातार परेशान किया गया और उसकी बढ़ी हुई सैलरी भी नहीं दी गई। पीड़ित ने बताया कि इसके बाद उसने कुछ दिनों पहले परेशान होकर एसीबी से इसकी शिकायत की थी।

एसीबी अजमेर की मीणा बेनीवाल ने बताया कि शैलेंद्र कुमार की शिकायत पर सत्यापन किया गया। इसके बाद सोमवार को एसीबी टीम ने जन शिक्षण संस्थान के निर्देशक श्वेता आनंद को 20 हजार की रिश्वत लेते रंगे हाथ गिरफतार किया है, यह पूरी कार्रवाई एडिशनल एसपी भागचंद मीणा के नेतृत्व में की गई है। एसीबी के द्वारा इस मामले में अन्य कर्मचारियों की भूमिका को ध्यान में रखते हुए भी निर्देशक से पूछताछ की जा रही है।

झांसा देकर 6.40 लाख की ठगी

परबतसर, (निसं)। यूएसडीटी ऑनलाइन व्यापार का झांसा देकर एक युवक से छह लाख चालीस हजार की धोखाधड़ी का मामला पुलिस थाना मे दर्ज हुआ है।

पुलिस के अनुसार हरिराम पुत्र डोलाराम जाट ने रिपोर्ट दर्ज करवाई की राहुल पादड़ा पुत्र बालुराम जाट निवासी पादड़ों की ढाणी मोरेड ने प्रार्थी को यूएसडीटी ऑनलाइन व्यापार करने का झांसा दिया। ऑनलाईन रुपए लगाकर एक दिन में 10-20 हजार रुपए कमाने की बात कही। इसके बाद राहुल ने प्रार्थी को परबतसर बुलाया। बाद में राहुल पादड़ा वहां आया प्रार्थी से 6.40 लाख रुपए लेकर आईडी लॉगिन करने की बता कही। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

मंगेतर ने शादी का झांसा देकर दुष्कर्म किया

अजमेर, (कासं)। अलवर गेट थाने क्षेत्र में रहने वाली एक युवती ने अपने मंगेतर पर शादी का झांसा देकर दुष्कर्म करने और गला दबाकर जान से मारने की कोशिश करने का आरोप लगाते हुए पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराई है।

थाना प्रभारी व जांच अधिकारी श्याम सिंह ने बताया कि थाना क्षेत्र में रहने वाली पीड़ित युवती ने थाने में अपने मंगेतर के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है। दर्ज रिपोर्ट में युवती ने 2023 में उसकी शादी एक युवक से तय हुई थी। आरोपी के परिवार वालों ने बेटे के द्वारा कोई नशा नहीं करने की बात कही थी, इसके बाद से हम दोनों का मिलना-जुलना होने लगा। पीड़िता ने आरोप लगाया कि एक दिन आरोपी उसके घर आया और फिजिकल रिलेशन बनाने के लिए जोर जबरदस्ती करने लग गया, तो उसने मना किया था। युवती ने बताया कि आरोपी ने उसे शादी करने का झांसा देकर दुष्कर्म किया। बाद में आरोपी से बांसवाड़ा में रोका हो गया था। दोनों परिवारों के बीच बातचीत के बाद शादी भी तय हो गई थी। इसके बाद से ही मंगेतर उसके साथ झांसा देकर दुष्कर्म करता रहा। पीड़िता ने पुलिस को शिकायत देकर आरोप लगाया कि अप्रेल 2024 में मंगेतर नशे की हालत में घर आया और उसे शादी करने से मना कर दिया और गला दबाकर जान से मारने की कोशिश भी की गई। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

ट्रक से टकराई कार, दो की मौत, तीन युवक घायल

टोंक के सदर थाना क्षेत्र में हुये सड़क हादसे में मृतकों के फाइल फोटो।

टोंक, (निसं)। सदर थाना क्षेत्र में रविवार देर रात को जयपुर से आ रही कार डिवाइडर क्रॉस करके रोंग साइड में सामने से आ रहे ट्रक से टकरा गई। इसके बाद कार और ट्रक भी सड़क के नीचे पलट गए।

इस हादसे में कार सवार कोटा

- जयपुर से कोटा की ओर जा रही थी कार, मृतक और घायल कोटा जिले के बताये हैं
- घायल भी ठीक से बोल नहीं पा रहे थे, उनके पास मिले आधार कार्ड समेत अन्य कागजात से उनकी पहचान की गई
- हादसे के बाद बलेनो कार क्षतिग्रस्त हो गई

जिले के दो युवकों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि तीन युवक गंभीर रुप से घायल हो गए। घटना की सूचना मिलने के बाद सदर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और सभी को सआदत अस्पताल लाया गया, जहां घायलों को भर्ती किया गया। वहीं मृतकों के शवों को मोर्चरी में रखा गया। देर रात को घायलों को कोटा रेफर कर दिया, जबकि मृतकों का सोमवार सुबह पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों के सुपुर्द कर दिया।

सदर थाना प्रभारी बृज मोहन कविया ने बताया कि रात करीब 9.30 बजे एक बोलेनो कार जयपुर से कोटा की ओर जा रही थी। इस दौरान सदर थाना क्षेत्र में जयपुर कोटा नेशनल हाइवे 52 पर धर्म कांटे के पास बोलेनो कार अनियंत्रित होकर डिवाइडर कूद कर दूसरी साइड में आ गई और सामने से जयपुर की ओर से आ रहे ट्रक से टकरा गई। उसके बाद चीख पुकार मच गई। इस हादसे में कार सवार दो युवकों की मौत हो गई, जबकि तीन कार सवार घायल हो गए। मृतक और घायल कोटा जिले के हैं। थाना प्रभारी ने स्टॉफ के साथ कार में बुरी तरह फंसे घायलों और मृतकों को बाहर निकाला, फिर सभी को सआदत अस्पताल भेजा। जहां दो युवकों को औपचरिक रूप से मृत घोषित कर दिया, जबकि तीन घायलों को अस्पताल में भर्ती कर इलाज शुरु किया गया।

पुलिस के अनुसार घायल भी ठीक से बोल नहीं पा रहे थे। ऐसे में उनके पास मिले आधार कार्ड समेत अन्य कागजात से उनकी पहचान की गई। बाद में पुलिस ने उनके परिजनों से संपर्क कर उन्हे घटनाक्रम की जानकारी देकर बुलाया, परिजन रविवार मध्य रात बाद टोंक आ गए। तीन घायलों को कोटा रेफर कर दिया। मृतकों में कोटा (ग्रामीण) जिले के प्रदुमन (20) पुत्र ब्रजबिहारी मीणा निवासी सीमलिया कल्याणपुरा तथा आयुष (20) पुत्र ग्यारसीलाल मीणा निवासी दीगोद थाना क्षेत्र मूंडला निवासी की मौके पर ही मौत हो गई तथा घायलों में राजकुमार पुत्र काशीलाल मेघवाल, रूद्रेश पुत्र धनराज मीणा, सुरेंद्र उर्फ कालू पुत्र अमर लाल मीणा जो घायल हो गये।

डंपर चालक का पुलिस पर हमला, चेतक को मारी टक्कर

जोधपुर, (कासं)। निकटवर्मी डांगियावास के कोकुण्डा गांव की सरहद में शनिवार-रविवार की मध्य रात पुलिस की चेतक जीप को डंपर चालक ने जान से मारने की मारने की नीयत से गाड़ी को टक्कर मार दी। इसमें दो पुलिसकर्मी चोटिल हो गए। अज्ञात डंपर चालक के खिलाफ हत्या प्रयास एवं राजकार्य में बाधा का केस दर्ज किया गया है। पुलिस डंपर के नंबर के आधार पर चालक का पता लगाने का प्रयास कर रही है।

- पुलिस ने हत्या का प्रयास और राजकार्य में बाधा का केस दर्ज किया

डांगियावास पुलिस थाने के हैड कांस्टेबल लक्ष्मणराम ने मामला दर्ज करवाया है। इसमें उसने बताया कि शनिवार की रात को उसकी ड्यूटी थाना क्षेत्र में लगी हुई थी। साथ में कांस्टेबल हिम्मतसिंह था। हम लोग चेतक वाहन में गश्त कर रहे थे। तब डयूटी ऑफिसर जस्साराम की सूचना आई कि पालासनी गांव में एक डंपर का पीछा किया गया है जोकि रेत में धंस गया है। जिसे पकड़ा गया है। इस पर वे डंपर को जब्ती की कार्रवाई के लिए जालेली नायला से रवना हुए। मगर देर रात सवा एक बजे चेतक लेकर कोकुण्डा गांव की सरहद में पहुंचे तब सामने से एक डंपर आता दिखाई दिया। जिस पर उसे रूकने का इशारा किया गया तो उसके चालक ने डंपर को भगाते हुए पुलिस की चेतक को जोरदार टक्कर मार कर क्षितठास्त कर दिया और जान से मारने की नीयत से टक्कर मारी।

पुलिस ने बताया कि हैडकांस्टेबल लक्ष्मणराम ने डंपर के नंबर नोट किए है जिस आधार पर अब चालक का पता लगाया जा रहा है। फिलहाल उसका पता नहीं चला है। इस बारे में हत्या प्रयास एवं राजकार्य में बाधा डालने का केस दर्ज किया गया है।

चार युवकों ने नाबालिग से बलात्कार किया

घटना एक सप्ताह पुरानी बताई जा रही है, मुख्य आरोपी मजदूरी का काम करता है

कोलायत, (निसं)। एक नाबालिग लड़की के साथ सामूहिक बलात्कार का मामला थाने में दर्ज किया गया। घटना एक सप्ताह पुरानी है। मुख्य आरोपी मजदूरी का काम करता है। वह पीड़िता को बाजार से मोटरसाइकिल पर सामान रखकर लाने के बहाने से ले गया। रास्ते में दोस्तों को बुलाकर बलात्कार किया। पुलिस के अनुसार घटना 26 अप्रेल की दोपहर 12 से 3 बजे के बीच की है। पीड़ित नाबालिग और परिजनों ने कोलायत थाने पहुंचकर इसकी जानकारी दी तो तुरंत मामला दर्ज कर आरोपियों की तलाश के लिए पुलिस टीमें रवाना कर दी।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ग्रामीण डॉ. प्यारेलाल शिवरान ने बताया कि चार महीने से पीड़िता के घर पर निर्माण कार्य चल रहा है। गत 26 अप्रेल को घर पर कोई पुरुष सदस्य नहीं था। निर्माण कार्य में मजदूरी करने वाले अनिल कुमार ने नाबालिग से कहा कि बाजार से पत्थर लेकर आने हैं, इसके लिए मोटरसाइकिल पर उसके साथ चलना पड़ेगा। पीड़िता की बड़ी बहन ने साथ भेजने से मना किया तो आरोपी अनिल ने कहा कि वह बाइक चलाएगा।

नाबालिग को पत्थर पकड़वाकर पीछे बैठना है। इस तरह झांसे में लेकर नाबालिग को साथ बाइक पर ले गया। परिजनों ने बताया कि 26 अप्रेल को दोपहर तीन बजे वापस लौटी। इसके बाद गुमशुम रहने लगी और खाना भी नहीं खाया। मां ने साहस बंधाकर पूछा तो वह फूट पड़ी और रोते हुए पूरी घटना बताई। पुलिस ने अनिल व चार अन्य के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है।

पीड़िता ने पुलिस को बताया कि आरोपी अनिल उसे बाजार ले जाने की जगह सुनसान मार्ग पर ले गया। वहां जाकर अपने तीन दोस्तों को फोन कर बुला लिया। इसके बाद चारों ने बारी-बारी से नाबालिग के साथ बलात्कार किया। इसके बाद नाबालिग को आरोपियों ने किसी को घटना के बारे में नहीं बताने की धमकी दी। नाबालिग को डराया कि किसी को बताया तो परिवार की बदनामी होगी।

अनियंत्रित होकर पिकअप पलटी, बालिका की मौत, 11 जने घायल

परबतसर, (निसं)। अनियंत्रित होकर पिकअप के पलटी खाने से एक बालिका की मौत हो गई, जबकि 11 लोग घायल हो गए। पुलिस थाना परबतसर के ग्राम बिदियाद के समीप एक पिकअप वाहन अनियन्त्रित होकर अल सुबह पलट गई। इस दौरान पिकअप में सवार 11 जने घायल हो गए। जिन्हें परबतसर चिकित्सालय लाया गया, जहां से प्राथमिक उपचार के बाद तीन को अजमेर रेफर कर दिया गया। जहां उपचार के दौरान एक बालिका की मौत हो गई।

- प्राथमिक उपचार के बाद तीन घायलों को अजमेर रेफर किया गया
- पिकअप में सवार सभी लोग हबचर, डेगाना से किनसरिया आ रहे थे

प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम बिदियाद के समीप एक बेकाबू पिकअप पलट गई। हादसों में रतना पुत्री प्रभूराम, योगिता पुत्री मंगाराम, राजू पुत्र प्रभुराम, पपूड़ी पत्नी श्रवन राम, सुनीता पत्नी मंगाराम, नानूराम पुत्र सुखाराम, अनुष्का पुत्री मूलचंद, सुलतान पुत्र श्रवनराम, पपुडी पत्नी सुलतानराम, चीकू पुत्री कैलाश, विकास पुत्र सोहनलाल सभी निवासीगण हबचर (डेगाना) घायल हो गए। इनमें से गंभीर घायल हुए योगिता, अनुष्का और रतना को प्राथमिक उपचार के बाद अजमेर के लिए रेफर कर दिया गया, जहां पर इलाज के दौरान 13 वर्षीय बालिका रतना की मौत हो गई। जानकारी मिली है कि दुर्घटनाग्रस्त पिकअप में सवार सभी लोग हबचर, डेगाना से किनसरिया आ रहे थे।

नीट परीक्षा में डमी कैंडिडेट बैठाने के मामले में चार आरोपी गिरफ्तार

मुख्य अभ्यर्थी सूरज गुर्जर के स्थान पर परीक्षा देते हुये पाये जाने पर कार्रवाई की

भरतपुर, (निसं)। भरतपुर में मथुरा गेट थाना पुलिस ने नीट परीक्षा में डमी कैंडिडेट के पहुंचने के मामले में पुलिस ने चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। वहीं फिलहाल दो को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। इस मामले को लेकर एसपी मृदुल कच्छावा ने प्रेस वार्ता कर बताया कि पांच मई को नीट परीक्षा के दौरान मुख्य अभ्यर्थी सूरज गुर्जर के स्थान पर परीक्षा देते हुये पाये जाने पर आरोपी अभिषेक गुप्ता निवासी सपोटरा एवं इसके सहयोगी सूरज गुर्जर निवासी भण्डाना, राहुल गुर्जर पुत्र अमरसिंह निवासी भण्डाना व डॉ. रविकान्त पुत्र रामखिलाड़ी निवासी छारेड़ा को गिरफ्तार किया गया है।

भरतपुर में पुलिस ने नीट परीक्षा में डमी कैंडिडेट के मामले में चार आरोपियों को गिरफ्तार किया।

उन्होंने बताया कि रविवार को मास्टर आदित्येन्द्र राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के दिनेश सिंह प्राचार्य ने इस आशय की शिकायत पेश की कि एनटीए द्वारा आयोजित नीट परीक्षा मे परीक्षा के दौरान एनटीए से परीक्षार्थी सूरज कुमार गुर्जर के सम्बन्ध बायोमेट्रिक उपस्थिति दर्ज करने वाली एजेंसी की कर्मचारी काजल का दूरभाष पर संदेश आया कि इस छात्र के स्थान पर कोई डमी कैंडिडेट परीक्षा में उपस्थित हुआ है। जिसके बाद परीक्षार्थी को जांच के लिए नियंत्रक कक्ष में लाया गया तथा एजेंसी के द्वारा वीडियो काल पर आधार बायोमैट्रिक सत्यापन कराने की प्रक्रिया पूर्ण करायी गयी, जिसमें अभ्यर्थी का बायोमैट्रिक मिसमैच मिला। जिससे नाम पता पूछा तो डमी कैंडिडेट ने अपना नाम अभिषेक गुप्ता निवासी सपोटरा मोड़ सपोटरा थाना सपोटरा जिला करौली बताया। जिसने सूरज गुर्जर निवासी भंडाना के स्थान पर परीक्षा देना बताया।

इस सम्बन्ध में थाना मथुरागेट पर मामला दर्ज कर अनुसंधान किया गया। अनुसंधान के दौरान फर्जी परीक्षार्थी अभिषेक को गिरफ्तार किया गया। जिससे गहनतापूर्वक पूछताछ की जा रही है। वहीं पूछताछ में पता चला कि अभिषेक गुप्ता वर्तमान में जवाहर लाल नेहरू मेडिकल कॉलेज अजमेर में तृतीय वर्ष एमबीबीएस का छात्र है। यह अपने बैचमेट डॉ. रविकान्त के कहने पर पैसे लेकर सूरज गुर्जर निवासी भण्डाना जिला दौसा के स्थान पर नीट परीक्षा में मास्टर आदित्येन्द्र स्कूल में डमी कैण्डिडेट बनकर बैठा। इसी प्रकार मुख्य परीक्षार्थी सूरज अपने भाई राहुल के कहने पर नीट में फार्म भरा एवं उस परीक्षा में अपने स्थान पर डॉक्टर अभिषेक को डमी कैण्डिडेट बनाकर बिठाया। परीक्षा के वक्त सूरज अपने साथियों के साथ परीक्षा केन्द्र के बाहर गाड़ी में बैठा था। इसी प्रकार राहुल गुर्जर ने अपने भाई सूरज को नीट परीक्षा मे पास करवाने के एवज में डाक्टर रविकान्त से कुल 10 लाख रूपये देने की बात की एवं एडवांस में 1 लाख रूपये टुकड़ों में पहले ही दे दिये।

इसी प्रकार डॉ. अमित जाट पुत्र रामनिवास निवासी जिन्त्रावालों की ढाणी आरयूएचएस कॉलेज जयपुर में एमबीबीएस तृतीय वर्ष का छात्र है तथा डॉक्टर रविकान्त का मित्र है एवं परीक्षा के दौरान पुलिस ने परीक्षा केन्द्र के बाहर से डिटेन किया है। पूछताछ एवं अनुसंधान जारी है।

डॉ. सुधीर भंडारी को आर.यू.एच.एस. कुलपति के पद से हटाने की तैयारी?

सूत्रों के अनुसार सोटो चेयरमैन डॉ. सुधीर भंडारी, एस.एम.एस. मेडिकल कॉलेज के प्रिंसीपल डॉ. राजीव बगरहट्टा व अस्पताल अधीक्षक डॉ. अचल शर्मा ने इस्तीफा दिया

- हालांकि इस संबंध में चिकित्सा विभाग की ओर से अधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है।
- अब राज्य सरकार राज्यपाल कलराज मिश्र को डॉ.भंडारी के संबंध में रिपोर्ट भेज सकती है। गौरतलब है कि वाइस चांसलर को पद से हटाने का अधिकार राज्यपाल के पास है।

जयपुर। सवाई मानसिंह अस्पताल में ऑर्गन ट्रांसप्लांट के लिए फर्जी एनओसी जारी किए जाने के मामले में चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर के सख्त रुख के बाद सोमवार को एसएमएस मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. राजीव बगरहट्टा व अस्पताल अधीक्षक डॉ. अचल शर्मा और स्टेट ऑर्गन एंड टिश्यू ट्रांसप्लांट ऑर्गेनाइजेशन (सोटो) के चेयरमैन डॉ. सुधीर भंडारी ने इस्तीफा दे दिया है। वहीं राजस्थान स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुधीर भंडारी को पद से हटाने की तैयारी की जा रही है। तीन डॉक्टरों के इस्तीफे मंजूर हो गए। हालांकि इस संबंध में चिकित्सा विभाग की ओर से अधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है।

गौरतलब है कि वर्ष 2021 के बाद ऑर्गन ट्रांसप्लांट अप्रूवल कमेटी की बैठक नहीं किए जाने को चिकित्सा मंत्री ने गंभीरता से लिया था और पहले ही सख्ती के संकेत दिए थे। इसके बाद उन्होंने तीनों चिकित्सकों से इस्तीफा मांगा था जिसमें से दो ने इस्तीफा दे दिया है।

वहीं इस मामले में एमएमएस अस्पताल अधीक्षक डॉ. अचल शर्मा ने कहा कि उन्होंने एक मामले में व्यक्तिगत कारणों से दो माह पहले ही इस्तीफा दे दिया था। अभी कोई इस्तीफा नहीं दिया है लेकिन सरकार जिस बात के लिए कह रही है उसके लिए हमें भी मंजूर होना चाहिए। शर्मा ने कहा कि जैसा सरकार चाहेगी वैसा ही होगा। फिलहाल उनके पास इस्तीफा मंजूर करने के संबंध में कोई आदेश नहीं आया है।

सूत्रों की मानें तो आरयूएचएस के वीसी की ओर से इस्तीफा नहीं देने पर उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जा सकती है। स्टेट ऑर्गन एंड टिश्यू ट्रांसप्लांट ऑर्गेनाइजेशन (सोटो) के चेयरमैन पद से डॉ. भंडारी ने इस्तीफा दे दिया है। जिसे सरकार ने मंजूर कर लिया है। अब राज्य सरकार राज्यपाल कलराज मिश्र को इस संबंध में रिपोर्ट भेज सकती है, ताकि इसके आधार पर उन्हें आरयूएचएस के वाइस चांसलर के पद से हटाया जा सके। भंडारी की नियुक्ति तत्कालीन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के शासनकाल में हुई थी। इससे पहले भंडारी एसएमएस मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल भी रह चुके हैं।

वहीं बताया जा रहा है कि एमएमएस मेडिकल कॉलेज प्राचार्य डॉ. राजीव बगरहट्टा ने भी सोमवार को इस्तीफा दे दिया है। इस्तीफे के बाद डॉ. बगरहट्टा ने प्राचार्य पद की सुविधाएं लेना बंद कर दिया है। वे आज सरकारी वाहन की बजाय निजी वाहन से अस्पताल आए। वहीं पूर्व निर्धारित प्रस्तावित बैठकों में भी शामिल नहीं हुए। हालांकि इस संबंध में चिकित्सा विभाग की ओर से देर रात तक कोई अधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है।

बता दें कि राज्य में फर्जी एनओसी से ऑर्गन ट्रांसप्लांट का यह मामला प्रदेशभर में छाया हुआ है। अप्रैल में एसीबी ने रिश्वत लेकर ऑर्गन ट्रांसप्लांट की एनओसी देने के मामले में एसएमएस हॉस्पिटल के सहायक प्रशासनिक अधिकारी के अलावा प्राइवेट हॉस्पिटल फोर्टिस और ईएचसीसी के एक-एक अधिकारी को पकड़ा था। इसके बाद एसएमएस अस्पताल प्रशासन ने सहायक प्रशासनिक अधिकारी गौरव सिंह को सस्पेंड कर दिया था। वहीं मेडिकल हेल्थ डिपार्टमेंट ने इस मामले में ईएचसीसी, फोर्टिस एस्कोर्ट और मणिपाल हॉस्पिटल के ऑर्गन ट्रांसप्लांट करने के लाइसेंस को रद्द कर दिया। इस मामले में पुलिस प्राथमिकी दर्ज हो चुकी है और पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

जी.आई.टी.बी. से प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा : दिया कुमारी

उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने सोमवार को नोवोटेल कन्वेंशन सेंटर में ग्रेट इंडियन ट्रैवल बाजार में एग्जीबिशन का अवलोकन किया।

जयपुर। उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने आज नोवोटेल कन्वेंशन सेंटर में ग्रेट इंडियन ट्रैवल बाजार के 13वें संस्करण का दौरा किया। इस दौरान, उन्होंने एग्जीबिशन का अवलोकन किया और इनबाउंड टूर ऑपरेटर्स और पर्यटन व्यवसायियों के बीच चल रही बी2बी मीटिंग्स का अपडेट प्राप्त किया। उन्होंने इस मेगा इनबाउंड टूरिज्म मार्ट में निरंतर वृद्धि की सराहना करते हुए नए वित्तीय वर्ष के पहले प्रमुख पर्यटन कार्यक्रम के रूप में इसके महत्व पर प्रकाश डाला, जो पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए तैयार है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने पर्यटकों की बढ़ती संख्या के अनुरूप बुनियादी ढांचे के विकास की आवश्यकता को रेखांकित किया और पर्यटन को मजबूत करने के लिए सरकार की भागीदारी और पर्यटन व्यवसायियों से सहयोग का आग्रह किया।

इस अवसर पर प्रमुख शासन सचिव, पर्यटन विभाग, गायत्री राठौड़, निदेशक, पर्यटन विभाग, रश्मि शर्मा, फिक्की टूरिज्म एंड कल्चरल कमेटी, चेयरमैन, दीपक देवा, फिक्की की पूर्व प्रेसिडेंट और ललित सूरी हॉस्पिटेलिटी ग्रुप की सीएमडी, डॉ. ज्योत्सना सूरी और एफएचटीआर व एचआरएआर, अध्यक्ष, कुलदीप सिंह चंदेला उपस्थित रहे।

गौरतलब है कि इस अंतर्राष्ट्रीय मार्ट का आयोजन पर्यटन विभाग, राजस्थान सरकार, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार और फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की) द्वारा संयुक्त रूप से किया जा रहा है। इस आयोजन को होटल एंड रेस्टोरेंट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (एचआरएआर), इंडियन हेरिटेज होटल्स एसोसिएशन (आईएचएच.) और राजस्थान एसोसिएशन ऑफ टूर ऑपरेटर्स (राटो) का भी सहयोग प्राप्त है।

दिया कुमारी अब हिमाचल प्रदेश में करेंगी प्रचार

जयपुर। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी मंगलवार को हिमाचल प्रदेश के सिरमौर में भारतीय जनता पार्टी के लिए प्रचार करेंगी। दिया कुमारी का मंगलवार को जयपुर से शिमला लोकसभा क्षेत्र के नाहन पहुँच कर भाजपा उम्मीदवार सुरेश कुमार कश्यप के पक्ष में जनता से भारी मतदान की अपील करेंगी। इससे पहले उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने रविवार को पूर्वी दिल्ली लोकसभा क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी हर्ष मल्होत्रा के पक्ष में एक नारी सशक्तिकरण सम्मेलन को संबोधित किया। उन्होंने भारी संख्या में मौजूद महिलाओं से आवाह्न करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए नारी शक्ति वंदन अधिनियम के माध्यम से 33 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित किया है।

5100 दीपकों से ताड़केश्वरजी मंदिर में हुई महाआरती

सर्व ब्राह्मण महासभा महिला प्रकोष्ठ की ओर से मनाये जा रहे भगवान परशुराम जन्मोत्सव के अन्तर्गत सोमवार को चौड़ा रास्ता स्थित भगवान ताड़केश्वर मंदिर में 5100 दीपकों से महाआरती की गई।

जयपुर। सर्व ब्राह्मण महासभा महिला प्रकोष्ठ द्वारा मनाये जा रहे भगवान परशुराम जन्मोत्सव के अन्तर्गत आज चौड़ा रास्ता स्थित भगवान ताड़केश्वर मंदिर में 5100 दीपकों से महाआरती का आयोजन किया गया।

सर्व ब्राह्मण महासभा महिला प्रकोष्ठ की राष्ट्रीय महामंत्री सविता शर्मा ने बताया कि महासभा के पदाधिकारी एवं बड़ी संख्या में विप्र जनों ने महाआरती में भाग लेकर कार्यक्रम की शोभा को और अधिक बढा दिया। वहां उपस्थित सभी पदाधिकारी एवं विप्रजन ने भगवान परशुराम एवं ताड़केश्वर नाथ के जयकारे लगाकर महाआरती के महोत्सव को और अधिक मंगलमय बना दिया। मंदिर में शंख, घंटी, घड़ियाल बज रहे थे एवं पंडित सस्वर पाठ कर रहे थे।

इस अवसर पर नीलम मिश्रा ने कहा कि भगवान शिव और भगवान परशुराम का शास्त्रों में अलग-अलग चित्रण मिलता है जो कि प्रेरणास्पद है और भगवान परशुराम जन्मोत्सव में आयोजित सभी कार्यक्रमों का उद्देश्य समाज का हित एवं कल्याण स्वरूप कदम उठाना है। इस अवसर पर भगवान ताड़केश्वर जी का विशेष श्रृंगार भी किया गया और बाबा के जयकारे लगाये।

पेपर लीक मामले में हाईकोर्ट के एक जज ने किया सुनवाई से इनकार

- एसआई भर्ती-2021 पेपर लीक मामले में 11 ट्रेनी एसआई सहित कुल 12 आरोपियों को रिहा करने से जुड़ा है मामला

जयपुर, (का.सं.)। एसआई भर्ती-2021 पेपर लीक मामले में 11 ट्रेनी एसआई सहित कुल 12 आरोपियों को रिहा करने से जुड़े मामले में हाईकोर्ट में पेश राज्य सरकार की याचिका पर जस्टिस अनिल उपमन में सुनवाई से इनकार करते हुए खुद को इससे अलग कर लिया है। ऐसे में अब मामले में जस्टिस सुदेश बंसल मंगलवार को सुनवाई करेंगे।

पिछली सुनवाई पर अदालत ने ट्रायल कोर्ट से मामले का मूल रिकार्ड मंगाया था। इसके साथ ही मामले को अंतिम बहस के लिए रखा था। गत 12 मार्च को सीएमएम कोर्ट द्वितीय ने इन आरोपियों को अवैध रूप से हिरासत में रखना बताकर रिहा करने के आदेश दिए थे। इस आदेश के खिलाफ राज्य सरकार की ओर से पेश याचिका में सुनवाई करते हुए हाईकोर्ट ने 15 मार्च को सीएमएम कोर्ट के आदेश पर रोक लगा दी थी। हाईकोर्ट के इस आदेश को आरोपियों की ओर से सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई, लेकिन वहां आरोपियों को राहत नहीं मिली और सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट को 7 मई तक सुनवाई पूरी करने को कहा था। गौरतलब है कि सीएमएम कोर्ट ने आरोपियों का प्रार्थना पत्र मंजूर करते हुए माना था कि एसओजी ने आरोपियों को पकडने के बाद 24 घंटे में उनकी पेशी नहीं की है और उनकी पुलिस हिरासत अवैध थी। इसके साथ ही अदालत ने गृह सचिव व डीजीपी को दोषी पुलिस अफसरों के खिलाफ कार्रवाई के लिए कहा था।

मुख्य सचिव ने ग्रामीण विकास कार्यों की जानकारी ली

जयपुर, (का.सं.)। मुख्य सचिव सुधांश पंत की अध्यक्षता में सोमवार को प्रदेश में ग्रामीण विकास कार्यों की प्रगति को लेकर समीक्षा बैठक का आयोजन हुआ। बैठक के दौरान प्रदेश में ग्रामीण विकास की राज्य सरकार द्वारा संचालित तथा केंद्र प्रवर्तित योजनाओं की क्रियान्विति की समीक्षा की गई।

पंत ने विभाग के अधिकारियों के साथ प्रधान मंत्री ग्रामीण सड़क योजना, पीएम जन मन, सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना, राजीविका, राजस्थान महिला निधि, मनरेगा और सामाजिक अंकेक्षण जैसी विभिन्न योजनाओं की विकास रिपोर्ट पर विस्तार से जानकारी ली। ग्रामीण विकास में प्रगति लाने तथा पारदर्शिता के लिए नरेगा सॉफ्ट में सिस्टम का प्रावधान लाने तथा पीएमएवाई-जी से संबन्धित ऐसे कार्य जो पूर्ण है।

आई.पी.एस. सुष्मित बिश्वास की बेटी ने फहराया यू.एस.ए. में परचम

आशिरा को अमरीका में प्रतिष्ठित द जी. कीथ फंस्टन पुरस्कार इन इकोनॉमिक्स से सम्मानित किया गया।

- अमरीका में प्रतिष्ठित द जी. कीथ फंस्टन पुरस्कार इन इकोनॉमिक्स से सम्मानित किया गया
- अर्थशास्त्र में उत्कृष्ट शैक्षिणक उपलब्धि और कॉलेज की सेवा के लिए मिला पुरस्कार

जयपुर। राजस्थान मानव अधिकार आयोग में अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक सुष्मित बिश्वास की बेटी आशिरा को अमरीका में प्रतिष्ठित द जी. कीथ फंस्टन पुरस्कार इन इकोनॉमिक्स से सम्मानित किया गया है।

आशिरा यूएसए के ट्रिनिटी कॉलेज में क्वांटिटेटिव इकोनॉमिक्स में बैचलर ऑफ साइंस के अंतिम वर्ष की छात्रा है। आशिरा को ट्रिनिटी कॉलेज यूएसए का एकेडमिक टॉपर घोषित किया गया है। यह भारतीय विश्वविद्यालय में स्वर्ण पदक के बराबर है। अर्थशास्त्र में उत्कृष्ट शैक्षिणक उपलब्धि और कॉलेज की सेवा के लिए आशिरा को द जी. कीथ फंस्टन पुरस्कार से तीन मई को कॉलेज के वार्षिक सम्मान दिवस समारोह में सम्मानित किया गया था। समारोह में आशिरा को नगद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इनकी आगे ग्लोबल फाइनेंस सेक्टर में अपना करियर बनाने की योजना है।

इससे पहले भी आशिरा ने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान एक विश्व स्तर की प्रतियोगिता में दूसरा स्थान हासिल किया था। जिसके लिए नोबेल समिति ने साल 2022 में नार्वे की राजधानी ओस्लो में आयोजित नोबेल शांति पुरस्कार समारोह में इन्हें औपचारिक रूप से आमंत्रित किया था।

केन्द्र सरकार और एसएससी पर 1.25 लाख का हर्जाना

- 11 साल से याचिका में जवाब पेश नहीं करने का मामला

जयपुर, (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने 11 साल से अधिक का समय बीतने के बाद भी कांस्टेबल भर्ती से जुड़े मामले में जवाब पेश नहीं करने पर केन्द्र सरकार और कर्मचारी चयन आयोग पर 1.25 लाख रुपए का हर्जाना लगाया है। अदालत ने हर्जाना राशि जमा होने की सूरत में इन्हें जवाब पेश करने के लिए दो सप्ताह का समय दिया है। जस्टिस गणेश राम मीणा की एकलपीठ ने यह आदेश वीरेन्द्र सिंह की ओर से दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

अदालत ने कहा कि यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि इतना समय बीतने के बाद भी आज तक जवाब पेश नहीं किया गया है और आज भी जवाब देने के लिए समय मांगा जा रहा है। अदालत ने कहा कि एसएससी के इस सुस्त रवैए के लिए नरमी का रुख नहीं अपनाया जा सकता, लेकिन न्यायहित में हर्जाना जमा कराने की शर्त पर जवाब के लिए समय दिया जा रहा है। अदालत ने कहा कि एक बेरोजगार व्यक्ति जिसने लिखित परीक्षा और दक्षता परीक्षा पास कर ली, वह पिछले 12 साल से नियुक्ति का इंतजार सिर्फ इसलिए कर रहा है कि कोर्ट में लंबित मामले में जवाब पेश नहीं किया गया।

मामले के अनुसार वीरेन्द्र सिंह ने वर्ष 2011 में हाईकोर्ट में याचिका दायर कर कहा था कि उसने एसएससी की ओर से ओर से आयोजित कांस्टेबल जीडी की लिखित और दक्षता परीक्षा पास की है, लेकिन आयोग उसे मेडिकल के लिए नहीं बुला रहा है। मामले की प्रारंभिक सुनवाई करते हुए अदालत ने केन्द्र सरकार, एसएससी और बीएसएफ को नोटिस जारी कर नियुक्तियों को याचिका के अधीन रखा था। पूर्व में सुनवाई के दौरान बीएसएफ की ओर से जवाब पेश कर कहा गया कि उनकी ओर से दक्षता परीक्षा आयोजित कर एसएससी को रिपोर्ट भेज दी थी।

घर में घुसकर सिलेंडर चोरी

जयपुर। राजधानी के महेश नगर इलाके में अज्ञात बदमाश महज एक मिनट में सीढ़ियों के नीचे रखा सिलेंडर चोरी कर फरार हो गया। पीड़ित को मामले की जानकारी कुछ देर बाद चली। जिसके बाद पीड़ित ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर चोरी का मामला दर्ज कराया। पुलिस ने फुटेज के आधार पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पुलिस के बताए अनुसार नरेंद्र नगर स्वेज फॉर्म निवासी रामकेश मीना 63 शुक्रवार को अपने काम पर गया हुआ था और परिवार के सभी सदस्य घर के अंदर थे। करीब पौने 11 बजे एक बदमाश घर में घुसा और सीढ़ियों के नीचे रखा गैस सिलेंडर चोरी कर फरार हो गया।

जयपुर बम ब्लास्ट मामले में नाबालिग आरोपी को फिलहाल जमानत नहीं

- जज की नियुक्ति का हाईकोर्ट से आग्रह करेगी राज्य सरकार

जयपुर, (का.सं.)। शहर में 13 मई, 2008 को हुए सिलसिलेवार बम धमाकों के दौरान चांदपोल हनुमान मंदिर के बाहर मिले जिंदा बम मामले में नाबालिग आरोपी को फिलहाल सुप्रीम कोर्ट से जमानत नहीं मिल पाई है। सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई एक सप्ताह टालते हुए इस बिन्दु पर बहस के लिए रखा है कि आरोपी को जमानत दी जाए या ट्रायल पूरी की जाए।

सुनवाई के दौरान राज्य सरकार की ओर से अतिरिक्त महाधिवक्ता शिवमंगल शर्मा ने कहा कि आरोपी बमों को लगाने वाला मुख्य व्यक्ति था और वह भारतीय मुजाहिदीन नामक प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन का सक्रिय सदस्य रहा है। आरोपी को छोड़ना ना केवल समाज के लिए गंभीर खतरा पैदा करेगा, जिससे आतंकवादी गतिविधियों में उसकी वापसी संभव हो सकती है और इससे समाज में भी गलत संदेश जाएगा। इसलिए मामले की गंभीरता को देखते हुए आरोपी को जमानत नहीं दी जा सकती। वहीं किशोर न्याय बोर्ड में जज की जल्द नियुक्ति के लिए राज्य सरकार, हाईकोर्ट प्रशासन से आग्रह करेगी। जिस पर अदालत ने आरोपी की जमानत अर्जी पर सुनवाई एक सप्ताह टाल दी। गौरतलब है कि गत 9 फरवरी को हुई सुनवाई पर अदालत ने राज्य सरकार को मामले की ट्रायल 15 मई तक पूरी करने का निर्देश दिया था।

ई-उपकरण सॉफ्टवेयर के मॉड्यूल्स का ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

जयपुर। प्रदेश के उपस्वास्थ्य केन्द्रों एवं आयुष्मान आरोग्य मंदिर पर कार्यरत सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारियों एवं महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को ई-उपकरण सॉफ्टवेयर के विभिन्न मॉड्यूल्स का ऑनलाइन प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम 6 मई से 20 मई तक ऑनलाइन संचालित किया जा रहा है। राजस्थान मेडिकल सर्विसेज कॉरपोरेशन की प्रबन्ध निदेशक नेहा गिरि ने बताया कि निर्धारित प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत सोमवार को अजमेर संभाग के सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी व एएनएम ई-उपकरण सॉफ्टवेयर का प्रशिक्षण दिया गया।

इस प्रशिक्षण में अजमेर संभाग के लगभग 250 प्रतिभागियों ने भाग लिया। उन्होंने बताया कि प्रशिक्षण में ई-उपकरण सॉफ्टवेयर, रिपेयर-मेटीनेंस एवं क्रय आदेश आदि के बारे में आईटी टीम द्वारा विस्तार से जानकारी दी गई। नेहा गिरि ने बताया कि ई-उपकरण से जुड़े सम्बन्धित अधिकारी व कार्मिकों को आरएमएससीएल द्वारा भिजवाये जाने वाले उपकरणों की प्राप्ति संस्थान द्वारा तत्काल समय पर ही देने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि उपकरणों का इंस्टॉलेशन स्वास्थ्यकर्मी अपनी उपस्थिति में ही करवाएं। उन्होंने कहा कि सभी संस्थानों का कर्तव्य है कि अपनी कागजी कार्यवाही कम किए जाने के लिए ई-उपकरण पर ऑनलाइन प्रविष्टि किया जाना आवश्यक है।

जेके लोन अस्पताल में प्लाज्मा चोरी प्रकरण में चार सदस्यीय जांच कमेटी गठित

- कमेटी तीन दिन में जांच कर रिपोर्ट देगी
- ब्लड बैंक इंचार्ज सत्येंद्र सिंह को जेके लोन से हटाकर सवाई मानसिंह हॉस्पिटल स्थित ब्लड बैंक में लगाया गया है।
- मामले में चिकित्सा विभाग ने एफ.आई.आर. दर्ज करवाने के निर्देश दिए

जयपुर। राजधानी के जेके लोन अस्पताल से प्लाज्मा चोरी के मामले में चिकित्सा विभाग ने कार्रवाई करते हुए चार सदस्यीय जांच कमेटी गठित की है। यह कमेटी अपनी रिपोर्ट तीन दिन में विभाग को सौंपेगी। अतिरिक्त मुख्य सचिव शुभ्रा सिंह के निर्देश पर कमेटी में अतिरिक्त अतिरिक्त निदेशक अस्पताल प्रशासन डॉ. सुशील परमार, उप वित्तीय सलाहाकार सुरेश चंद जैन, एड्स कंट्रोल सोसायटी के अतिरिक्त निदेशक डॉ. केसरी सिंह और औषधि नियंत्रक प्रथम अजय फाटक को शामिल किया है। वहीं मामले में ब्लड बैंक इंचार्ज सत्येंद्र सिंह को जेके लोन से हटाकर सवाई मानसिंह हॉस्पिटल स्थित ब्लड बैंक में लगाया गया है।

ये कमेटी जांच इस पूरे प्रकरण की जांच के लिए हॉस्पिटल के सीसीटीवी फुटेज देखेगी। इसके अलावा किस-किस स्टाफ की कब-कब ड्यूटी ब्लड बैंक में लगी है, इसको लेकर भी पूरा रिकॉर्ड देखकर उसकी जांच करेगी। साथ ही स्टाफ के बयान और पूछताछ के आधार पर अपनी रिपोर्ट पेश करेगी।

अतिरिक्त मुख्य सचिव ने कहा कि जेके लोन अस्पताल में सामने आए प्रकरण की गहन जांच-पड़ताल की जाएगी। जांच में दोषी पाए जाने वाले कार्मिकों पर सख्त कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। भविष्य में ब्लड बैंकों में अनियमितताएं नहीं हों इसके लिए एक मजबूत ब्लड ट्रांसफ्यूजन सिस्टम तैयार किया जा रहा है। इससे पारदर्शिता बढ़ने के साथ ही मरीजों को सुगमतापूर्वक रक्त एवं रक्त अवयव उपलब्ध हो सकेंगे।

सिंह ने बताया कि राज्य के समस्त ब्लड बैंकों के गुणवत्ता सुधार एवं निर्धारित मानकों के अनुरूप संचालन के लिए एक गाइडलाइन तैयार करने के निर्देश दिए गए थे। साथ ही, सभी ब्लड बैंकों को एक सॉफ्टवेयर से जोड़ने के भी निर्देश दिए थे ताकि इनका रियल टाइम ऑनलाइन असेसमेंट हो सके और आमजन को रक्त उपलब्धता की जानकारी पारदर्शिता के साथ ऑनलाइन ही मिल सके।

इधर, प्लाज्मा चोरी मामले में एक प्राइवेट हॉस्पिटल की संदिग्ध भूमिका भी सामने आ रही है। सूत्रों का कहना है कि प्लाज्मा चोरी करने वाला स्टाफ इसी हॉस्पिटल के किसी व्यक्ति को ये प्लाज्मा बेचता था। इस प्लाज्मा का उपयोग फार्मा कंपनियां प्रोटीन समेत अन्य सप्लीमेंट्स बनाने में उपयोग लेती है।

गौरतलब है कि जेके लोन हॉस्पिटल में ब्लड बैंक के कर्मचारियों ने शनिवार को लैब टेक्नीशियन कृष्णकांत कटारिया को प्लाज्मा चोरी के मामले में पकड़ा था। इस मामले का रविवार को जब खुलासा हुआ तो मेडिकल हेल्थ डिपार्टमेंट ने इस मामले में एफआईआर दर्ज करवाने के निर्देश दिए। इसके साथ ही इस मामले की जांच शुरू करवा दी। जांच प्रभावित न हो इसे देखते हुए डॉ. सत्येंद्र सिंह को जेके लोन हॉस्पिटल से हटाकर एसएमएस हॉस्पिटल के ब्लड बैंक में लगाया गया। वहीं इस मामले में प्रथम दृष्टया आरोपित लैब टेक्नीशियन कृष्ण कांत कटारिया को पद से निलंबित कर दिया है।

मालूम हो कि प्लाज्मा को फार्मा कंपनियां मेडिकल रिलीफ सोसायटी के माध्यम से ही खरीदती है। इस प्लाज्मा से दवाइयां, प्रोटीन समेत अन्य सप्लीमेंट्स बनाए जाते है। लैब टेक्नीशियन कृष्णकांत कटारिया इस प्लाज्मा को चोरी करने के बाद एक निजी हॉस्पिटल को देता था। जेएलएन मार्ग स्थित इस निजी हॉस्पिटल के कुछ लोग इस भूमिका में शामिल है।

आठ महिलाओं की चैन तोड़ी

जयपुर। सांगानेर इलाके में कुछ महिलाओं को भागवत कथा में जाना भारी पड़ गया। अज्ञात महिला चेन स्नेचरों ने प्रसाद वितरण की लाईन में लग कर आठ महिलाओं के गले से लगभग 114 ग्राम सोना लूट लिया और मौके से फरार हो गई। वारदात की जानकारी मिलने के बाद कथा स्थल पर हंगामा मच गया।

मेक इन इंडिया सोलर पैनल्स पर जोर

जयपुर, (का.सं.)। क्लीन व ग्रीन एनर्जी को बढ़ावा देने में प्रतिष्ठित भारत की प्रतिष्ठित सोलर पैनल मैन्युफैक्चरिंग कंपनी इन्सोलेशन एनर्जी लिमिटेड (आईएनए सोलर) ने 4 मई को जयपुर के क्लब में ऊर्जा 3.0 चैनल पार्टनर्स मीट का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कंपनी के चेयरमैन मनीष गुप्ता, मैनेजिंग डायरेक्टर विकास जैन, नॉन एग्जीक्यूटिव इंडिपेंडेंट डायरेक्टर अनिल कुमार गुप्ता , एवं इन्सोलेशन एनर्जी के 400 से ज्यादा डिस्ट्रीब्यूटर्स एवं डीलर्स शामिल हुये। चेयरमैन मनीष गुप्ता ने इन्सोलेशन परिवार की तरक्की में भागीदारी के लिये सभी लोगो का आभार व्यक्त किया और कंपनी के आगामी वर्षो के टारगेट्स एवं बिज़नेस मॉडल के बारे में चर्चा की। साथ ही मेक इन इंडिया सोलर पेनल्स पर भी जोर दिया ताकि भारत को इस सेक्टर में आत्मनिर्भर बनाया जा सके एवं भारत के हर घर को सोलर ऊर्जा से जोड़कर एक नयी सोलर क्रांति देश में लायी जाये। इस मीट में सोलर ने अपने टॉप 15 डीलर्स को सम्मानित भी किया साथ ही अपने सभी विधाओं के गूगल फ़ॉर्म लिंक उपलब्ध हैं। कैंप में प्रवेश पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर दिया जाएगा।

16 कला विधाएं सीखेंगे जूनियर्स

जयपुर, (का.सं.)। हर वर्ष की भांति जवाहर कला केन्द्र की ओर से 16 मई से 20 जून तक जूनियर समर प्रोग्राम (कैम्प) का आयोजन किया जा रहा है।

अलग-अलग आयु वर्ग के बच्चे इसमें हिस्सा लेकर अपनी रचनात्मकता को नया आयाम दे सकेंगे। कैम्प में विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न कलात्मक विधाओं का प्रशिक्षण दिया जाएगा। कैंप के लिए आवेदन पूर्णत: ऑनलाइन कर दिए गए हैं। केन्द्र की वेबसाइट और सोशल मीडिया अकाउंट पर सभी विधाओं के गूगल फ़ॉर्म लिंक उपलब्ध हैं। कैंप में प्रवेश पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर दिया जाएगा।

महात्मा गांधी स्कूल में प्रवेश शुरू

जयपुर, (का.सं.)। महात्मा गांधी अंग्रेजी विद्यालय सेक्टर पांच प्रताप नगर स्कूल में ऑनलाइन प्रवेश की प्रक्रिया शुरू हो गयी है। यह जानकारी देते हुए स्कूल की प्रिंसीपल सीमा शुक्ला ने बताया कि कक्षा नर्सरी से दसवीं तक के ऑनलाइल आवेदन 7 से 13 मई मतक किये जा सकेंगे।

नगर स्थापना दिवस पर क्लासिकल कैमरे और फोटोग्राफ्स की प्रदर्शनी शुरू

बीकानेर, (कासं)। बीकानेर नगर के 537वें स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में जिला प्रशासन तथा राव बीकाजी संस्थान की क्लासिकल कैमरे तथा ऐतिहासिक फोटो की प्रदर्शनी का शुभारंभ सोमवार को हुआ।

महारानी सुदर्शना कला दीर्घा में संभागीय आयुक्त वंदना सिंघवी और पुलिस महानिरीक्षक ओमप्रकाश ने फीता खोलकर इसका उद्घाटन दिया। इस अवसर पर उन्होंने कैमरों एवं फोटो के संकलन को ऐतिहासिक बताया और कहा कि ऐसी प्रदर्शनियों के माध्यम से विरासत से जुड़ी चीजों से युवा पीढ़ी को सीखने का अवसर मिलेगा। समय- समय पर ऐसे आयोजन होने चाहिए।

बीकानेर नगर स्थापना दिवस पर क्लासिकल कैमरे और फोटोग्राफ्स की प्रदर्शनी का उद्घाटन कर संभागीय आयुक्त वंदना सिंघवी व आई.जी. ओमप्रकाश ने अवलोकन किया।

- प्रदर्शनी में 100 साल पुराने कैमरे तथा 20 फोटोग्राफर्स के लगभग 150 फोटो लगाये गए हैं

उन्होंने कहा कि बीकानेर नगर आपसी सौहार्द और परंपराओं का निर्वहन करने वाला तथा इन्हें आगे बढ़ाने वाला जीवंत शहर है। पांच सौ छत्तीस वर्षों का इतिहास अपने अंदर समेटे यह शहर कला, संस्कृति और साहित्य की त्रिवेणी के रूप में जाना जाता है। इस दौरान राव बीकाजी संस्थान के अध्यक्ष डॉ. गिरिजाशंकर शर्मा, महामंत्री विद्यासागर आचार्य, सचिव नरेन्द्र सिंह ज्याणी, संयोजक अभिषेक आचार्य, वरिष्ठ फोटोग्राफर एम. दाऊद बीकानेरी, सीताराम मित्तल, रूपकुमार पुरोहित, कवि कथाकार राजेन्द्र जोशी, रामलाल सोलंकी, खेल लेखक आत्माराम भाटी, जितेन्द्र आचार्य और फारूख चौहान आदि मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन संजय पुरोहित ने किया। उन्होंने चार दिवसीय कार्यक्रमों की जानकारी दी।

इससे पूर्व उपस्थित अतिथियों ने प्रदर्शनी का शुभारंभ किया तथा इसमें लगाये गए चित्रों और कैमरों का अवलोकन किया। प्रदर्शनी के प्रभारी अजीज भुट्टा ने बताया कि प्रदर्शनी में 100 साल पुराने कैमरे तथा 20 फोटोग्राफर्स के लगभग 150 फोटो लगाये गए हैं। प्रदर्शनी 8 मई तक प्रात: 10 से रात्रि 8 बजे तक आमजन के अवलोकनार्थ खुली रहेगी।

प्रदर्शनी में भुट्टा के अलावा रूप कुमार पुरोहित, एम. दाऊद बीकानेरी, श्याम बिस्सा, शिशिर शर्मा, वाजिद अली, मनीष पारीक, नौशाद कादरी, चोरूलाल सुथार, मूलचंद दुगड़, मनोज पुरोहित, गौरव कुमार और बृजगोपाल बिस्सा, नरेंद्र सिंह भाटी डॉ फारूक चौहान, पूनम मारू, एजाज, यादवेंद्र बबलू व्यास सहित विभिन्न फोटोग्राफर के फोटो लगाये गए हैं।

प्रदर्शनी के लिए उस्ता आर्ट के कलाकार सैफ अली उस्ता द्वारा देशनोक की करणी माता मंदिर की तस्वीर सुनहरी कलम से विशेष रूप से स्थापना दिवस के लिए तैयार की है। प्रदर्शनी के दौरान इसे भी प्रदर्शित किया गया है। स्थापना दिवस कार्यक्रमों की श्रृंखला में मंगलवार को सांय 4.30 बजे 'बीकानेर का खेल परिदृश्य अतीत से वर्तमान तक' विषयक संगोष्ठी का आयोजन नरेन्द्र सिंह ऑडिटोरियम में की जायेगी। पूर्व महाराजा डॉ करणी सिंह के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में संगोष्ठी खेलों को समर्पित रहेगी।

बीकानेर स्थापना दिवस कार्यक्रमों के तहत संभागीय आयुक्त के निर्देशानुसार जिला प्रशासन, नगर निगम, नगर विकास न्यास और राव बीकाजी संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में बीकानेर के कलाकारों द्वारा मांडना सजाया जायेगा। कार्यक्रम संयोजक ज्योति स्वामी ने बताया कि कलेक्ट्रेट परिसर, महाराजा गंगासिंह सर्किल, सादुल सिंह सर्किल, राव बीकाजी प्रतिमा स्थल, सूरसागर के पास म्हारो बीकाणो सेल्फी प्वाइंट स्थल पर सुबह 6 से 10 बजे तक मांडने बनाए जायेंगे।

कथा में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाया

नोखा, (कासं)। लाखोटिया प्याऊ के पास राधा देवी लाहोटी के सौजन्य से आयोजित हो रही श्रीमद्भागवत कथा में राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भागवत आचार्य कन्हैयालाल पालीवाल प्रभु प्रेमी महाराज ने कहा कि मन का मंथन करो मन में छुपी हुई वासना बाहर निकलेगी तो प्रसन्नता व भक्ति रूपी अमृत से मनुष्य मात्र का कल्याण होगा।

अंबरीश चरित्र के माध्यम से एकादशी का महात्मय सुनाते हुए महाराज ने कहा कि पांच ज्ञानेन्द्रियां और पांच कर्मेन्द्रियां एवं एक मन इन 11 को भगवान में लगा देना ही सच्ची एकादशी है। प्रभु प्रेमी महाराज ने कहा कि भागवत में पहले श्रीराम का प्राकट्य होता है और इनके बाद श्रीकृष्ण का प्राकट्य होता है। इसका अर्थ ये है कि जीवन में पहले मर्यादा आये और फिर प्रेम प्रकट हो। मर्यादा युक्त प्रेम ही श्रेष्ठ होता है। भगवान का अवतार धर्म की संस्थापना के लिए होता हैं। भक्तों को आनंद व दुष्टों का संहार भगवान अवतार लेकर करते है।

कथा में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। नन्द घर आनंद भयो जय कन्हैया लाल की.. के उद्घोष से हजारों श्रोताओं से खचाखच भरा पंडाल गुंजायमान हो गया। महाराज ने पुष्प और खिलौनों सा उपहार श्रोताओं को दिया। कथा यजमान राधा देवी लाहोटी व लाहोटी परिवार ने व्यास पीठ का पूजन कर बाल कृष्ण से आशीर्वाद लिया। थालियां, ढ़ोल, नगाड़े बजाये गये पुष्पों की वर्षा की गई। सभी नाचने लगे।

सार-समाचार

गौरी को कमला रंगा सृजन सम्मान

शायर वली गौरी को कमला रंगा सृजन से वरिष्ठ साहित्यकार कमल रंगा ने सम्मानित किया।

बीकानेर, (कासं)। प्रज्ञालय संस्थान एवं श्रीमती कमला देवी लक्ष्मीनारायण रंगा ट्रस्ट द्वारा अपनी साहित्यिक एवं रचनात्मक गतिविधियों के तहत पूर्व की भांति वर्ष 2024 का श्रीमती कमला रंगा सृजन सम्मान उर्दू के वरिष्ठ शायर वली मोहम्मद गौरी को नालन्दा सृजन सदन में एक भव्य समारोह के तहत अर्पित किया गया। कमला रंगा सृजन सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि वरिष्ठ शायर एवं उर्दू भाषा के विद्वान जाकिर अदीब ने कहा कि प्रतिभाओं का सम्मान करना समाज का दायित्व है। वहीं सम्मानित होने वाली प्रतिभा पर यह दायित्व भी बनता है कि वह अपनी साहित्यिक और सृजनात्मक यात्रा को और ऊंचाईयों तक ले जाए। जाकिर अदीब ने आगे कहा कि शायर वली गौरी को शायरी विरासत में मिली है। जिसे वह समृद्ध कर रहे हैं। साथ ही उन्होंने सभी साहित्यकारों से यह बात साझा करते हुए कहा कि रचनाकार को अपना स्वयं आलोचक बन और रचना को स्तरीय बनाकर ही पुस्तक आकार में लाना चाहिए। समारोह की अध्यक्षता करते हुए भारत सरकार की संस्थान केन्द्रीय साहित्य अकादमी नई दिल्ली के मुख्य राष्ट्रीय पुरस्कार एवं अनुवाद पुरस्कार से पुस्कृत वरिष्ठ साहित्यकार कमल रंगा ने कहा कि शायर वली गौरी की शायरी के कई रंग हैं। उन्होंने युवा पीढी को भी संस्कारित करने में अपनी सेवाएं दी है। जो उल्लेखनीय है। रंगा ने आगे कहा कि उर्दू शायरी के साथ-साथ वे हिन्दी और राजस्थानी में भी समानान्तर सृजनरत रहने वाले मेरी नजर में कासिम बीकानेरी के बाद में दूसरे शायर है। शायर वली गौरी बतौर समाज सेवी भी अपनी भूमिका का निक्हन कर रहे है। समारोह में गिरिराज पारीक, शिव प्रसाद शर्मा, अब्दुल शकूर बीकाणवी, कासिम बीकानेरी, जुगल पुरोहित, भवानी सिंह, कृष्णचंद पुरोहित, अशोक शर्मा, आशीष रंगा, हरिनारायण आचार्य, नवनीत व्यास, घनश्याम ओझा, वासु सहित उपस्थित सहभागियों ने वली गौरी को माला अर्पित कर सम्मान किया।

युवक ने फांसी लगा जान दी

बीकानेर, (कासं)। कोटगेट पुलिस थाना क्षेत्र में एक युवक ने फांसी लगाकर अपनी ईहलीला समाप्त कर ली। फिलहाल आत्महत्या के कारणों का खुलासा नहीं हो पाया है। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक मृतक चौतीना कुआं क्षेत्र निवासी गौत सिंह पुत्र स्वतंत्र सिंह है। जिसने फांसी लगाकर अपनी जान दे दी। वहीं जान से मार देने की नियत से बस स्टैण्ड पर एक जने पर कैंची से वार करने का मामला बीकानेर के छतरगढ़ पुलिस थाना क्षेत्र में सामने आया है। इस आशय की रिपोर्ट छतरगढ़ वार्ड आठ निवासी नत्थूराम पुत्र पीरदान ने पुलिस थाने में दी है। रिपोर्ट के मुताबिक 5 मई को वह छतरगढ़ बस स्टैण्ड पर खड़ा हुआ था। आरोप है कि आरोपी लक्ष्मीनारायण ने उसको जान से मार देने की नियत से उस पर कैंची से कई वार किए जिससे वह घायल हो गया। पुलिस ने रिपोर्ट के आधार पर आरोपी के खिलाफ थाने में मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है।

मांगों को लेकर विरोध-प्रदर्शन

मांगों को लेकर ऑल इंडिया एस.सी.-एस.टी. रेलवे एम्प्लायज एसोसिएशन ने विरोध-प्रदर्शन किया।

बीकानेर, (कासं)। अनुसूचित जाति/जनजाति के कर्मचारियों को प्रताड़ित करने एवं रेल प्रशासन द्वारा रेलवे बोर्ड की नीतियों की पालना नहीं करने पर ऑल इंडिया एससी/एसटी रेलवे एम्पलाइज एसोसिएशन बीकानेर मंडल के आव्हान पर एक दिवसीय विशाल धरना प्रदर्शन का आयोजन सोमवार को डीआरएम कार्यालय के मुख्य द्वार पर किया गया। मंडल सचिव मोहनलाल बुनकर ने बताया कि रेल प्रशासन द्वारा जिन मुद्दों को लेकर धरना-प्रदर्शन किया गया था उन मुद्दों को सुलझाने का आश्वासन दिया गया है। कार्यक्रम में सभी 12 शाखाओं से पदाधिकारी उपस्थित हुए। एसोसिएशन द्वारा मंडल सचिव मोहनलाल बुनकर, मंडल अध्यक्ष अजय कुमार के नेतृत्व में विरोध प्रदर्शन किया गया। मंडल सचिव मोहनलाल बुनकर ने बताया कि जिन मांगों को लेकर धरना-प्रदर्शन किया गया। मांगों में एसएसई/सीएण्डडबल्यू श्रीगंगानगर कृष्णलाल, एसएसई/सीएण्डडबल्यू चूरु खिलाड़ी राम मीना, एसएसई/सीएण्डडबल्यू लालगढ़ रामसिंह मीना का स्थानांतरण रद्द करने, वरिष्ठ लिपिक बीकानेर सुरेश चंद बैरवा का पदस्थापन आदेशों को रद्द कर पुन: चूरू लगाए जाने, कर्मचारियों के स्थानांतरण में नेम नोटिंग नियमों की पालना करने की मांग की। तथा प्रशासनिक आधार पर अनुसूचित जाति/जनजाति कर्मचारियों का स्थानांतरण कर हरेशमेंट नहीं करने, जिस स्टेशन पर 50 या अधिक रेलवे आवास उपलब्ध है।

कार की टक्कर से बाइक सवार पिता-पुत्र की मौत

श्रीगंगानगर, (कासं)। कार की टक्कर से बाइक सवार पिता-पुत्र की मौके पर मौत हो गई जबकि दूसरा पुत्र गंभीर रूप से घायल हो गया। इसके साथ-साथ कार चार जनों के भी चोटें आई है। इन घायलों को जिला मुख्यालय पर एक प्राइवेट हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है।

यह हादसा घमूड़वाली थाना क्षेत्र में रिड़मलसर के पास गांव लालेवाला में उस समय हुआ जब पिता अपने दो पुत्रों के साथ गांव से किसी काम से मुख्य रोड पर बाइक लेकर आया और रिड़मलसर जाने की मुड़ा था। जबकि कार रिड़मलसर से लालेवाला गांव होते हुए भगवानगढ़ जा रही थी। एक और बाइक सवार भी था। वह भगवानगढ़ से रिड़मलसर जा रहा था।

घमूड़वाली थाना प्रभारी पृथ्वीराज ने बताया कि कार की स्पीड ज्यादा थी और गांव के अंदर से गुजरने वाली रोड से होते हुए भगवानगढ़ जा रही थी। इस दुर्घटना में बाइक सवार 66 एलएनपी निवासी रामचन्द्र पुत्र सोहनलाल बिश्नोई और उसके बेटे बबलू की मौके पर मौत हो गई। जबकि दूसरा बेटा

- हादसा घमूड़वाली थाना क्षेत्र में रिड़मलसर के पास गांव लालेवाला में हुआ

सियाराम गंभीर घायल हो गया।

वहीं कार सवार रिड़मलसर निवासी 37 वर्षीय कंचन पत्नी नरेन्द्र कुमार, रिड़मलसर निवासी 48 वर्षीय कौशल्या पत्नी दलजीत सिह, जतिन और मानव घायल हो गए। इसमें महिला कंचन की हालत नाजुक बनी हुई है। इन घायलों को रिड़मलसर से श्रीगंगानगर जिला चिकित्सालय लेकर आए। हालत बिगड़ते देख परिजनों ने इन्हें प्राइवेट हॉस्पिटल में भर्ती कराया है।

लालेवाला के पास हुआ हादसा मेहनतकश परिवार पर कहर बनकर टूटा। परिवार में मुखिया और उसके बेटे की दर्दनाक मौत ने गांव और आसपास की ढाणियों के लोगों को भीतर तक हिलाकर रख दिया। एडवोकेट मनोहर पंवार ने बताया कि जरा सी लापरवाही से मातम पसर गया। पिता-पुत्र के अंतिम संस्कार में शामिल प्रत्येक व्यक्ति की आंख नम थी।

वहीं रणवीर सुथार ने बताया कि बबलू और उसकी बहन का रिश्ता रायसिंहनगर क्षेत्र में किया हुआ था। घर में शादी की तैयारी चल रही थी। इस घर में कुछ दिन बाद ढोल, बैंड बजने वाले थे कि अब विलाप सुनाई पड़ रहा है। रामचंद्र के पास खुद की ज्यादा जमीन नहीं है। उसका परिवार हिस्से-ठेके पर जमीन लेकर काश्त भी करता है।

रिड़मलसर चौकी प्रभारी एएसआई सुरेश कुमार ने बताया कि अपने घर से चंद मिनट पहले निकले रामचन्द्र और उसके दोनों बेटे बाइक पर सवार होकर जैसे ही रोड क्रॉस करने लगे तो तेज स्पीड में आई कार ने इस बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर लगते ही यह बाइक करीब सात फीट ऊपर उछल गई। इस हादसे में बाइक सवार रामचन्द्र और बबलू की मौके पर मौत हो गई। जबकि दूसरा बेटा सियाराम गंभीर घायल है। उसके सिर पर गहरी चोटें आई है। कार सवार महिला कंचन की हालत नाजुक बनी हुई है।

लू से बचाव की जानकारी देंगे

हनुमानगढ़, (कासं)। ईंट भट्टा श्रमिकों को मौसमी बीमारियों, तेज गर्मी और लू ताप से बचाव और उपचार को लेकर विस्तृत जानकारी दी जायेगी।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य कार्यालय की ओर से 8 मई को कार्यशाला आयोजित होगी। जिला कलेक्टर कानाराम ने सोमवार को जिला स्तरीय विभागीय अधिकारियों की बैठक में इस संबंध में निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि लू का उपचार बचाव और सावधानी है। इसके लिए कार्यशाला के जरिए अधिकाधिक श्रमिकों तक जानकारी पहुंचाई जाए।

जिला कलेक्टर ने कहा कि जिला स्तर के बाद ब्लॉक और प्रत्येक ग्राम पंचायत में ऐसी कार्यशाला कराएं ताकि एक भी व्यक्ति को परेशानी नहीं हो। बैठक में उन्होंने नगर परिषद आयुक्त को फोगिंग कराने, रात्रिकालीन सफाई व्यवस्था सुनिश्चिता में औचक निरीक्षण करने के निर्देश दिए।

उन्होंने कृषि विभागीय अधिकारियों से कहा कि जिले में फसल कटाई के बाद अवशेष को जलाने से रोकने की कार्यवाही करें। किसानों को जागरूक करने और रोकथाम के लिए कृषि पर्यवेक्षकों की जिम्मेदारी तय की जाए।

हीटवेव का अलर्ट जारी, ऐहतियात बरतें

बीकानेर, (कासं)। यहां गर्मी अब सताने लगी है। अगले कुछ दिन हीटवेव भी चलने का अलर्ट जारी है। इस बीच चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग ने आमजन से ऐहतियात बरतने की अपील की है।

- स्वास्थ्य विभाग ने एडवाइजरी जारी की

इन दिनों अत्यधिक गर्मी होने से आमजन तापघात की चपेट में आ सकते हैं। खासकर हाईरिस्क वाले लोगों को खयाल रखने की जरूरत है। वहीं गर्मी के मौसम में स्वास्थ्य केन्द्रों पर विशेष सावधानी बरतने के लिए विभाग ने निर्देश दिए हैं। आमजन जब भी बाहर निकलें, छाता व पानी आदि की व्यवस्था अनुरूप घर से निकलें।

स्वास्थ्य विभाग ने सभी अस्पतालों में रोगियों के लिए शुद्ध पेयजल की व्यवस्था, संस्थान में रोगी के उपचार के लिए आपातकालीन किट में ओआरएस, डिपसेट सहित अन्य आवश्यक दवाईयां रखने के निर्देश दिए हैं। साथ ही चिकित्सा व्यवस्था सुचारू रखने के निर्देश दिए हैं। वहीं सभी ब्लॉक के लिए नोडल अधिकारी नियुक्त किए हैं।

विभाग के अनुसार गर्मी के चलते शरीर में लवण व पानी अपर्याप्त होने पर विषम गर्म वातावरण में तापघात से सिर का भारीपन व अत्यधिक सिरदर्द होने लगता है। इसके अलावा अधिक प्यास लगना, शरीर में भारीपन के साथ थकावट, जी मिचलाना, सिर चकराना व शरीर का तापमान बढना, पसीना आना बंद होना, मुंह का लाल हो जाना, त्वचा का सूखा होना, अत्यधिक प्यास का लगना व बेहोशी जैसी स्थिति का होना आदि लक्षण आने लगते हैं।

ऐसे में रोगी को तुरंत छायादार जगह पर कपड़े ढीले कर लेटा दिया जाना चाहिए। रोगी को होश में आने की दशा में उसे ठंडा पेय पदार्थ, जीवन रक्षक घोल पिला दें। यदि उक्त सावधानी के बाद भी मरीज ठीक नहीं होता है, तो उसे तत्काल निकट की चिकित्सा संस्थान ले जाया जाए। इन बातों का रखें विशेष ध्यान जहां तक संभव हो धूप में न निकलें, धूप में शरीर पूरी तरह से ढका हो।

हनुमानगढ़ में 1844 अभ्यर्थी दी ने नीट

हनुमानगढ़, (कासं) मेडिकल कॉलेजों में दाखिले से पहले जिले के चार केन्द्रों पर नीट 2024 परीक्षा संपन्न हुई। जिला मुख्यालय पर दो जंक्शन व दो केन्द्र टाउन में बनाए गए थे। चारों केन्द्रों पर शांतिपूर्ण तरीके से परीक्षा संपन्न हुई।

परीक्षा को लेकर नियुक्त जिला कॉर्डिनेटर जसविंदर कौर सोढ़ी के अनुसार जिले में शांतिपूर्ण तरीके से परीक्षा संपन्न हुई। इसे लेकर टाउन में वीएम व डीएवी स्कूल तथा जंक्शन में नेशनल पब्लिक स्कूल तथा गुरू हरिकृष्ण पब्लिक स्कूल को केन्द्र बनाया गया था। जिले में चारों केन्द्रों के लिए 1882 अभ्यर्थी पंजीकृत थे। इसमें 1844 अभ्यर्थियों ने परीक्षा दी। जबकि 38 अभ्यर्थी गैर हाजिर रहे। इससे पहले कड़ी सुरक्षा के बीच सभी अभ्यर्थियों की तलाशी लेने के बाद ही उन्हें परीक्षा केन्द्र में प्रवेश दिया गया।

चैकिंग के दौरान छात्र और छात्रों से हाथ में पहना धागा, कंगन, बालियां, नोजपिन, चूड़ा, कड़ा, पायल और वाटर कैनन पर किसी तरह का कोई रैपर ना हो सहित सामान को भी बाहर रखवाया गया। प्रवेश के दौरान छात्र-छात्राओं को चैकिंग के दौरान टीचर्स द्वारा कहा गया कि जो फोटो आधार कार्ड में लगी है। वही फोटो आपको लानी पड़ेगी।

आज गणेश मंदिर में उड़ेगा चंदा

बीकानेर, (कासं)। नगर के 537 वें स्थापना दिवस जिला प्रशासन,नगर विकास न्यास, बीकानेर, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर तथा श्री लक्ष्मीनाथ मंदिर विकास एवं पर्यावरण समिति के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा।

श्री लक्ष्मीनाथ मंदिर विकास एवं पर्यावरण समिति के सचिव सीताराम कच्छावा ने बताया कि, 7 मई मंगलवार को शाम 5:30 बजे श्री लक्ष्मीनाथ मंदिर के सामने स्थित गढ़ गणेश मंदिर परिसर में चंदा महोत्सव का आयोजन किया जायेगा। जिसमें बीकानेर के सुप्रसिद्ध चंदा कलाकार ब्रजेश्वर व्यास, गणेश व्यास, अनिल बोड़ा मौजूद थे।

33 के.वी. विद्युत लाइन से स्कूली बच्चों को खतरा!

श्रीगंगानगर, (कासं)। गांवों में बिजली समस्याओं को लेकर ग्रामीणों की सुनवाई बस कागजों तक ही सीमित हैं। धरातल पर आज भी ग्रामीण बिजली समस्याओं को लेकर जूझ रहे हैं। आज भी जिले के सूरतगढ़ तहसील के राजियासर टिब्बा क्षेत्र की देईदासपुरा पंचायत के गांव सांवलसर तथा गांव डीडवाना के बीच से गुजर रही 11 केवी विद्युत लाइन, बिरधवाल स्टेशन के सरकारी स्कूल के उपर से गुजर रही 33 केवी की विद्युत लाइन, कस्बे के कई घरों के उपर से जा रही हाई वोल्टेज लाइनें, गांवों तथा

- बिरधवाल स्टेशन के सरकारी स्कूल के ऊपर से गुजर रही 33 केवी की विद्युत लाइन हादसे को दे रही है न्यौता

ट्यूबवैल की विद्युत सप्लाई के लिए विद्युत लाइनों में लगे जर्जर व टेढ़े खंभे और झूलते तार ग्रामीणों, किसानों और स्कूली बच्चों के लिए खतरा बने हुए हैं। गांवों में बिजली की झूलती तारों तथा हाई वोल्टेज लाइनें टूटने से कई हादसे हो चुके हैं। जिससे न केवल आमजन बल्कि पशुधन व राष्ट्रीय पक्षी मोर भी काल के ग्रास बन चुके हैं। इसके बावजूद आज तक विद्युत निगम की लापरवाही की नींद सो रहा है। हालांकि ग्रामीण निगम अधिकारियों से लेकर प्रशासन गांव के संग शिविर में कई बार समस्या उठा चुके हैं। लेकिन कार्रवाई मात्र कागजों तक सीमित है। नेशनल हाईवे 62 पर स्थित बिरधवाल स्टेशन के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में भय के साए में विद्यार्थियों का भविष्य सुधारने की कवायद की जा रही है।

कृषि की नई तकनीकों का लाभ अन्य किसानों को भी मिले : डॉ. जे. पी. मिश्रा

बीकानेर, (कासं)। कृषि विज्ञान केन्द्रों की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर पूरे देश में स्वर्ण जयंती समारोह आयोजित किए जा रहे हैं। इसी क्रम में सोमवार को स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित स्वामी विवेकानंद संग्रहालय सभागार में प्रसार शिक्षा निदेशालय की ओर से स्वर्ण जयंती मशाल कार्यक्रम आयोजित किया गया।

मुख्य अतिथि अटारी जोधपुर के निदेशक डॉ जे.पी. मिश्रा थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरूण कुमार ने की। कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ देवाराम सैनी, अनुसंधान निदेशक डॉ पी.एस. शेखावत, प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ सुभाष चंद्र समेत सभी डीन, डायरेक्टर, छह जिलों के केवीके से आये हुए कृषि वैज्ञानिक व किसान शामिल हुए।

कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर से आई स्वर्ण जयंती मशाल को अतिथियों ने राजुवास बीकानेर के प्रतिनिधियों को सौंपा।

- कृषि विज्ञान केन्द्रों की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने पर स्वर्ण जयंती मशाल कार्यक्रम आयोजित

इस अवसर पर कृषि वैज्ञानिकों का किसानों से संवाद व उनकी ज्यादातर समस्याओं का मौके पर ही समाधान किया गया। कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर से आई मशाल को अतिथियों ने राजुवास बीकानेर के प्रतिनिधियों को सौंपा। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अटारी जोधपुर के निदेशक डॉ जे.पी. मिश्रा ने कहा कि कृषि के क्षेत्र में प्रधानमंत्री सबसे ज्यादा जिसका उल्लेख करते हैं वह कृषि विज्ञान केन्द्र ही हैं। लिहाजा कृषि विज्ञान केन्द्रों से जुड़े हुए किसान अपने रिश्तेदारों और मित्रों को भी ज्यादा से ज्यादा जोड़ें ताकि कृषि की नई तकनीकों का अन्य किसानों को भी लाभ मिले।

कुलपति डॉ अरूण कुमार ने कहा कि जल्द ही मोबाइल वैन के जरिए किसानों को उनके खेत पर ही मिट्टी की क्वालिटी चैक कर बताया जायेगा कि उनके खेत में फल, फूल, सब्जी, दलहन, तिहलन में से कौनसी फसल की उपज अच्छी होगी। उन्होंने कहा कि किसानों ने केवीके के वैज्ञानिकों से मिले सपोर्ट की जो जानकारी साझा की उससे हम सभी गौरवान्वित हैं। कुलसचिव डॉ देवाराम सैनी ने कहा कि अब किसानों को ऑर्गेनिक खेती की ओर अग्रसर करने की आवश्यता है। साथ ही कहा कि बीज का योगदान खेती में सबसे ज्यादा होता है।

101 किलोग्राम घी सीज, जांच के लिए सैम्पल बीकानेर भेजे

हनुमानगढ़, (कासं)। विभाग को मिली एक शिकायत के आधार पर आज टाउन स्थित गुड मण्डी स्थित एक संस्थान पर निरीक्षण की कार्यवाही की गई।

अतिरिक्त मुख्य सचिव शुभ्रा सिंह एवं आयुक्त इकबाल खान (खाद्य सुरक्षा) के निर्देशन में की गई कार्यवाही में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. नवनीत शर्मा स्वयं उपस्थित रहे। उनके साथ खाद्य सुरक्षा अधिकारी सुदेश गर्ग, रफीक मोहम्मद एवं सहायक कर्मचारी हीरावल्लभ भी उपस्थित थे।

सीएमएचओ डॉ. नवनीत शर्मा ने बताया कि विभाग को मिली एक शिकायत के आधार पर आज टाउन गुड मण्डी स्थित मै. छाबड़ा ब्रदर्स पर निरीक्षण की कार्यवाही की गई। निरीक्षण के दौरान संस्थान पर प्रसंग ब्राण्ड घी के दो नमूने लिए गए। इस दौरान संस्थान पर 101 किलोग्राम घी का स्टाक भी मिला। अधिकारियों द्वारा घी में अमानकता के संदेह होने के चलते घी को सीज कर दिया गया। संग्रहित किए गए घी के नमूनों को जांच के लिए बीकानेर स्थित खाद्य प्रयोगशाला में भिजवा दिया गया है।

हनुमानगढ में स्वास्थ्य विभाग की टीम ने अमानकता का संदेह होने पर 101 किलोग्राम घी सीज किया।

डॉ. नवनीत शर्मा ने आमजन से अपील की है कि मिलावट करने वाले खाद्य विक्रेता एवं अवधिपार सामग्री बेचने वाले वाले लोगों की जानकारी चिकित्सा विभाग के नम्बर 01552-261190 अथवा राज्य स्तरीय व्हाट्सअप नंबर 9462819999 पर दें ताकि मिलावट पर वार अभियान के तहत प्रभावी कार्रवाई हो सके।

विराट कोहली भारत के सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाजों में से हैं और अगले महीने होने वाले टी20 विश्व कप में उनके बल्ले पर अंकुश लगाने के लिये रणनीति जरूर बनाई जायेगी। - बाबर आजम

पाकिस्तानी गेंदबाज, भारतीय क्रिकेटर विराट कोहली को सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज बताते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

ऋषभ पंत

आईपीएल प्लेऑफ की दौड़ में बने रहने के लिये दिल्ली कैपिटल्स को मंगलवार को हर हालत में राजस्थान रॉयल्स जैसी जबर्दस्त फॉर्म में चल रही टीम को हराना होगा और नजरें कप्तान ऋषभ पंत तथा जैक फ्रेसर मैकगुर्क के बल्ले पर लगी होंगी। दिल्ली ने अभी तक 11 में से पांच मैच जीते और छह हारे हैं। बाकी तीन मैच दिल्ली को हर हालत में जीतने होंगे। ऐसे में दिल्ली शायद सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के बाद भी क्वालीफाई नहीं कर सके लेकिन पंत का भरोसा महेंद्र सिंह धोनी की उस नीति पर है कि जिस पर नियंत्रण किया जा सकता है, उसी पर किया जाये।

क्या आप जानते हैं ?... इंग्लैंड के वाल्ट हैंड पहले क्रिकेटर थे जिन्होंने 100 कैच पकड़े, उन्होंने 1939 में वेस्टइंडीज के जॉर्ज हैडली का कैच पकड़कर यह उफलब्धि हासिल की।

टी-20 वर्ल्ड कप के लिए टीम इंडिया की जर्सी आई सामने

नई दिल्ली, 6 मई। इन दिनों फैंस पर आईपीएल का खुमार है वहीं 26 मई को आईपीएल की समाप्ती हो जाएगी। लेकिन उससे पहले ही फैंस में टी20 वर्ल्ड कप को लेकर

उत्साह बढ़ता दिख रहा है। 2 जून से शुरू होने वाले टी20 वर्ल्ड कप के लिए भारतीय स्क्वॉड का ऐलान तो पहले ही हो चुका है। वहीं अब काफी इंतजार के बाद टीम इंडिया की जर्सी भी सामने आई है। दरअसल, एडिडास ने आगामी टी20 वर्ल्ड कप के लिए भारत की जर्सी लॉन्च कर दी है। नई जर्सी में वी-शेप की नेक है जिस पर तिरंगे रंग की धारियां हैं। साथ ही बाजू पर केसरिया रंग पर एडिडास की तीन धारियां दिख रही हैं। जर्सी लॉन्च होने से पहले ही इसका फोटो सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। साथ ही एडिडास ने भी जर्सी लॉन्च कर दी है, धर्मशाला के मैदान के ऊपर हेलीकॉप्टर से जर्सी लॉन्च हुई है। इस दौरान कप्तान रोहित शर्मा, कुलदीप यादव, रविंद्र जडेजा भी दिख रहे हैं।

रोहित के लिए एक शब्द और धोनी को कैसे लाएं पंजाब किंग्स में

नई दिल्ली, 6 मई। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2024 में पंजाब किंग्स के प्रदर्शन के बारे में प्रीति जिंटा क्या सोचती हैं और रोहित शर्मा के लिए एक शब्द क्या कहना चाहती हैं। जिंटा ने ऐसे ही फैन्स के सवालों के जवाब दिए। इंडियन प्रीमियर लीग 2024 में पंजाब किंग्स ने जैसी शुरुआत की और जिस तरह के करीबी मैच गंवाए, उसको लेकर टीम की को-ओनर प्रीति जिंटा कुछ ज्यादा खुश नहीं हैं। प्रीति जिंटा हर साल की तरह इस साल भी आईपीएल के दौरान पंजाब किंग्स को सपोर्ट करने के लिए कुछ मैचों में स्टेडियम में नजर आई थीं। प्रीति जिंटा ने ट्विटर (अब) पर अपने फैन्स के सवालों के जवाब दिए। इस दौरान उनसे काफी सारी सवाल क्रिकेट को लेकर भी किए गए, आईपीएल जारी है और ऐसे में प्रीति जिंटा से क्रिकेट को लेकर सवाल किए जाना लाजमी ही थी। प्रीति जिंटा से एक फैन ने सवाल किया कि वह पंजाब किंग्स के प्रदर्शन के बारे में क्या कहेंगी, जिस पर जिंटा ने जवाब में लिखा, जाहिर है कि बहुत खुश नहीं हूं। हमने चार मैच आखिरी गेंद पर गंवाए, हमारा कप्तान चोटिल होकर बाहर गया, कुछ मैच शानदार रहे और कुछ हमारे लिए बेकार, हम फ्यूचर में तभी अच्छा करेंगे, जब हम अपने होम मैच जीतेंगे, फैन्स को हमारी जीत और हार में सपोर्ट करने के लिए थैंक यू।

इंडिया ताइक्वांडो चैम्पियन ऑफ चैम्पियंस टूर्नामेंट का सिरसा में आयोजन

सिरसा, 6 मई। हरियाणा के सिरसा शहर के शारदा इंडोर हॉल में इंडिया ताइक्वांडो के तत्वावधान में चल रही तीन दिवसीय सब जूनियर, कैडेट, जूनियर व सीनियर चैंपियन ऑफ चैंपियंस 2024 क्यूरूगी एंड पूमसे स्टॉप संपन्न हुई। प्रतियोगिता में महिला व पुरुषों सहित 250 खिलाड़ियों ने भाग लिया। वर्ल्ड ताइक्वांडो व एशियन ताइक्वांडो यूनियन से मान्यता प्राप्त इंडिया ताइक्वांडो द्वारा आयोजित इस टूर्नामेंट में पूरे भारतवर्ष के विभिन्न राज्यों से आए खिलाड़ियों के साथ-साथ स्पोर्टस अथॉरिटी ऑफ इंडिया, एसएससीबी, असम राइफल्स व मध्यप्रदेश व लखनऊ साई स्पोर्ट्स एकेडमी की टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का शुभारंभ जहां संजीव बेरी, अनीता बराला, एईओ सिरसा अनिल कुमार द्वारा सयुंक्त तौर पर किया गया। प्रतियोगिता के समापन अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि भाजपा नेता डा. अशोक तंवर ने शिरकत की। जबकि उनके साथ जगदीश चोपड़ा, नीतीश महेंद्रू ने शिरकत की। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर हरियाणा, दूसरे स्थान पर एसएससीबी आर्मी बॉयज व तीसरे स्थान पर लखनऊ साई ताइक्वांडो स्पोर्ट्स एकेडमी की टीम रही। प्रतियोगिता में सीनियर वर्ग 63-68 किलोग्राम भार वर्ग में कबीचंद्र सिंह असम राइफल सिल्वर व अफजल अली मध्यप्रदेश गोल्ड प्राप्त किया। 80-87 किलो भार वर्ग में दीक्षांत असम राइफल गोल्ड, रोबिन बराला हरियाणा ने सिल्वर प्राप्त किया। इसी प्रकार जूनियर वर्ग में 45 किलो से कम भार वर्ग में अमनदीप हरियाणा ने गोल्ड व मनीष कुमार दीवार एसएससीबी आर्मी बॉयज सिल्वर प्राप्त किया।

धर्मशाला में भारत की पहली 'हाईब्रिड पिच' का अनावरण किया गया

नई दिल्ली, 6 मई। भारत की पहली 'हाईब्रिड पिच' का सोमवार को यहां हिमाचल प्रदेश क्रिकेट संघ स्टेडियम में भव्य समारोह में अनावरण किया गया। इस समारोह में आईपीएल चेयरमैन अरूण धूमल और इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर तथा एसआईएस के अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट निदेशक पॉल टेलर जैसे क्रिकेट से जुड़े गणमान्य व्यक्तियों ने हिस्सा लिया। धूमल ने कहा, "इंग्लैंड में लार्ड्स और द ओवल जैसे प्रतिष्ठित स्थलों में सफलता के बाद हाईब्रिड पिचों के इस्तेमाल से भारत में क्रिकेट में क्रांति आएगी।" प्राकृतिक टर्फ और कृत्रिम फाइबर से बनने वाली हाईब्रिड पिच अधिक टिकाऊ होती है। इससे मैदानकर्मियों पर पिच को तैयार करने में कम दबाव होता है और साथ ही खेलने की परिस्थितियों के स्तर को बरकरार करने में भी अधिक समस्या नहीं होती।

सूर्या के शतक से मुंबई ने जीता चौथा मैच

हैदराबाद को 7 विकेट से हराया, हार्दिक-चावला को 3-3 विकेट

नई दिल्ली, 6 मई। मुंबई इंडियन प्रीमियर लीग में लगातार 4 हार के बाद पांच बार की चैंपियन मुंबई इंडियंस को विजय मिली। टीम ने सनराइजर्स हैदराबाद को 7 विकेट से हराया, यह मुंबई की 12 मैचों में चौथी जीत रही। मुंबई से सूर्यकुमार यादव ने सेंचुरी लगाई, यह उनके करियर का दूसरा शतक रहा, उन्होंने 51 बॉल पर 102 रन बनाए।

टीम से पीयूष चावला और हार्दिक पंड्या ने 3-3 विकेट लिए। वानखेड़े स्टेडियम में मुंबई इंडियंस ने टॉस जीतकर गेंदबाजी चुनी। हैदराबाद ने 20 ओवर में 8 विकेट के नुकसान पर 173 रन बनाए। मुंबई ने 17.2 ओवर में 3 विकेट खोकर ही टारगेट हासिल कर लिया। मुंबई के सूर्यकुमार यादव ने 18वें ओवर की दूसरी बॉल पर छक्का लगाया। इसी के साथ उन्होंने अपनी सेंचुरी पूरी की और टीम को जीत भी दिला दी।

सूर्या 52 बॉल में 102 रन बनाकर नॉटआउट रहे। उन्होंने तिलक वर्मा के साथ 143 रन की पार्टनरशिप भी की। तिलक ने 32 बॉल पर 37 रन बनाए। सूर्यकुमार यादव ने शाहबाज अहमद के खिलाफ लॉन्ग लेग की दिशा में चौका लगाया। इसी के साथ उन्होंने तिलक वर्मा के साथ सेंचुरी पार्टनरशिप भी पूरी कर ली। टीम ने 31 रन के स्कोर पर 3 विकेट गंवा दिए थे। सूर्यकुमार यादव और तिलक वर्मा ने मुंबई को शुरुआती झटकों से उबारा। दोनों ने फिफ्टी पार्टनरशिप की और टीम का स्कोर 100 रन तक पहुंचाया। मुंबई ने 31 रन के स्कोर पर ही 3 विकेट गंवा दिए थे।

यूरोप दौरे पर भारतीय जूनियर महिला टीम की कप्तान होगी ज्योति

नई दिल्ली, 6 मई। डिफेंडर ज्योति सिंह को 21 से 29 मई तक होने वाले यूरोप दौरे के लिये भारत की 22 सदस्यीय जूनियर महिला हॉकी टीम का कप्तान चुना गया जबकि मिडफील्डर साक्षी राणा उपकप्तान होंगी। भारतीय टीम बेल्जियम, जर्मनी और नीदरलैंड के दो क्लबों ब्रेडेस हॉकी वेरेनिजिंग पुश और आरेंजी रूड से छह मैच खेलेगी। ज्योति ने हॉकी इंडिया की एक विज्ञिप्त में कहा ," टीम में अच्छा तालमेल हैं। हम सभी एक दूसरे को बखूबी जानते हैं। सभी हुनरमंद और प्रतिभाशाली हैं। विदेश में शीर्ष टीमों के खिलाफ खेलना सीखने के लिये बहुत अच्छा होगा।"

भारतीय टीम 21 मई को ब्रेडेस हॉकी वेरेनिजिंग पुश से पहला मैच खेलेगी और 22 मई को ब्रेडा में ही बेल्जियम से खेलेगी। इसके बाद 24 मई को बेल्जियम में मेजबान से खेलना है। इसके बाद जर्मनी से 26 मई को ब्रेडा और 27 मई को जर्मनी में खेलना है। इसके बाद 29 मई को ब्रेडा में आरेंजी रूड से आखिरी मैच खेलना है। इन दिनों फैंस पर आईपीएल का खुमार है वहीं 26 मई को आईपीएल की समाप्ती हो जाएगी। लेकिन उससे पहले ही फैंस में टी20 वर्ल्ड कप को लेकर उत्साह बढ़ता दिख रहा है। 2 जून से शुरू होने वाले टी20 वर्ल्ड कप के लिए भारतीय स्क्वॉड का ऐलान तो पहले ही हो चुका है। वहीं अब काफी इंतजार के बाद टीम इंडिया की जर्सी भी सामने आई है।

दरअसल, एडिडास ने आगामी टी20 वर्ल्ड कप के लिए भारत की जर्सी लॉन्च कर दी है। नई जर्सी में वी-शेप की नेक है जिस पर तिरंगे रंग की धारियां हैं। साथ ही बाजू पर केसरिया रंग पर एडिडास की तीन धारियां दिख रही हैं। जर्सी लॉन्च होने से पहले ही इसका फोटो सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। साथ ही एडिडास ने भी जर्सी लॉन्च कर दी है, धर्मशाला के मैदान के ऊपर हेलीकॉप्टर से जर्सी लॉन्च हुई है। इस दौरान कप्तान रोहित शर्मा, कुलदीप यादव, रविंद्र जडेजा भी दिख रहे हैं।

ट्वंटी-20 वर्ल्ड कप पर आतंकी खतरा

विंडीज में हमले की धमकियों के पीछे पाक का हाथ

नई दिल्ली, 6 मई। यूएसए और वेस्टइंडीज की सह मेजबानी में अगले महीने से होने जा रहे आगामी टी20 वर्ल्ड कप 2024 पर आतंकी साया मंडरा रहा है। मेजबान कैरेबियाई देश को आतंकवादी हमले की धमकियां मिलने लगी है और इसके सीधे तार पाकिस्तान से जुड़े हुए हैं। यहां तक कि, इसको लेकर वीडियो मैसेज भी प्रसारित किए जा रहे हैं, जिसके बाद सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट हो गई हैं।कैरेबियाई मीडिया ने जानकारी दी है कि प्रो इस्लामिक स्टेट यानी मीडिया सोर्स टूर्नामेंट के आयोजकों के खिलाफ हिंसा भड़काने में लगे हुए हैं। रिपोर्ट में हिंसा भड़काने के लिए चलाए जा रहे अभियान का खुलासा किया गया है। आईएस की अफगानिस्तान-पाकिस्तान शाखा आईएस खुरासन के वीडियो संदेश भी मिले हैं, जिसमें कई देशों पर हमलों और खून-खराबे का जिक्र किया गया है और आतंकी समूह के समर्थकों से इसमें शामिल होने की अपील भी की गई है। कैरेबियाई देशों को आतंकी संदेश मिलने के बाद टी20 वर्ल्ड कप के सह मेजबान क्रिकेट वेस्टइंडीज के लिए सुरक्षा संबंधी चिंताएं बढ़ गई हैं। हालांकि बोर्ड के सीईओ जॉनी ग्रेव्स ने सुरक्षा को लेकर ढांढस बंधाया है। जॉनी ग्रेव्स ने क्रिकबज से बातचीत में कहा है कि, हम मेजबान देशों और शहरों में अधिकारियों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं और हमारे आयोजन के लिए पहचाने गए किसी भी जोखिम को कम करने के लिए उचित योजनाएं सुनिश्चित करने के लिए वैश्विक परिदृश्य की लगातार निगरानी और मूल्यांकन किया जा रहा है।

अजमल की संघर्षपूर्ण जीत, हिंदुस्तान औ नेशनल का मैच रहा ड्रॉ

नई दिल्ली, 6 मई। डीएसए सीनियर डिवीजन लीग के एक रोमांचक मुकाबले में अजमल एफसी ने दिल्ली टाइगर्स को 4-2 से हरा कर सुपर सिक्स में पहुंचने की संभावना को बनाए रखा है। विनोद नगर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में खेले गए दिन के पहले मैच में नेशनल यूनाइटेड और हिंदुस्तान एफसी के बीच मैच 2-2 से ड्रा रहा और दोनों टीमों के बीच अंक बांट गए।

अजमल के लिए अभय सिंह, हैरी, पंकज नेगी और शोर्यबल्या ने गोल दागे। टाइगर्स ने जमकर संघर्ष किया और विलबुय एवम अक्षय हुरिया के गोलों से मैच में वापसी की लेकिन कुछ प्रमुख खिलाड़ियों की अनुपस्थिति के चलते मैच गंवाना पड़ा। हिंदुस्तान और नेशनल खेले गये मुकाबले मे हिंदुस्तान ने तालिब नजीर और रॉबिनसन के गोलों से दो गोलों की बढ़त लेने के बाद प्रतिद्वंद्वी को आसानी से लिया और दो हास्यास्पद गोल खा कर अंक बांट लिए। नेशनल के लिए लालबोइलें और विलबर्ट ने तोहफे में मिले गोल। नेशनल और हिन्दुस्तान ने 15-15 मैच खेलने के बाद क्रमश: 15 और 14 अंक हैं।

चैम्पियंस ट्रॉफी 2025 के लिए पाकिस्तान का दौरा करेगी टीम इंडिया

बीसीसीआई ने दिया बड़ा अपडेट

नई दिल्ली, 6 मई। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 को लेकर एक बड़ा अपडेट सामने आया है। दरअसल, अगले साल होने वाले चैंपियंस ट्रॉफी में भारत और पाकिस्तान के बीच तनावपूर्ण राजनीतिक संबंधों के कारण भारतीय टीम के पाकिस्तान जाने पर अनिश्चितताओं के बादल मंडरा रहा है। जिस पर अब बीसीसीआई के उपाध्यक्ष अध्यक्ष राजीव शुक्ला का बयान सामने आया है।

बता दें कि, 2025 में फरवरी-मार्च में होने वाले चैंपियंस ट्रॉफी 1996 वनडे वर्ल्ड कप के बाद पाकिस्तान किसी बड़े आईसीसी टूर्नामेंट की मेजबानी करेगा। बीसीसीआई के उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला ने टीम इंडिया के चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए पाकिस्तान जाने पर बयान देते हुए कहा है कि टीम की भागीदारी सरकार पर निर्भर करती है। उपाध्यक्ष ने अगले साल पाकिस्तान में खेले

जाने वाले चैंपियंस ट्रॉफी को लेकर को बयान दिया है। जहां उन्होंने कहा कि, चैंपियंस ट्रॉफी के मामले में भारत सरकार हमें जैसे कहेगी, वैसे ही किया जाएगा। जब भारत सरकार अनुमति देती है तभी हम अपनी टीम भेजते हैं। उस मामले में हम भारत सरकार के निर्णय के हिसाब से जाएंगे।

बता दें कि, मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा था कि भारत 2025 आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के लिए पाकिस्तान जा सकता है और टीम के सभी मैच संभावित रूप से लाहौर के गद्दाफी स्टेडियम में आयोजित किए जाएंगे। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने श्रीलंका में जुलाई में होने वाली बोर्ड बैठक में चर्चा के लिए एक मसौदा प्रस्तुत किया है। आईसीसी सुरक्षा दल ने व्यवस्थाओं का आंकलन करने के लिए पाकिस्तान का दौरा किया है।

भारतीय पुरुष और महिला 4 गुणा 400 मीटर रिले टीमों को ओलंपिक कोटा

नासाउ, 6 मई। भारतीय पुरुष और महिला टीमों ने विश्व एथलेटिक्स रिले प्रतियोगिता की 4 गुणा 400 मीटर रिले स्पर्धा में बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए पेरिस ओलंपिक 2024 का कोटा हासिल कर लिया है। थॉमस ए रॉबिन्सन स्टेडियम में शनिवार को क्वालीफाई करने में असफल रहने वाली सभी टीमों ने रविवार को एक अतिरिक्त क्वालीफाइंग राउंड में प्रतिस्पर्धा की। भारतीय पुरुष और महिला टीमों ने दूसरे दौर की हीट में 4 गुणा 400 मीटर स्पर्धा में दूसरे स्थान पर रहकर पेरिस ओलंपिक 2024 का कोटा हासिल किया। मोहम्मद अनस याहिया, मोहम्मद अजमल, अरोकिया राजीव और अमोज जैकब की भारतीय पुरुष 4 गुणा 400 मीटर रिले टीम ने सत्र का सर्वश्रेष्ठ समय 3:03.23 का समय के साथ हीट 2 में अमेरिका से पीछे रहकर पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालीफाइ किया।

टी-20 वर्ल्ड कप से पहले फंसा पेंच, आयरलैंड सीरीज के लिए वीजा ना मिलने से बाहर हो सकते हैं मोहम्मद आमिर

नई दिल्ली, 6 मई। टी 20 वर्ल्ड कप से पहले पाकिस्तान क्रिकेट टीम के लिए एक बुरी खबर है। दरअसल, पाकिस्तान टीम आईसीसी टी20 वर्ल्ड कप से पहले आयरलैंड और इंग्लैंड के दौरे के लिए रवाना होने के लिए तैयार है, लेकिन टीम के प्रमुख तेज गेंदबाज मोहम्मद आमिर अपनी टीम के साथ उड़ान नहीं बाहर पाएंगे।पाकिस्तान की टीम को 10 मई से आयरलैंड के खिलाफ तीन टी20 मैचों की सीरीज खेलनी है।

उससे पहले टीम के तेज गेंदबाज मोहम्मद आमिर को वीजा मिलने में देरी के कारण वह टीम के साथ उड़ान नहीं भरेंगे। हालांकि, पाकिस्तानी क्रिकेट बोर्ड को विश्वास है कि जल्द ही मोहम्मद आमिर के वीजा मामले को सुलझा लिया जाएगा। गौरतलब है कि, मोहम्मद आमिर के लिए ये कोई नई बात

नहीं है। इससे पहले वह स्पॉट फिक्सिंग मामले में ब्रिटेन में जेल भी जा चुके हैं। लेकिन उनके ऐसे अतीत के कारण उन्हें अमेरिका में होने वाले टी20 वर्ल्ड कप के लिए वीजा मिलने में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। दरअसल, अमेरिकि का वीजा मिलने में ऐसे लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। जो अपने अतीत में किसी क्राइम में जुड़े रहे हो। अगर ऐसा होता है तो पाकिस्तान के लिए बड़ा झटका साबित हो सकता है।

भारतीय शतरंज इकोसिस्टम को विकसित करने के लिए 65 करोड़ रुपये का बजट

नयी दिल्ली, 6 मई। अखिल भारतीय शतरंज महासंघ के नवनिर्वाचित अध्यक्ष नितिन नारंग ने भारतीय शतरंज को अभूतपूर्व ऊंचाइयों तक पहुंचाने और देश में शतरंज इकोसिस्टम को विकसित करने के लिए 65 करोड़ रुपये का बजट तैयार किया है।

एआईसीएफ की आम सभा में इस पर चर्चा की गयी जिनका उद्देश्य पेशेवर और जमीनी स्तर के खिलाड़ियों के लिए वित्तीय और संस्थागत सहायता प्रदान करके भारतीय शतरंज इकोसिस्टम को मजबूत करना है। राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों के लिए एआईसीएफ प्रो और एआईसीएफ पॉपुलर जैसे कार्यक्रमों का शुभारंभ, हर घर शतरंज के दृष्टिकोण को घरों में वास्तविकता प्रदान करेगा। कई प्रस्ताव जैसे शतरंज विकास निधि, सभी स्तरों पर खिलाड़ी अनुबंध और कोचिंग के साथ मजबूत वित्तीय सहायता की शुरुआत, जिला और राज्य संघों को आर्थिक रूप से समर्थन देना, विशिष्ट स्तर के प्रशिक्षण के लिए एक अत्याधुनिक राष्ट्रीय शतरंज अखाड़ा (एनसीए) की स्थापना, विशेष रूप से भारत के लिए एआईसीएफ रेटिंग प्रणाली, अभूतपूर्व पहल के रूप में काम करेगी और आने वाले वर्षों में भारतीय शतरंज इकोसिस्टम के विकास को गति देगी।

नारंग ने कहा खिलाड़ी शतरंज के केंद्र में हैं और कई लोगों को धन, संस्थागत समर्थन और अवसरों की कमी के कारण अपने जुनून से समझौता करना पड़ता है। मैं 65 करोड़ रुपये के बजट में शुरू की गई पहलों के माध्यम से प्रत्येक खिलाड़ी के सपने को साकार करने के लिए प्रतिबद्ध हूं।

भारतीय महिला टीम ने डीएलएस पद्धति से बांग्लादेश को 56 रनों से हराया

सिलहट, 6 मई। कप्तान हरमनप्रीत कौर (39) रन और उसके बाद गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन की बदौलत भारतीय महिला टीम ने सोमवार को वर्षा बाधित चौथे टी-20 मुकाबले में डकवर्थ लुईस नियम (डीएलएस पद्धित) से बंगलादेश को 56 रनों से हरा दिया है। इस जीत के साथ भारतीय टीम पांच मैचों की श्रृंखला में 4-0 बढ़त बना ली है। वर्षा के कारण बंगलादेश को 14 ओवर में जीत लिये 125 रनों के लक्ष्य मिला था। बंगलादेश की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने चौथे ओवर में मुर्शीदा खातून (1) का विकेट गवां दिया। इसके बाद आठवें ओवर में दिलारा अख्तर (21) रन बनाकर पवेलियन लौट गयी। रुबिया हैदर (13), कप्तान निगार सुल्ताना (1), शोरना अख्तर (5), ऋतु मोनी (1) राबेया खान (8) रन बनाकर आउट हुई। शोरिफा खातून 11 और नाहिदा अख्तर दो रन बनाकर नाबाद रही। भारतीय गेंदबाजों के आगे बंगलादेश का कोई भी बल्लेबाज टिक नहीं खेल सका। बंगलादेश की टीम 14 ओवर में सात विकेट पर 68 रन ही बना सकी और मुकाबला 56 रनों से हरा गयी। भारत की ओर से दीप्ति शर्मा और सोभना आशा ने दो-दो विकेट लिये। पूजा वस्त्रकर और राधा यादव को एक-एक विकेट मिला। इससे पहले आज यहां सिलहट अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में बंगलादेश की महिला टीम ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी भारतीय टीम की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने दूसरे ही ओवर में शेफाली वर्मा (2) रन का विकेट गवां दिया।

माही भाई भी मदद नहीं कर सकते, हार्दिक पांड्या को क्यों सताने लगी धोनी की याद

नई दिल्ली, 6 मई। मुंबई इंडियंस के कप्तान हार्दिक पांड्या ने महेंद्र सिंह धोनी का खासतौर पर जिक्र किया है। उन्होंने कहा कि हम गलतियां करके बहुतकुछ सीखते हैं। इसे कोई और नहीं सिखा सकता।

मुंबई इंडियंस के कप्तान हार्दिक पांड्या ने महेंद्र सिंह धोनी का खासतौर पर जिक्र किया है। उन्होंने कहा कि हम गलतियां करके बहुतकुछ सीखते हैं। इससे होने वाले अनुभव से जो हम सीखते हैं, वह हमें कोई नहीं सिखा सकता। यहां तक कि माही भाई भी नहीं। मुंबई इंडियंस और सनराइजर्स हैदराबाद मैच से पहले हार्दिक ने यह बात कही। गुजरात टाइटंस को एक के बाद फाइनल में पहुंचाने वाले हार्दिक मुंबई इडियंस में बतौर कप्तान लौटे हैं। हालांकि अभी तक का एमआई का

सफर कुछ खास नहीं रहा है। मुंबई की टीम प्लेऑफ की दौड़ से बाहर होकर अब आत्मसम्मान की लड़ाई लड़ रही है। इस बीच हार्दिक के ऊपर टी20 वर्ल्डकप में उपकप्तानी की जिम्मेदारी भी आ गई है।

हार्दिक ने कहा कि गलतियों से सीखना एक अलग तरह का अनुभव है। यहां पर आप जो कुछ सीखते हैं, वैसा तो आपका कोई करीबी भी नहीं सिखा सकता है। आपके आदर्श भी इस बारे में आपको कुछ नहीं बता सकते। स्टार स्पोर्ट्स पर बातचीत के दौरान हार्दिक ने इसी को लेकर धोनी का खासतौर पर जिक्र किया। पांड्या ने कहा कि कुछ हद तक माही भाई भी इस मामले में आपकी कोई मदद नहीं सकते। हार्दिक पांड्या ने कहा कि मैं हमेशा से वह शख्स रहा हूं, जो जिम्मेदारी उठाना चाहता है। मेरा मानना है कि जब आप जिम्मेदारी लेते हैं तो आप वह चीज आपकी हो जाती है। गलतियों के साथ भी मेरे लिए कुछ ऐसा ही है। मैं हमेशा गलतियों से सीखना चाहता हूं।

राष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी सुमनदीप ने भाखड़ा नहर में कूदकर जान दी

पटियाला, 6 मई। राष्ट्रीय स्तर की हॉकी खिलाड़ी सुमनदीप कौर ने कथित तौर पर अपने भाई और भाभी से झगड़े के बाद पंजाब के भाखड़ा नहर में कूदकर अपनी ईहलीला समाप्त कर ली। पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी। पिता की शिकायत पर भाई और भाभी के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। सुमनदीप के पिता जसपाल सिंह ने पुलिस को बताया कि उनकी बेटी पंजाब यूनिवर्सिटी में एमए की पढ़ाई कर रही थी। वह अपने बेटे विक्रमजीत सिंह और उसकी पत्नी पिंकी की ओर से सुमनदीप के साथ दुर्व्यवहार से व्यथित हैं। पुलिस ने कहा कि सुमनदीप के भाई को गिरफ्तार कर लिया गया है जबकि पिंकी की तलाश की जा रही है। पुलिस ने सुमनदीप का शव बरामद कर लिया है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को राजस्थान से भारतीय प्रशासनिक सेवा के लिए चयनित युवाओं से मुलाकात की और उन्हें उनकी कामयाबी के लिए बधाई दी। मुख्यमंत्री ने चयनित युवाओं का साफा पहनाकर, शॉल ओढ़ाकर व स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया। उन्होंने कहा कि, इतनी बड़ी संख्या में राजस्थान से छात्र प्रशासनिक सेवा में चयनित हुये हैं, यह पूरे प्रदेश के लिए बेहद गर्व का विषय है।

मु.मंत्री भजनलाल यू.पी.एस.सी. में चयनित युवाओं से मिले

मु.मंत्री भजनलाल ने युवाओं का साफा पहनाकर व शॉल ओढ़ाकर अभिनंदन किया

- **मुख्यमंत्री ने कहा, सिविल सेवा में चयनित युवा देश के कर्णधार और प्रहरी हैं, उन्हें समाज को सही दिशा देकर देश व प्रदेश को आगे बढ़ाना है।**
- **इस अवसर पर मुख्य सचिव सुधांश पंत, पुलिस महानिदेशक यू.आर. साहू सहित कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे।**

जयपुर, 6 मई (का.सं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर संघ लोक सेवा आयोग परीक्षा-2023 में राजस्थान से चयनित युवाओं से मिले तथा उन्हें हार्दिक बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। मुख्यमंत्री ने युवाओं को साफा पहनाकर, शॉल ओढ़ाकर तथा स्मृति चिन्ह भेंट कर शुभकामनाएं दीं।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा, यह बहुत गौरव का विषय है कि, देश की सबसे प्रतिष्ठित सिविल सेवा परीक्षा में राजस्थान से इतनी बड़ी संख्या में युवा चयनित हुए हैं। आपके माता-पिता के आशीर्वाद तथा कड़ी मेहनत एवं लगन से यह संभव हो पाया है। उन्होंने कहा, स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि, 21वीं सदी भारत की है। वर्तमान में हम प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में इस सपने को साकार होता देख रहे हैं तथा युवाओं के योगदान से दुनिया में भारत का दबदबा बढ़ा है।

शर्मा ने कहा कि, "सिविल सेवा परीक्षा में चयनित युवा देश के कर्णधार तथा प्रहरी हैं, उन्हें समाज को सही दिशा देते हुए देश और प्रदेश को आगे बढ़ाने का काम करना है। अभाव में आए प्रत्येक व्यक्ति की बात संवेदनशीलता से सुनकर उनके काम को पूरा करना है।" उन्होंने चयनित युवाओं से कहा कि, किसी भी जगह नियुक्ति हो वो पूरी ऊर्जा, ईमानदारी एवं समर्पण भाव से काम करें क्योंकि, आने वाला समय युवाओं का है।

आपको अपने श्रेष्ठ विचारों तथा अनुभवों से मोदी के, 2047 तक भारत को विकसित देश बनाने के विज़न को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है।

उन्होंने युवाओं से कहा कि, इस परीक्षा में जिन युवाओं का उम्मीद अनुसार परिणाम नहीं आया है, उन्हें निराश ना होकर पूरे समर्पण भाव से पुन: कोशिश करनी चाहिए।

कार्यक्रम में, चयनित युवाओं ने शिक्षा प्रणाली में सुधार, महिला सशक्तिकरण, राज्य में पर्यटन को बढ़ावा, स्वच्छता सर्वेक्षण में राज्य की स्थिति सुधारने सहित विभिन्न विषयों पर अपने विचार भी साझा किए। कार्यक्रम के अंत में मुख्यमंत्री के साथ चयनित युवाओं का सामूहिक फोटो सेशन भी हुआ। इस अवसर पर मुख्य सचिव सुधांश पंत, पुलिस महानिदेशक यू.आर. साहू सहित मुख्यमंत्री कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारी एवं यू.पी.एस.सी.-2023 में राजस्थान से चयनित युवा मौजूद थे।

महाराष्ट्र में तूफानी प्रचार में जुटे शरद पवार की तबीयत खराब हुई

डॉक्टरों की सख्त सलाह के बाद शरद पवार को अपने सभी प्रचार कार्यक्रम कैंसिल करने पड़े

- **बारामती, बीड, सतारा समेत महाराष्ट्र की तमाम सीटों पर शरद पवार दिन-रात प्रचार कर रहे थे, लेकिन इस बीच उनकी सेहत खराब हो गई है।**
- **अब प्रचार की पूरी कमान खुद सुप्रिया सुले और उनके पोते रोहित पवार के हाथों में आ गई है।**

मुंबई, 6 मई। महाराष्ट्र की राजनीति के भीष्म पितामह कहे जाने वाले शरद पवार चुनाव में काफी मेहनत कर रहे हैं। बारामती, बीड, सतारा समेत महाराष्ट्र की तमाम सीटों पर वह दिन-रात प्रचार कर रहे हैं, लेकिन इस बीच उनकी सेहत खराब हो गई है। इसके चलते डॉक्टरों ने सीनियर पवार को आराम करने की सलाह दी है। इसकी वजह से सोमवार के उनके सभी तय कार्यक्रमों को रद्द कर दिया गया है। डॉक्टरों से सलाह के बाद पवार और उनके परिवार ने यह फैसला लिया है। अब प्रचार की पूरी कमान खुद सुप्रिया सुले और रोहित पवार के हाथों में है। यही नहीं अब उनकी पार्टी एन.सी.पी.-शरद चंद्र पवार के नेता भी अपील कर रहे हैं कि वह आराम करें। बीड लोकसभा सीट से एनसीपी-शरद पवार के कैंडिडेट बजरंग सोनवाने ने सोशल मीडिया पर पोस्ट किया है कि शरद पवार को आराम करना चाहिए। उन्होंने लिखा, साहेब, आप अपनी सेहत का ध्यान रखें। विधायक और शरद पवार के पोते रोहित पवार ने कहा कि सीनियर पवार बीते 20 दिनों से 4 ही घंटे सो रहे हैं। चुनाव में खूब मेहनत करने के चलते थकान हुई है और स्वास्थ्य थोड़ा खराब है।

शरद पवार ने कल बारामती में भी एक रैली को संबोधित किया था। इस दौरान उन्होंने लोगों से अपील की थी कि वे इस बार ऐतिहासिक जनादेश दें। अब शरद पवार की सेहत को लेकर बीड के उम्मीदवार बजरंग सोनवाने ने लिखा, सर, कृपया अपनी सेहत का ख्याल रखें। जीत आपके चरणों में है। बस आप अपनी सेहत का ध्यान रखिए। आपको तो बारिश भी नहीं रोक सकी थी। सोनवाने ने लिखा कि आपकी सेहत खराब है। आपने तो बीते 60 सालों में कई चुनाव देखे हैं। कई चुनाव तो आपके ही नाम पर बीते दशकों में हुए हैं। आपके नेतृत्व में महाराष्ट्र के लोगों ने दिल्ली की चुनौती को हराया है। लेकिन आप ध्यान दें कि इस लड़ाई को हमारे ऊपर छोड़िए। आप सिर्फ सेहत का ख्याल रखें।

डी.के. शिवकुमार ने कार्यकर्ता को जड़ा थप्पड़

बैंगलुरु, 6 मई। कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार का एक वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। इसमें वह एक शख्स को थप्पड़ मारते नजर आ रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, शनिवार को हावेरी में चुनावी रैली के दौरान का यह वाकया है। शिवकुमार ने जिस व्यक्ति को थप्पड़ मारा, वह कांग्रेस कार्यकर्ता बताया जा रहा है। यह वीडियो क्लिप बीजेपी के कई सोशल मीडिया हैंडल्स से शेयर किया गया है। साथ ही, अपने कार्यकर्ताओं के साथ इस तरह के व्यवहार के लिए कांग्रेस पर सवाल उठाए हैं। दरअसल, डीके शिवकुमार हावेरी में धारवाड़ से कांग्रेस के लोकसभा उम्मीदवार विनोदा असूती के लिए प्रचार करने पहुंचे थे। यहां पर उन्होंने चुनावी रैली का नेतृत्व किया।

वायरल वीडियो क्लिप में देखा जा सकता है कि डीके शिवकुमार कार से बाहर निकलते हैं। इस दौरान लोगों की भीड़ और कांग्रेस कार्यकर्ता उन्हें घेर लेते हैं। साथ वे जोर-जोर से नारे लगाने लगते हैं।

'राज्यपाल घबरा क्यों रहे हैं जो उन्हें स्पेशल पावर्स को ढाल बनाना पड़ रहा है'

- **प. बंगाल के राज्यपाल पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाने वाली पीड़िता ने कहा कि, राज्यपाल अपनी स्पेशल पावर्स का खुल्लम-खुल्ला इस्तेमाल कर जांच में बाधा डाल रहे हैं**
- **गौरतलब है कि, राज्यपाल ने रविवार को संवैधानिक सुरक्षा का हवाला देते हुए राजभवन के कर्मचारियों को निर्देश जारी किए हैं कि, वे डायरेक्ट या फिर फोन पर किसी तरह का जवाब ना दें। इसके अलावा पुलिस से भी बात करने से बचें।**

कोलकाता, 6 मई। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल पर राजभवन में ही काम करने वाली कर्मचारी ने यौन उत्पीड़न के आरोप लगाए हैं। वहीं पश्चिम बंगाल पुलिस ने मामले की जांच के लिए टीम भी गठित कर दी है। रविवार को संवैधानिक सुरक्षा का हवाला देते हुए राज्यपाल ने राजभवन के कर्मचारियों को निर्देश जारी किए हैं कि वे डायरेक्ट या फिर फोन पर किसी तरह का जवाब ना दें।

इसके अलावा पुलिस से भी बात करने से बचें। राज्यपाल के इस आदेश के बाद पीड़िता ने सवाल किया है कि आखिर राज्यपाल इतना डरे क्यों हैं कि उन्हें संवैधानिक ताकत की ढाल की जरूरत पड़ रही है। पीड़िता ने कहा कि राज्यपाल को जांच में बाधा नहीं डालनी चाहिए।

बता दें कि रविवार क सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए राज्यपाल ने कहा था, इस मामले में किसी तरह का ऑनलाइन या ऑफ लाइन बयान देने से बचें। उन्होंने यह भी कहा था कि पुलिस को भी नजरअंदाज करें। तीन दिन पहले ही गुरुवार को एक महिला कर्मचारी ने पुलिस के पास राज्यपाल के खिलाफ शिकायत दर्ज करवाई थी।

पीड़िता ने कहा कि वह राज्यपाल साथ लाइ डिटेक्टर टेस्ट में भी बैठने को तैयार है। उन्होंने कहा, अगर राज्यपाल निर्दोष हैं तो वह भाग क्यों रहे हैं। उन्होंने दो बार मेरा उत्पीड़न किया। सच, सच ही रहेगा। मुझे फर्क नहीं पड़ता कि लोग मेरे बारे में क्या सोचते हैं। बड़ी बात है कि सर के अंदर दूसरी महिलाओं से छेड़छाड़ करने की हिम्मत है और वह साधारण महिलाओं के साथ ऐसा करते हैं।

पीड़िता ने कहा कि उसका परिवार इतना सक्षम नहीं है कि लंबी कानूनी लड़ाई लड़ सके। इसके अलावा उसकी नौकरी भी चली गई है। परिवार की सामाजिक छवि को भी धक्का लगा है। लोग उससे ही सवाल पूछ रहे हैं। उन्होंने कहा, मुझे पता है कि मैं एक हारी हुई जंग लड़ रही हूं।

पूर्व मु.मंत्रियों को रायबरेली ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अभी भी उनका विशेष स्थान है।

सूत्रों का कहना है, दिल्ली में यह खबरें पहुँच गई हैं कि, पुत्र वैभव गहलोत के चुनाव के लिए अशोक गहलोत का सौ करोड़ का बजट था और चुनाव में उन्होंने हाथ खोलकर पैसा खर्च किया। हालांकि, अधिकतर लोग वैभव की जीत की संभावना बहुत कम बता रहे हैं।

विभिन्न क्षेत्रों में जनता का समर्थन मिलने के बावजूद कांग्रेस भारी आर्थिक तंगी से गुज़र रही है, जिससे चुनाव लड़ना मुश्किल हो रहा है और यही कारण है कि, संकट में घिरी पार्टी की मदद करने के लिए दोनों पूर्व मुख्यमंत्रियों को एक बार फिर नियुक्त किया गया है।

सवाल है कि वी.आई.पी. सीटों के लिए पैसे का जुगाड़ क्यों किया गया है और साधारण सीटों को उम्मीदवारों के भाग्य पर क्यों छोड़ दिया गया है। जबकि, पार्टी के बाकी प्रत्याशियों को चुनाव का खर्च वहन करने में भारी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है।

उदाहरण के लिए पुरी (उड़ीसा) में कांग्रेस प्रत्याशी सुचरिता मोहन्ती ने मल्लिकार्जुन खड़गे को पत्र लिखा कि, वो अपनी उम्मीदवारी वापस ले रही हैं क्योंकि, ए.आई.सी.सी. प्रभारी अजय कुमार ने उनसे कहा कि, फण्ड का इंतजाम उन्हें स्वयं करना होगा और ए.आई.सी.सी. उनकी कोई मदद नहीं कर सकती।

सुचरिता ने अंतत: अपनी उम्मीदवारी वापस ले ली क्योंकि उनके पति व वे स्वयं पत्रकार हैं और भाजपा तथा बी.जे.डी. के धुरंधरों के खिलाफ चुनाव लड़ने का खर्च वहन करना उनके बस की बात नहीं है।

केजरीवाल पर खालिस्तान से 134 करोड़ रु. लेने का आरोप

दिल्ली के उपराज्यपाल ने खालिस्तानी आतंकी को छोड़ने की एवज में पैसे लेने के इन आरोपों की जांच के लिए एन.आई.ए. से सिफारिश की

- **उप राज्यपाल को केजरीवाल के खिलाफ शिकायत प्राप्त हुई है, उसी के आधार पर उप राज्यपाल ने जांच कराने का फैसला किया है।**
- **केजरीवाल पर आरोप है कि, उन्होंने जेल में बंद आतंकी देवेंद्र पाल भुल्लर की रिहाई की एवज में खालिस्तानी संगठन, सिख फॉर जस्टिस से पैसे लिये हैं।**

नई दिल्ली, 6 मई। दिल्ली के मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल की मुश्किलें कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। कथित शराब घोटाले में लगे आरोपों की वजह से जेल में बंद अरविंद केजरीवाल के खिलाफ उप राज्यपाल वी.के. सक्सेना ने नैशनल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी (एन.आई.ए.) से भी जांच की सिफारिश कर दी गई है। बताया जा रहा है कि, राजभवन को शिकायत मिली थी जिसमें केजरीवाल पर खालिस्तानी आतंकी संगठन से पैसा लेने का आरोप है। दावा किया गया है कि केजरीवाल ने प्रतिबंधित आतंकी संगठन सिख फॉर जस्टिस (एस.एफ.जे.) से पैसा लिया था।

केंद्रीय गृह सचिव को लिखे लेटर में उपराज्यपाल सचिवालय ने कहा कि सक्सेना को शिकायत मिली थी कि केजरीवाल की अगुआई वाली पार्टी ने देवेंद्र पाल भुल्लर की रिहाई के लिए चरमपंथी खालिस्तानी समूहों से 1.6 करोड़ डॉलर की फंडिंग ली थी। राजभवन की ओर से कहा गया कि शिकायतकर्ता की ओर से दिए गए इलेक्ट्रॉनिक सबूतों की फॉरेंसिक जांच और पूरे मामले की पड़ताल की आवश्यकता है। केजरीवाल को कथित शराब घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग केस में 21 मार्च को गिरफ्तार किया गया था। वह तब से ही जेल में बंद हैं।

हाल ही में खालिस्तानी आतंकी पन्नू ने भी एक वीडियो जारी करके दिल्ली के मुख्यमंत्री पर गंभीर आरोप लगाए थे। पन्नू ने दावा किया था कि उसके संगठन ने 2014 से 2022 के बीच आम आदमी पार्टी को 16 मिलियन डॉलर (करीब 134 करोड़ रुपए) दिए।

दो आतंकियों का स्कैज जारी

श्रीनगर, 6 मई। जम्मू-कश्मीर के पुंछ में पिछले हफ्ते भारतीय वायु सेना के काफिले पर आतंकी हमला हुआ। सुरक्षा बलों ने इसे अंजाम देने वाले 2 पाकिस्तानी आतंकवादियों के स्केच जारी किए हैं। साथ ही उनकी गिरफ्तारी को लेकर सूचना देने वाले को 20 लाख रुपये का इनाम देने की घोषणा हुई है। मालूम हो कि शनिवार शाम को पुंछ में शाहसितार के पास दहशतगर्दों ने वायुसेना के काफिले पर हमला कर दिया, जिसमें वायु सेना के जवान कॉर्पोरल विक्की पहाड़े शहीद हो गए। साथ ही, 4 अन्य सुरक्षाकर्मी घायल हो गए थे। इसके बाद से सशस्त्र बल शाहसितार इलाके में बड़ा तलाशी अभियान चला रहे हैं।

रायबरेली से...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

के लिए अयोग्य हैं। हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने सजा पर रोक लगा दी है, लेकिन उसने कोई निर्णय नहीं दिया है। सजा पर रोक में, चुनाव लड़ने की अनुमति शामिल नहीं है।"

पाण्डे ने यह भी कहा कि, 2006 में राहुल ने घोषित किया था कि, उनकी नागरिकता ब्रिटिश है। पाण्डे ने कहा, "ब्रिटिश नागरिक होने के कारण, संवैधानिक रूप से राहुल चुनाव नहीं लड़ सकते।" उन्होंने बताया कि, रिटर्निंग ऑफिसर ने उनकी शिकायत स्वीकार कर ली है।

कांग्रेस नेता अजयपाल सिंह ने एक वक्तव्य जारी किया कि, राहुल गाँधी का नामांकन पहले भी वैध माना गया था और अभी भी वैध है।

चंद्रबाबू नायडू ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सार्वजनिक रैली में इसके फायदों के बारे में स्पष्ट करना शुरू कर दिया है। इस पर जोर देते हुए कहा है कि यह एक्ट भूमि पर कब्ज़ों को रोकेगा, मुख्यमंत्री जगन मोहन रेड्डी और उनके पार्टी नेता यह तक कह रहे हैं कि वर्ष 2014 से 2019 तक की अवधि में रहे टी.डी.पी. शासन के दौरान अमरावती में राजधानी बनाने के लिए जो भूमि कथित रूप से हड़पी गई थी, वह जाँच के दायरे में आ जाएगी, इसीलिए विपक्षी पार्टियाँ इस एक्ट का विरोध कर रही है।

लैण्ड टाइटलिंग एक्ट पर झूठा चुनाव प्रचार करने को लेकर नायडू और उसके पुत्र लोकेश के खिलाफ केस दर्ज किए गए हैं।

आरक्षण पर भ्रम फैलाने के मामले में राहुल गांधी के खिलाफ शिकायत

हैदराबाद/नई दिल्ली 6 मई (वार्ता) रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (अठावले) के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामदास आठवले ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी द्वारा देश में आरक्षण हटाए जाने के भ्रामक प्रचार, बयानबाजी एवं तथ्यहीन आरोप के विरोध में चुनाव आयोग में लिखित शिकायत भेजकर विधिसम्मत कार्यवाही करने की मांग की। अठावले ने दावा किया कि देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी संविधान निर्माता बाबासाहेब डॉ भीमराव अंबेडकर जी के विचारों को आगे बढाने का काम कर रहे हैं और बाबासाहेब के सपनों का भारत निर्माण करने की दिशा में निरंतर प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि विगत दस वर्षों में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की सरकार ने एससी, एसटी, ओबीसी सहित समाज के वंचित, शोषित व अन्य वर्ग के लोगों के कल्याण व उत्थान के लिए ऐतिहासिक कार्य किए हैं।चुनाव आयोग को दर्ज करायी गयी शिकायत में आठवले ने कहा कि विगत पांच मई, 2024 को तेलंगाना के आदिलाबाद लोकसभा के निर्मल क्षेत्र में कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने एक जनसभा को संबोधित कर रहे थे।

'मैं आरक्षण के लिये सुप्रीम कोर्ट...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

- **राहुल गांधी ने आगे यह कहा, 90 प्रतिशत अफसर सरकार चलाते हैं, उनमें एक आदिवासी है, तीन बैकवर्ड व तीन दलित हैं और वहीं कॉर्पोरेट वर्ल्ड में या मीडिया में इन जातियों का प्रतिनिधित्व नहीं है। हम (कांग्रेसी) यह सब बदलना चाहते हैं, इसीलिये जातिगत व आर्थिक सर्वे करवाना चाहते हैं।**

की जरुरत है, हम उतना देंगे।"

लोकसभा चुनावों के लिए भारी चुनाव प्रचार के बीच राहुल ने ये टिप्पणियां की हैं। आरक्षण के मुद्दे पर एन.डी.ए. व इण्डिया गठबंधन के बीच भारी बहस छिड़ी हुई है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा ने आरोप लगाया है कि कांग्रेस मुस्लिमों को लाभान्वित करने के लिए पिछड़े वर्गों को मिले आरक्षण से छेड़छाड़ करना चाहती है। कांग्रेस ने इन आरोपों का खण्डन किया है।

गुजरात के बनासकांठा में आयोजित एक रैली में प्रधानमंत्री ने कहा कि "मैं कांग्रेस के शहज़ादे के साथ ही उनकी पार्टी और उनके समर्थकों को चुनौती देता हूँ कि वे यह घोषणा करके दिखाएं कि वे धर्म के नाम पर आरक्षण का दुरुपयोग नहीं करेंगे और ना ही संविधान के साथ छेड़छाड़ करेंगे अथवा धर्म के नाम पर आरक्षण नहीं देंगे।" गांधी ने कहा कि आदिवासियों पर होने वाले अत्याचारों की खबरें मीडिया की न्यूज़ में नहीं आती। उन्होंने कहा कि "आपके बच्चों से बलात्कार होते हैं, आपकी ज़मीन छीन ली जाती है, लेकिन मीडिया इसकी खबरें नहीं देता। उसका एक कारण है क्योंकि इन मीडिया कम्पियों में कोई आदिवासी नहीं है।"

गांधी ने कहा कि "90 नौकरशाह देश की सरकार चलाते हैं। वे बजट आवंटित करते हैं।

इन 90 में से मात्र एक आदिवासी है, तीन पिछड़े वर्ग से हैं और तीन दलित समुदाय से है। आपके लोग ना तो मीडिया में हैं और ना ही कॉरपोरेट वर्ल्ड में। हम इसे बदलना चाहते हैं। इसीलिए हमने जातिगत जनगणना और इकोनॉमिक सर्वे करवाने का निर्णय लिया है।" गांधी ने किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य और कर्ज़ माफी के रुप में राहत प्रदान करने का भी आश्वासन दिया। उन्होंने जनसमूह से कहा कि ये हमारी गारन्टियां हैं। ये आपका जीवन बदल देंगी।"

रतलाम में लोकसभा चुनाव के चौथे चरण में 13 मई को वोटिंग है। कांग्रेस ने यहां से पूर्व सांसद एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री कांतिलाल भूरिया को चुनाव मैदान में उतारा है, जबकि अनीता नागर सिंह चौहान भाजपा प्रत्याशी हैं। भाजपा ने वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में भी रतलाम सीट पर विजय प्राप्त की थी।

जे.पी. नड्डा व मीडिया ....

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

गया है। बल्कि मुसलमानों को राक्षस बताने की कोशिश की गई है।

कांग्रेस के सुझाव का पलटवार करते हुए कि भाजपा संविधान में बदलाव करने के लिए 400 लोकसभा सीटें चाहती है, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कांग्रेस पर षडयंत्र करने का आरोप लगाया और कहा कि एस.सी., एस.टी. तथा ओ.बी.सी. के लिए बनाई गई कल्याणकारी योजनाओं को धोखे से अल्पसंख्यक मुसलमानों को देना चाहती है। कर्नाटक में भाजपा के वीडियो से प्रतीत होता है कि यह प्रधान मंत्री के कथन पर बनाया गया है।

कांग्रेस ने भी चुनाव आयोग यह आरोप लगाते हुए शिकायत दर्ज कराई है कि, कांग्रेस को एक धर्म विशेष का पक्षधर और एस.सी., एस.टी. और ओ.बी.सी. को वंचित करने वाली पार्टी के रूप चित्रित करने वाले वीडियो से आदर्श चुनाव आचार संहिता का उल्लंघन हुआ है। कांग्रेस की शिकायत में प्रधानमंत्री के पूर्व के उस अनुचित दावे का भी जिक्र किया गया है, जिसमें उन्होंने कहा था कि कांग्रेस सरकार ने कर्नाटक में अवैधानिक साधनों के माध्यम से मुस्लिमों को आरक्षण दिया। कांग्रेस की शिकायत में कहा गया है कि "वर्ष 1962 में कांग्रेस ने मुस्लिम समुदाय की कुछ निश्चित जातियों को ओ.बी.सी. सूची में शामिल किया था। उन्हें धार्मिक आधार पर शामिल नहीं बल्कि आर्थिक और पिछड़ेपन के आधार पर ओ.बी.सी. सूची में शामिल किया गया था। वह जे.डी. (एस) सरकार ही थी, जो कि अब भाजपा की सहयोगी है, जिसने वर्ष 1994 में इस कोटा को सभी मुस्लिम समुदायों के लिए विस्तृत कर दिया था।" तथापि, कर्नाटक उन 14 राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में शामिल है जहां मुस्लिम समुदाय ओ.बी.सी. लिस्ट में शामिल है। इन राज्यों में प्रधानमंत्री का गृह राज्य गुजरात भी शामिल है।

'नीट पेपर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सिर्फ बातें कर रही है, पर युवा वर्ग व उनके परिजनों के जीवन स्तर में कोई बदलाव नहीं कर पाई है। राहुल ने कहा कि कांग्रेस वादा करती है कि अगर सरकार आई तो युवा वर्ग को राहत देने के खिलाफ पेपर लीक के खिलाफ सख्त कानून लाएगी। हमारी गारंटी है कि युवा वर्ग को स्वस्थ व पारदर्शी माहौल प्रदान किया जाए।

मार्डन मीडिया, बीकानेर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 35214/79, **जयपुर कार्यालय:** सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, **कोटा कार्यालय :** पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, **उदयपुर कार्यालय:** आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, **अजमेर कार्यालय:**-राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665, **जालोर कार्यालय :-** जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422,226423, फैक्स: 02973-226424 **हिण्डौनसिटी कार्यालय :-** जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 **चूरू कार्यालय :** एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908